॥ ओ३म् ॥

महर्षि
महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट का इतिहास
१९५१ - १९९६





महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट
का इतिहास एवं परिचय

लेखकद्वय

पं० श्रीकृष्ण शर्मा आर्य मिशनरी

एवं

पं० सत्यदेव विद्यालंकार

सम्पादक

अशोक कौशिक

प्रकाशक

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट

टंकारा, राजकोट (सौराष्ट्र)

प्रकाशक :

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा

डा० टंकारा, जिला राजकोट-३६३६५० (सौराष्ट्र) गुजरात

प्रथम संस्करण दिसम्बर १९९६

मूल्य 35/- रुपये

मुद्रक :

मयंक प्रिंटर्स,

२१९९/६४ नाई वाला, करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५

दूरभाष : ५७८३४०९, ५७५१३३०

सम्पादकीय निवेदन

धन्य है व धरा जहाँ युगद्रष्टा दयानन्द ने जन्म ग्रहण किया। काठियावाड़ का टंकारा ग्राम वह गुरुधाम है जहाँ जगद्गुरु दयानन्द का जन्म हुआ। धन्य हैं वे गुरुभक्त जो प्रतिवर्ष बोधरात्रि उत्सव में सम्मिलित होने के लिए टंकारा धाम की यात्रा करते हैं।

टंकारा का इतना महत्त्व होने पर भी अधिकांश आर्य समाजी टंकारा के विषय में बहुत कम जानते हैं। उनकी इसी कमी को दूर करने का ही यह प्रयत्न है।

इस विवरण के प्रथम लेखक ने सन् १९३५ में संक्षिप्त विवरण प्रकाशित करवाया था। द्वितीय लेखक १९६६ से १९८८ तक टंकारा विद्यालय के प्राचार्य रहे हैं। टंकारा की पूर्वापर सारी गतिवाधियों का उन्होंने अध्ययन और अनुभव किया है, उसे ही उन्होंने लेखनी बद्ध किया, जिसे यहाँ प्रकाशित किया गया है। भावी योजना पर उन्होंने विस्तार से प्रकाश डाला है।

अवरोध की ध्वजा फहराने वाले अबोध जनों से आग्रह है कि वे आन्दोलन का मार्ग त्यागकर आयोजन एवं सहयोग का मार्ग अपनायेंगे तो शीघ्र ही टंकारा वास्तव में दर्शनीय विश्व तीर्थ बन जायेगा। कृपया इस दिशा में प्रयत्न कीजिए।

दिल्ली
मकर संक्रान्ति २०५३

अशोक कौशिक
सम्पादक 'आर्य जगत्'

आभार

'टकारा' वह नाम है जिसके श्रवण मात्र से विश्व भर के आर्य बन्धु आप्यायित हो जाते हैं। महर्षि दयानन्द की जन्म स्थली होने से वह हमारे लिए 'गुरु धाम' है। विश्व के आर्यो ने वहाँ महर्षि के स्मारक के रूप में कुछ प्रकल्प प्रारम्भ किए हैं। वर्षो से यह अनुभव किया जा रहा था महर्षि के उस स्मारक का विस्तृत परिचय एवं इतिहास लिपि बद्ध कर मानव-मात्र के लिए उपलब्ध कराया जाये, किन्तु अनेकानेक कारणों से यह कामना शीघ्र ही फलीभूत नहीं हो सकी। सन् १९३० में महर्षि जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में एक संक्षिप्त पुस्तिका आर्य मिशनरी श्रीकृष्ण शर्मा ने लिपि बद्ध की और श्री विजय शंकर मूल शंकर ने उसे प्रकाशित कराकर वितरित किया था। वह प्रयास स्तुत्य था तदपि वह संक्षिप्त ही था।

कुछ वर्षों से ऐसे इतिहास की प्रबल मांग उठ रही थी। प्रस्तुत पुस्तक उसी का प्रतिफल स्वरूप प्रकाशित की जा रही है। प्रयत्न किया गया है कि इसमें अद्यतन (अप-टु-डेट) सामग्री प्रस्तुत हो। अतः श्री श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा संकलित सामग्री सहित श्री सत्यदेव विद्यालंकार द्वारा प्रदत्त सामग्री का इसमें समावेश किया गया है। श्री विद्यालंकार 14 वर्ष तक अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, जो कि महर्षि के स्मारक का विशिष्ट अग है, के प्राचार्य पद पर प्रतिष्ठित रहते हुए वहाँ की अन्यान्य गतिविधियों के भी न केवल साक्षी अपित संचालक भी रहे हैं। इसे अद्यतन करने में स्मारक ट्रस्ट के महामन्त्री रामनाथ सहगल का अनन्य योगदान है।

प्रस्तुत पुस्तक की साज सज्जा एवं अन्यान्य उपयोगी सामग्री के संकलन में प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के युवा सहमन्त्री चि० अजय सहगल का अप्रतिम योगदान रहा है। टंकारा को 'गुरुधाम' की संज्ञा भी उन्हीं की उत्तम देन है।

प्रस्तुत इतिहास का सम्पादन-संशोधन 'आर्य जगत्' के ख्यातनाम सम्पादक श्री अशोक कौशिक ने किया है।

इसके अतिरिक्त भी अनेक जनों ने 'इतिहास' के संकलन में अनेक प्रकार से योगदान किया है, उन सबका नामोल्लेख कर पाना कदाचित सम्भव नहीं है।

इस 'इतिहास' को वर्तमान रूप में प्रस्तुत करने में उपरि उल्लिखित सभी सहयोगियों एवं अन्यान्य उन अलिखित श्रद्धालुओं का हृदय से आभारी हूँ जिनके परिश्रम एवं लगन से यह इतिहास पुस्तक प्रस्तुतिकरण के योग्य बन पाई हैं। मैं आशा करता हूँ कि इसका अगला संस्करण इससे भी अधिक आकर्षक एवं उपयोग बनाने का हम सब मिलकर प्रयत्न करेंगे। इस आशा एव विश्वास के साथ—

ऋषि भक्तों का स्नेही

ओंकारनाथ आर्य

विनम्र निवेदन

भारत भूमि को ही यह सौभाग्य प्राप्त है कि संसार की सर्वाधिक विभूतियों को उसने जन्म दिया। उन विभूतियों में एक अनन्य विभूति, आधुनिक भारत के युगद्रष्टा, युग प्रवर्तक, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती को जन्म देने का सौभाग्य काठियावाड़ की धरा को प्राप्त है। महर्षि का जन्म डीमी नदी के पावन तट पर स्थित टंकारा ग्राम में हुआ था।

प्रस्तुत पुस्तिका में उसी टंकारा का महात्म्य और परिचय प्रकाशित है। टंकारा के विषय में आर्य समाज के क्षेत्र में अनेक भ्रांतियाँ फैलाई जा रही हैं। प्रस्तुत पुस्तिका में उनकी सब भ्रांतियों का समाधान प्रस्तुत है। पुस्तक के दोनों भागों के लेखक स्वयं टंकारा में रहकर कार्य कर चुके हैं। उन्हें किसी प्रकार से बाहरी व्यक्ति नहीं कहा जा सकता। ट्रस्ट उनकी इस कृपा के लिए आभारी एवं कृतज्ञ है।

पुस्तक के प्रथम भाग के लेखक पं० श्री कृष्ण शर्मा ने इसे सन् १९३८ में लिखकर प्रकाशित कराया था। इसकी प्रति हमें न्यास के प्रबन्ध न्यासी श्री ओंकारनाथ जी आर्य के सौजन्य से प्राप्त हुई है। श्री आर्य इस न्यास के प्रति कितने समर्पित हैं, यह समय-समय पर "आर्य जगत्" के माध्यम से आपको विदित होता रहता है।

अन्त में लेखक द्वय तथा श्री ओंकारनाथ जी आर्य के प्रति पुनः आभार प्रकट करता हुआ अपना निवेदन पूर्ण करता हूँ।

रामनाथ सहगल

मन्त्री

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा

'टंकारा' नामक इस छोटी से पुस्तिका की यह आवृत्ति पाठकों के सन्मुख रखते हुये आज हमें अपार हर्ष हो रहा है। आशा है ऋषि भक्त, प्रेमी पाठक इस पुस्तिका का समुचित आदर करेंगे। इस पुस्तिका को पुनः प्रकाशित करने का हेतु केवल मात्र इतना ही है कि जिस प्रकार श्री गिरधरलाल गोविन्द जी मेहता तथा श्रीमती चंचलबेन पाठक के अपार परिश्रम से टंकारा आर्य समाज मन्दिर बनकर तैयार हुआ उसी प्रकार इस पुस्तिका से टंकारा में महर्षि के विशाल स्मारक का अभाव समझ कर कोई दूसरे ऋषि भक्त सामने आयें और उसे पूरा करके अक्षय पुण्य और यश के भागी बनें। मैं अपने तीन साल के अनुभव से कह सकता हूं कि यदि इस विशाल तथा पवित्र कार्य को बम्बई आर्य समाज के कर्मवीर मन्त्री श्री पं० विजयशंकर मूलशंकर जी अपने हाथ में लें और परमहंस परिब्राजकाचार्य पूज्यपाद श्री स्वामी शंकरानन्द जी महाराज अपने विशाल प्रभाव एवं गम्भीर व्यक्तित्व से अपना आशीर्वादात्मक हाथ उनके सिर पर रखें, इसी प्रकार वीरपुर आर्य राज्य युवराज क्षत्री कुलभूषण कुमार श्री दिलीप सिंह जी अपने सम्पूर्ण सहकार श्री विजयशंकर जी को प्रदान करें तो टंकारा में जिस विशाल महर्षि स्मारक का स्वप्न देखा जा रहा है वह अवश्य पूरा हो सकता है। मुझे तो पूर्ण आशा है कि महर्षि भक्त आर्य जनता इस कार्य को हाथों हाथ फौरन उठा लेगी।

इस स्थल पर मैं इतना और प्रकट कर देना चाहता हूं कि अभी सन् १९३७ के अन्त में मोगा के डॉ० मथुरा दास जी टंकारा पधारे, उस समय मैं भी उनके साथ था तो उन्होंने कहा था कि 'यदि आर्य जनता महर्षि का जन्म गृह, जो अब २५०० रुपया में मिल रहा है खरीद ले तो उसके ऊपर विशाल क्लाक टावर हम बना देंगे।' श्री डॉ० साहब की यह महर्षि भक्ति वास्तव में बड़ी ही अनुकरणीय है। आशा है हमारी यह पंक्तियां उचित स्थानों में उचित कार्य करेंगी।

टंकारा में महर्षि स्मारक की रूपरेखा तैयार करने का अधिकार तो स्मारक समिति को ही है, परन्तु मेरी सम्मति में यदि टंकारा में एक विशाल वैदिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट बनाया जाय कि जहां बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वान एकान्त में शान्ति से बैठकर वैदिक विद्याओं की छानबीन (अन्वेषण) करें तो संसार का बड़ा कल्याण हो सकता है और साथ ही इससे ऋषि का मिशन भी सच्चे अर्थों में सफल होगा। एवमस्तु।

श्रीकृष्ण शर्मा आर्यमिशनरी
राजकोट (काठियाबाड़)
१ जनवरी १९३८

टंकारा महात्म्य

सौराष्ट्र की वीरभूमि में मौरवी राज्यान्तर्गत टंकारा एक छोटा सा ग्राम है। किसी समय यह बहुत सी समृद्धिशाली एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के मध्य में एक सुन्दर नगर था। सौराष्ट्र के अनुकूल स्वच्छ तथा स्वास्थ्यप्रद इसमें यत्र तत्र सर्वत्र सुशोभित थे, वापी, कूप, तडागों की छटा इसमें अपूर्व ही दृष्टिगोचर होती थी। जलाहरणार्थ आने जाने वाली टंकारावासिनी महिलाओं से इनके तट सदा मुखरित और हास्य भरित रहते थे, उनके घरों में रमणीय पुष्पवाटिकाओं और फल-भरित द्रुमों की शोभा ने टंकारा की श्री और भी द्विगुणित होती थी, स्थान-स्थान पर श्रुति के गायन, ऋचाओं के सस्वर गान और अशुचि विनाशक प्रकृति मोहक यज्ञ के सुरभित धूम से वहां का वातावरण सदा स्वच्छ और निर्मल बना रहता था, बालक और बालिकायें अकुतोभय भाव से हरे-भरे खेतों में, वन, वाटिकाओं में, वन विहारी पखेरुओं के साथ खेला करते थे, गोपाल (ग्वाले) अपनी श्यामल दूर्वा चरती हुई दुग्ध वाली गौवों के साथ-साथ निडर होकर वनों में संगीत गाया करते थे। स्वर्ग से उतरती हुई चांदनी रातें कलरवकारिणी डेमी नदी की नील धाराओं में सहस्रधा विखर कर नाचा करती थीं। उमड़ घुमड़ कर घिरे हुये श्यामल मेघ क्षेत्रों, अरण्यों तथा उच्चावच भूमियों को प्रतिध्वनित करते हुये श्रावण और भाद्रपद की शोभा को आनन्द विकम्पित कर देते थे। जिस समय टंकारा की ऐसी शोभा थी उसी समय जीवापरा नामक मुहल्ला में एक सम्पन्न, प्रतिष्ठित श्री कर्षनजी मूल जी नामक सामवेदीय औदीच्य ब्राह्मण भी रहा करते थे; उन्हीं कर्षनजी को आधुनिक जागृति के जन्मदाता भगवान दयानन्द जी के पिता होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

महर्षि का वंश परिचय तथा प्रादुर्भाव

स्वर्गीय श्री बाबू देवेन्द्र नाथ जी ने महर्षि दयानन्द की वंशावली का पता लगाने में बड़ा ही सराहनीय परिश्रम किया है। उन्होंने अपनी छानबीन के पश्चात निर्णय किया है कि महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज के पूर्वज कच्छ से काठियावाड़ में आकर बसे थे और कच्छ में वे लोग सिद्धपुर (गुजरात) से पहुंचे थे। कहते हैं आज से लगभग १००० वर्ष पूर्व अनहील वाड़ा के महाराजा मूलराज सोलंकी तीर्थ यात्रा के लिये एक बार उत्तर भारत पधारे और जब वह वहां से वापस लौटे तो कन्धार, कुरुक्षेत्र, स्थाण्वीश्वर, कान्यकुब्ज तथा नैमिषारण्य इत्यादि तीर्थों के आसपास से लगभग एक हजार ब्राह्मणों को अपने साथ लाये और उन ब्राह्मणों को विपुल धनादि सामग्री दे अपनी राजधानी के शहर सिद्धपुर में बसा दिया। उदीची अर्थात उत्तर देश से आने तथा संख्या में एक सहस्र होने से ये लोग यहां औदीच्य सहस्र (ब्राह्मण) कहलाने लग गये, जो अब तक वहां इसी नाम से पुकारे जाते हैं।

परम्परा से यह प्रसिद्ध है कि इन् ब्राह्मणों में से कुछ ब्राह्मण यहा से तीर्थ यात्रा के लिये भुज (कच्छ) पधारे, वहां उस समय कच्छाधिपति एक वृहत यज्ञ में संलग्न थे। जब ये ब्राह्मण दर्शक के रूप में उस यज्ञ समारम्भ में पहुंचे तो उनमें से एक विद्वान ने कच्छ नरेश का ध्यान यज्ञ सम्बन्धी कुछ त्रुटियों की ओर आकर्षित किया। महाराजा कच्छ ने जब सचमुच उनके कथन में सच्चाई अनुभव की तो वह उन ब्राह्मण देवता पर बहुत प्रसन्न हुये। यज्ञ की समाप्ति पर उन्हें बाग, बगीचा, ग्राम, भूमि तथा धनादि बहुत कुछ दक्षिणा दी, उस दक्षिणा को पाकर ये ब्राह्मण लोग वहीं बस गये तथा आगे चलकर उनकी वंश वृद्धि हो गई।

ईशा की सोलहवीं शताब्दी के अन्त में कच्छ राज्य परिवार के लोग काठियावाड़ पर बड़े जोरों के आक्रमण कर रहे थे, उन्हीं आक्रमणों में से एक आक्रमण के फलस्वरूप सन् १७०२ ई० में जामनगर राज्य की स्थापना हुई। सौराष्ट्र के इतिहास से यह बात सिद्ध है कि इस गद्दी के संस्थापक श्री जामरावल के साथ कच्छ से कुछ ब्राह्मण भी आये थे उन ब्राह्मणों में से औदीच्य ब्राह्मण भी थे। इतना ही नहीं अपितु रायगढ़जी के पुत्र रेवाजी के साथ भी कच्छ से कुछ ब्राह्मण आये थे, उन्हीं रेवाजी ने १७४३ विक्रमी से ११ वर्ष तक जिला कलेक्टर की हैसियत से मोरवी में शासन किया था। जामराबल के साथ आने वाले ब्राह्मण जामनगर में तथा रेवाजी के साथ आने वाले मोरवी में बस गये। स्वामी दयानन्द जी महाराज के पूर्वज जामनगर के निवासी सिद्ध होते हैं क्योंकि जामनगर राज्य में जोडिया नामक ताल्लुका के केशिया नामक ग्राम में मिली हुई जागीर पर स्वामी दयानन्द जी की बहिन प्रेमवाई के वंशधर श्री पोपटलाल रावल का आज दिन तक अधिकार है। खोज करने पर पता चला है कि जामनगर से वह लोग मौरवी राज्य के वरसामेडी नामक ग्राम में आकर आबाद हुये। वहां पर उनके दो दल आबाद थे, उनमें से एक तो टंकारा में जाकर आबाद हो गया तथा दूसरा बडाल में जाकर आबाद हुआ। टंकारा वाले दल में एक व्यक्ति मेघजी त्रिवेदी हुये उनके दो पुत्र हुये, एक का नाम विश्राम जी तथा दूसरे का नाम डोसाजी था। विश्रामजी जावापुर में जाकर रहने लगे और डोसाजी जो संस्कृत के एक उद्‌भट विद्वान थे उनके पास संस्कृत ग्रंथों का भी अच्छा संग्रह था, वह टंकारा में ही बने रहे। इन डोसाजी के एक पुत्र का नाम कंवर जी था और कंवरजी के पुत्र बेलजी हुये। स्वर्गीय श्री देवेन्द्र बाबू का कथन है कि टंकारा के श्री पोपटलाल रावल की बुआ श्री वेणीवाई के मुख से हमें यह मालूम हुआ है कि यह वेलजी या तो स्वामी के चचेरे भाई थे या उनके पिता कर्षनजी के पिता के भाई थे। स्वामी दयानन्द जी के पितामह अर्थात् कर्षनजी के पिता का नाम मूलजी त्रिवेदी था। इन्हीं कर्षनजी मूलजी त्रिवेदी के घर आश्विन वदी सप्तमी सम्वत १८८१ वि० (जन्मतिथि पर विवाद है।—सं०) को भगवान श्री दयानन्द जी का प्रादुर्भाव हुआ था।

ज्ञानोदय

जिस समय टंकारा में महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज का प्रादुर्भाव हुआ था उस समय टंकारा व्यापार का एक उत्तम केन्द्र था। कहते हैं कभी इसकी आवादी ८००० तक पहुंच चुकी थी। काठियावाड़ गजटियर पृष्ठ ६६३ से पता चलता है कि सन् १८८१ ई० में भी इसकी आबादी लगभग ५७२४ थी। महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज के पिता श्री कर्षनजी मूलजी त्रिवेदी टंकारा के प्रतिष्ठित एवं सम्पन्न व्यक्तियों में से एक थे। उन्होंने एक मन्दिर भी राजकोट दरवाजे के बाहर डेमी के सुन्दर तट पर बनवाया था, वह मन्दिर आज भी बना हुआ है जो टंकारा में श्री कुवेरनाथ जी (महादेव) का शिवालय के नाम से प्रसिद्ध है।

श्री कर्षनजी मूलजी त्रिवेदी शैव सम्प्रदाय के क्रियात्मक अनुयायी थे। अत: वह नित्य ही उक्त कुवेरनाथ जी के मन्दिर में जाया करते थे और शिवरात्रि आदि विशेष अवसरों पर श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज को भी अपने साथ ले जाया करते थे। एक बार शिवरात्रि के अवसर पर जब कि कुवेरनाथ जी के मन्दिर के भीतर के सभी शिवभक्त सोये हुये थे और सच्चे हृदय से शिव के उपासक श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ही केवल एक जाग रहे थे कि अचानक एक चूहे ने आकर महान प्रकाशपुंज के सम्मुख का मायाजाल काटकर फैंक दिया, जिस से भगवान दयानन्द के हृदय कपाट खुल गये और उन्होंने अच्छी तरह से देख लिया कि इस कुवेरनाथ जी के मन्दिर के भीतर का शिव तो केवल एक पत्थर का टुकड़ा मात्र है, इसमें चेतना का सर्वथा अभाव है। इसके द्वारा सच्चे शिव की प्राप्ति नहीं हो सकती। महर्षि ने देखा कि चूहा शिव के ऊपर चढ़ी हुई सभी वस्तुएं खा रहा है और शिव कुछ नहीं बोलते, इससे प्रकट होता है कि इस शिव में तथा जंगलों में पड़े हुये पत्थर के टुकड़ों में कोई अन्तर नहीं है। चलो इस पाषाण पूजा के दुर्गम दुर्ग से निकल कर सच्ची आस्तिकता के सुमनोहर उद्यान में बैठकर सच्चे शिव को प्राप्त करने का सीधा प्रयत्न करें, उसी से सच्चे शिव के दर्शन होंगे।

निद्रास्थ पिता को जगाकर उनके सम्मुख अपना मनोरथ कह सुनाया। पिता ने पुत्र की अभिलाषा की ओर कोई विशेष ध्यान न दिया, फलस्वरूप पुत्र का हृदय पिता के विचारों से बगावत करने के लिये व्यग्र हो उठा। कुछ ही दिन पश्चात स्वामी श्री दयानन्द जी महाराज की बहिन तथा चाचा की मृत्यु हो गई। इन घटनाओं ने महर्षि के हृदय में इस संसार से एकदम वैराग्य उत्पन्न कर दिया, जिससे एक दिन वह अनन्त जीवन की प्राप्ति के लिये सच्चे शिव की तलाश में घर छोड़कर भाग निकले। बस, टंकारा से आधुनिक जागृति के जन्मदाता भगवान दयानन्द का इतना ही सम्बन्ध है, बाह्य दृष्टि से तो महर्षि ने टंकारा छोड़ दिया था; पर दुनिया को उन्होंने यह बतला दिया कि आधुनिक जागृति के साथ इस टंकारा का बड़ा गहरा सम्बन्ध है। कहते हैं कि संन्यास धर्म के नियमानुसार

स्वामी जी महाराज जिस समय राजकोट पधारे थे उस समय स्वामी जी ने छिपकर एक बार टंकारा के भी दर्शन किये थे। पाठकगण, इससे टंकारा के महत्त्व को भली प्रकार समझ सकते हैं।

टंकारा में महर्षि स्मारक

माननीय पुरुषों की पुण्य स्मृति में उनके स्मारक बनाने की प्रथा अति प्राचीन और स्वाभाविक है। बौद्धों ने अपने धर्माचार्यों की जन्म भूमि के स्थानों में बड़े-बड़े मेले लगाये, भौतिक स्मारक स्थापित किये। उसके लिये उन्होंने लाखों रुपये खर्च किये और जब तक उनमें जीवन रहा तब तक दिल खोलकर उनकी रक्षा की। सिखों ने गुरु के बाग तथा ननकाना साहेब और पंजा साहेब अपने प्राणों की आहुतियां देकर उन स्थानों के महत्त्व को बढ़ाया, ईसाइयों ने महात्मा ईसा की जन्मभूमि में ईसाई आधिपत्य स्थापना के लिये तब बने हुए ईसाई धर्म के स्मारकों की रक्षा के लिये खून की नदियां बहा दीं। किस तरह संगठित होकर योरोपियन बादशाहों ने अपनी-अपनी सेनायें यरुसलम भेजें थीं, यह सब घटनायें इतिहास प्रेमियों से अप्रकट नहीं हैं। यह तो अभी कल ही की बात है, जब हमने पैलिस्टाइन (फिलिस्तीन) के यहूदियों तथा मुसलमानों का बालीवाल नामक दीवाल के झगड़े का किस्सा पढ़ा था, जिसमें लगभग ८०० से ज्यादा लोग यमपुर पधार गये थे। सन् १९२१ के खिलाफत आन्दोलन को भी लोग भूले न होंगे उस आन्दोलन की तह में भी यही छिपा हुआ था कि मुसलमान अपने पवित्र तीर्थ स्थान काबा आदि पर अपार श्रद्धा तथा प्रेम रखते हैं, मक्का और मदीना का नाम सुनते ही मुसलमानों का हृदय सहसा उछल पड़ता है। हमारी हिन्दू जाति भी हमेशा से अपने मान्य पुरुषों के भौतिक स्मारक बनाती चली आई है। अयोध्या तथा मथुरा के टूटे फूटे खण्डहर तथा झाड़ियां इस गिरी दशा में भी हमारे भीतर आज (दर्शन) मात्र से उष्ण रक्त का संचार कर देती है। जिस हिन्दू के खून में अपने पूर्वजों के संस्कार मौजूद हैं वह उन नगरों को देखकर सहसा रो देता है और अभिमान से फूल भी उठता है। भगवान राम तथा कृष्ण जिस धूलि में लोटे पोटे थे जहां खुलकर उन्होंने अपनी वाल्य क्रीड़ायें की थीं, जिस दिन उस मिट्टी से हिन्दू (आर्यों) का आकर्षण नष्ट हो जायेगा उस रोज हिन्दू (आर्य) जाति सचमुच हमेशा के वास्ते अनन्त में विलीन हो जायेगी। आर्यों में भी अपने महदाचार्य भगवान दयानन्द जी के प्रति अपार प्रेम है, श्रद्धा है, भक्ति है। इसको एक बार नहीं अनेकों ही बार अपने क्रियात्मिक जीवन से सिद्ध कर चुका है। अजमेर तथा मथुरा की शताब्दियां इसके वास्ते जिन्दा सबूत हैं। संसार में दयानन्द कालेज तथा दयानन्द औषधालय आदि कितनी ही लोकोपकारक संस्थायें आज महर्षि के स्मारक रूप में ही चल रही हैं, लाखों रुपया व्यय करके बड़े विशाल आर्य मन्दिर भी महर्षि के भौतिक स्मारक स्वरूप आर्यों ने देश-विदेश के बड़े-बड़े नगरों में बना डाले और बनवाते चले जा रहे हैं। इससे कोई इन्कार ही नहीं कर सकता। किन्तु टंकारा, हां वही

टंकारा जिसकी टंकार से संसार का कोना-कोना जागृत हो उठा, जिस टंकारा ने महर्षि दयानन्द जैसी दिव्य विभूति संसार को समर्पित की, वही टंकारा बहुत समय तक संसार की नजरों से ओझल रहा। परमात्मा भला करे आर्य समाज बम्बई के उत्साही कर्मवीर कार्यकर्ता श्री पं० विजयशंकर मूलशंकरजी तथा उनके अन्य सहयोगियों का, जिन्होंने संसार की इस धृष्टता के ऊपर गंभीरतापूर्वक विचार किया तथा मथुरा शताब्दी के अवसर पर यह दृढ़ निश्चय कर डाला कि महर्षि के स्मारक रूप में टंकारा में ही एक शताब्दी महोत्सव मनाने का आयोजन करूंगा। इसके लिये वे तन, मन, धन से जुट भी पड़े; फलस्वरूप ता० ७ फरवरी से ११ फरवरी सन् १९२६ तक टंकारा में महर्षि जन्म शताब्दी महोत्सव खूब धूमधाम से मनाया गया। यहां यह भी लिख देना अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है कि इस शताब्दी महोत्सव की सफलता में पूज्यपाद राज्यगुरु श्री स्वामी शंकरानन्द जी महाराज तथा अखंड प्रौढ़ प्रताप महाराजा हम्मीर सिंह जी वीरपुर नरेश तथा चूड़ासमा श्री मनुभा साहेब चेर का सहयोग बड़ा ही सराहनीय था।

टंकारा में महर्षि जन्म शताब्दी

पीछे बतलाया जा चुका है कि टंकारा में शताब्दी महोत्सव महर्षि के स्मारक स्वरूप ही मनाया गया था। शताब्दी का पण्डाल टंकारा ग्राम के अत्यन्त समीप नीलजला डीमी नदी के सुरम्य तट पर एक स्वच्छ तथा समतल भूमि के लगभग आध मील खण्ड पर बड़ी खूबसूरती के साथ निर्मित किया गया था, दूसरी तरफ समीप ही वह शिव मन्दिर था जिसमें भगवान दयानन्द को सच्चे शिव को खोजने की अभिलाषा उत्पन्न हुई थी। पण्डाल के चारों तरफ छोटी बड़ी पर्वत श्रेणियां फैली हुईं अत्यन्त ही मनोहर प्रतीत होती थीं, शस्य श्यामा क्षेत्रों और हरे-भरे द्रुमों की शोभा से सरिता तट भली-भांति शोभायमान हो रहा था। कुछ थोड़ी दूर पर मोरवी नरेश के प्रासाद चमक रहे थे और इन सब पर शुद्ध वायु आनन्द का संदेश देने के लिए इधर-उधर दौड़ती फिर रही थी। मनोरम प्रभात तथा शान्त सायंकाल की शोभा वहां देखने ही योग्य थी, ऐसे मनमोहक भूखण्ड पर ही पण्डाल तथा दर्शकों को आश्रय देने वाली छोलदारियां, तम्बू तथा छप्पर छाये गये थे। पण्डाल के चारों तरफ रम्य सड़कें बनाई गईं थीं, जो कैम्पों में जाकर मिलती थीं। कैम्पों में प्रांत बार व्यवस्था थी। पंजाब, युक्त प्रांत, राजस्थान, गुजरात, काठियावाड़ तथा कच्छवासियों के लिये पृथक-पृथक प्रबन्ध किया गया था और इनके नाम श्री गुरुदत्त गृह, लेखराम निवास तथा सेवकलाल आश्रम आदि भिन्न-भिन्न प्रकार के रखे गये थे; ताकि प्रबन्धमें सुभीता हो सके।

मुख्य पण्डाल के अलावा दो अन्य भी छोटे-छोटे पण्डाल बनाये गये थे, जिसमें पृथक-पृथक परिषदों का आयोजन किया गया था। आगन्तुक, सहस्त्रों नर-नारियों के अलावा अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज, श्री नारायण स्वामीजी महाराज, श्री स्वामी शंकरानन्द

जी महाराज, श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज, श्री स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी महाराज, श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज, श्री स्वामी अखंडानन्द जी महाराज, श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज, श्री स्वामी विचारानन्द जी महाराज प्रभृत प्रभृत संन्यासी तथा आचार्य श्री रामदेव जी, श्री पं० महाराणीशंकर जी।

नगर कीर्तन

सभापति के भाषण के पश्चात बड़े-बड़े साधु महात्माओं के धर्मोपदेश तथा बड़े-बड़े विद्वानों के व्याख्यान और प्रसिद्ध-प्रसिद्ध गायनाचार्यों के मनोहर गायनों से उत्सव अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण बन गया था। आर्यन कान्फरेन्स, आर्य महिला सम्मेलन, कच्छ काठियावाड़ आर्य कान्फ्रेन्स और राजपूत परिषद के अधिवेशन भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं थे। १० फरवरी को एक महत्त्वपूर्ण लम्बा चौड़ा विशाल नगर कीर्तन भी निकला था, जिस समय जुलूस घूमता घूमता महर्षि के जन्म गृह के पास पहुंचा तो उस समय का अजीव दृश्य था। अपने महानाचार्य के जन्म गृह को देखकर भक्ति पुलकित जनता के सहस्रों कंठों से अनायास ही 'दयानन्द जी की जय-जयकारों' से गगन मंडल गूंज उठा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो भक्तों की आखें उस घर की एक एक ईंट को अपनी आंखों में पी रही हैं। संन्यासी, पंडित, गृहस्थ, महिलायें आदि सभी के हृदय भक्ति रस से गद्‌गद हो रहे थे। सभी की आंखों में अश्रुजल विद्यमान था। कुछ देर ठहर कर नगर कीर्तन आगे बढ़ा और कुवेरनाथ जी के उस मन्दिर के पास जाकर रुका जहां दयानन्द को सच्चे शिव को प्राप्त करने की अभिलाषा उत्पन्न हुई थी, वृक्ष की सुन्दर छाया में अपनी छोटी चोटी उठाये हुये वह शिव मन्दिर अब भी निस्तब्ध भाव से खड़ा हुआ था, भीतर झुरपुट अन्धकार में नन्दी वृषभ तथा उसका स्वामी शिवलिंग मूकभाव से अब भी अवस्थित था। जो सुन्दर संदेश उस दिन से एक सौ वर्ष पूर्व महर्षि को उसने सुनाया था वह एक क्षण के लिये पुनः उपस्थित हजारों नर-नारियों के कानों में भी गूंज उठा जिससे मानों भक्तों को एक नवीन ही प्रकार का बल प्राप्त हो गया। इस प्रकार नव स्फूर्ति प्राप्त कर विशाल जुलूस वहां से चलकर प्रसिद्ध-प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थानों का परिभ्रमण करता हुआ सायंकाल की श्यामल बेला में शताब्दी भूमि में आकर समाप्त हो गया।

टंकारा में आर्य समाज

तारीख ११ फरवरी को महर्षि के बालसखा इब्राहीम और महर्षि के भानजे श्री पोपटलाल जी के भाषणों के पश्चात धन संग्रह की अपील हुई और उसके बाद महर्षि के स्मारक में टंकारा में कुछ स्थाई कार्य करने की योजना पर विचार हुआ। अन्त में टंकारा में आर्य समाज की स्थापना करने का निश्चय हुआ। पूज्य श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, पूज्य श्री नारायण स्वामी जी महाराज, पूज्य श्री स्वामी शंकरानन्द जी महाराज तथा प्रो० श्री रामदेव जी इत्यादि गण्यमान्य

सज्जनों की पवित्र उपस्थिति में आर्य समाज की स्थापना कर दी गई। प्रधान श्री रेवा लाल जी रामचरण तथा मन्त्री श्री वैद्य चतुर्भुज जी शिवजी भाई नियुक्त हुये। कुछ दिनों तक टंकारा आर्य समाज की प्रगति बहुत अच्छी रही। मोगा के सुप्रसिद्ध डा० मथुरा दास जी के सहयोग से वहां एक संस्कृत पाठशाला, दयानन्द धर्मार्थ औषधालय तथा कन्या पाठशाला की स्थापना हुई किन्तु आगे चलकर धनाभाव से संस्कृत पाठशाला और धर्मार्थ औषधालय बंद हो गये। मंत्री श्री चतुर्भुज वैद्य भी अपनी बहुत कुछ आर्थिक हानि सहकर बाल-बच्चों के भरण-पोषण के लिये स्वतंत्र धन्धे में लग गये। कन्या पाठशाला भी टूटने ही वाली कि इतने में कच्छ निवासी श्री राघवजी पुरुषोत्तमजी सेठ द्वारा भेजे हुये श्री गिरधरलाल जी गोविन्दजी मेहता स्थायी कार्य के लिये टंकारा पहुंच गये और उन्होंने बड़ी युक्ति से पाठशाला को मरने से बचा लिया।

दयानन्द कन्या ब्रह्मचर्याश्रम

जुलाई सन् १९२७ ई० में महर्षि के अनन्य भक्त मोगा के सुप्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ डॉ० श्री मथुरादास जी पाहवा के २४० रु० के चैक से श्रीमद्दयानन्द पुत्री पाठशाला का जन्म हुआ था और जून १९३२ ई० में ऋषि के दूसरे अनन्य भक्त सेठ श्री राघवजी पुरुषोत्तमजी के १७० रु० मासिक की सहायता से टंकारा में श्रीमद्दयानन्द कन्या ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना की गई थी। ये दोनों ही संस्थायें श्री गिरधरलाल जी गोविन्दजी मेहता की देखरेख में सन् १९३५ ई० तक बड़ी ही सफलता पूर्वक चलती रहीं; लेकिन सन् १९३५ के अप्रेल मास में श्री राघवजी सेठ की आर्थिक स्थिति ठीक न रहने से उनकी महत्त्वपूर्ण सहायता के बंद हो जाने से कन्या ब्रह्मचर्याश्रम बंद हो गया, दयानन्द पुत्री पाठशाला का कार्य भी डवांडोल हो गया; क्यों सेठजी २० रु० मासिक सहायता पुत्री पाठशाला को भी देते थे, साथ ही २० रु० मासिक मोरवी स्टेट से मिलते थे वह ग्रांट भी अमुक कारणों के कारण बंद हो गई, इसके अतिरिक्त ९ मास तक टंकारा निवासी सेठ श्री डूंगरसीभाई रामजी ने भी पुत्री पाठशाला को जो १० रु० मासिक की ग्रांट दी थी बाद में कारणवशात् वह भी बंद हो गयी। अब केवल २० रु० मासिक डॉ० मथुरादासजी की ही सहायता प्राप्त होती थी ठीक ऐसे ही समय में श्रीमती चंचलबेन पाठक का टंकारा में आगमन हुआ। उन्होंने बड़ी ही तत्परता के साथ पाठशाला की बागडोर अपने हाथों में संभाली, जिसके फलस्वरूप पाठशाला एक उन्नत अवस्था को प्राप्त हो गयी। इस प्रकार टंकारा शताब्दी के बाद महर्षि के स्मारक रूप टंकारा में यह दूसरा स्मारक आर्यों की महर्षि भक्ति का भली-भांति परिचायक है।

टंकारा में महर्षि का भौतिक स्मारक

टंकारा में महर्षि का भौतिक स्मारक बनाने का प्रश्न भी टंकारा शताब्दी पर उपस्थित हुआ था उसके दो रूप थे -

१. महर्षि की प्रस्तर मूर्ति की स्थापना की जावे।

२. आर्य समाज मन्दिर बनाया जावे।

प्रथम रूप का आर्यों ने बहिष्कार किया; क्योंकि इससे मूर्ति पूजा का भय है। पर मेरी दृष्टि में यह भय आर्यों के प्रति अविश्वास प्रदर्शित करने वाला था; क्योंकि जब तिलक और लाजपतराय की प्रस्तर मूर्तियों से देशभक्तों में तथा विक्टोरिया की मूर्ति से अंग्रेजों में मूर्ति पूजा नहीं फैली तो मूर्ति पूजा के विरोधी आर्यों में भी दयानन्द की मूर्ति से मूर्तिपूजा नहीं फैल सकती थी। क्या आर्य इतने अज्ञानी हैं कि जो दूसरों की जड़ पूजा का तो खण्डन करें और स्वयं उसे पूजने लग जावें।

द्वितीय रूप स्वीकार किया गया अर्थात् महर्षि का भौतिक स्मारक 'टंकारा आर्य मन्दिर' के रूप में बनाना निश्चित हुआ। डॉ० मथुरादास जी मोगा ने महर्षि की जन्मभूमि का गृह खरीदकर वहां भवन बनवाना चाहा पर वह मकान महर्षि के भानजों के अधिकार में था; उसमें से आर्य विचारों का एक भी नहीं है, फल यह हुआ कि एक भाई ने कहा कि महर्षि की जन्मभूमि का घर मेरे अधिकार में है; अगर आर्य मुझे पांच हजार रु० दें तो मैं घर दे सकता हूं और दूसरे ने अपने भाई के लिये आर्यों में घूम-घूम कर प्रचार करना आरम्भ किया; पर चतुर आर्य उस युक्ति को समझ गये और उन्होंने उस स्थान पर भवन बनवाने का इरादा ही छोड़ दिया। इसके बाद टंकारा के अन्य स्थान में भवन के लिये जगह लेने के लिये प्रयत्न किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की, आर्यमित्र २१ फरवरी सन् १९३५ की एक विज्ञप्ति से पता चला कि रेलवे स्टेशन के पास महाराजा साहेब मोरवी ने भवन के वास्ते भूमि प्रदान करने का वचन भी दे दिया था; पर सार्वदेशिक सभा तथा बम्बई आर्य समाज के मध्य कुछ ट्रस्टियों की संख्या के सम्बन्ध में मतभेद पड़ जाने से उस कार्य की प्रगति एकदम रुक गयी और उक्त दोनों शक्तियां इस दिशा से एकदम उपेक्षावृत्ति सी धारण कर बैठीं। किन्तु टंकारा आने जाने वाले महर्षि भक्त यात्रिगण इस प्रश्न पर समाचार पत्रों द्वारा बराबर आंदोलन करते रहे। उनमें से स्व० श्री पं० वंशीधरजी के 'आर्य मित्र' द्वारा आन्दोलन ने जनता का ध्यान पुनः एक बार टंकारा आर्य समाज मन्दिर की तरफ आकर्षित कर दिया। किन्तु थोड़े दिन बाद पुनः उक्त प्रश्न विस्मृति के गर्त में गिर गया।

सन् १९३५ ई० के जनवरी मास में जब लेखक ने टंकारा की यात्रा की तो मेरे हृदय में भी आया कि मैं भी आर्य जनता का ध्यान पुनः इस आवश्यक प्रश्न की तरफ आकर्षित करूं। निदान 'आर्यमित्र' के २१ जनवरी के अंक में 'मेरी टंकारा यात्रा' शीर्षक एक लेख मैंने लिखा, जिसमें लिखा था कि "कितने लज्जा की बात है कि महर्षि की जन्मभूमि टंकारा महातीर्थ में एक फुट जगह भी आर्य समाज के

पास अपनी निज की नहीं है, अगर वहां के मकान वाले अपने-अपने मकान आर्य समाजियों को किराये पर न दें तो आर्यसमाजियों को पैर रखने को भी जगह नहीं है।" मुझे संतोष है कि मेरी इन पंक्तियों ने पर्याप्त असर किया, जिसके फलस्वरूप ३ फरवरी के 'प्रकाश' में मेरा उपरोक्त शीर्षक लेख उसके सुयोग्य सम्पादकजी महोदय ने उद्धृत कर दिया। जिससे हमारी शिरोमणि सार्वदेशिक सभा का भी ध्यान पुनः टंकारा की ओर आकर्षित हुआ और २१ फरवरी के 'आर्यमित्र' में सभा के प्रधान पूज्य महात्मा श्री नारायण स्वामी जी महाराज ने अपने वक्तव्य में मुझे आदेश दिया कि "टंकारा में मन्दिर बनाने का काम बम्बई आर्य समाज के सुपुर्द किया जा चुका है अतः तुम उनके साथ मिलकर बनवाने का प्रयत्न करो।" इसी बीच में दयानन्द सालवेशन मिशन होशियारपुर के प्रधान का ५ फरवरी का लिखा हुआ निम्नलिखित पत्र श्री गिरधरलालजी को टंकारा में मिला—

Dear Bhaiji Namaste

I am pained to read in the Prakash dated 3rd Feb. an article from the pen of Pandit Shri Krishna Sharma depicting the deplorable condition of the Tankara Arya Samaj......... Why has the Samaj not been able to errect a Samaj Mandir its own? Does the Samaj stand in need off inancial help from out side? If so, why does it not issue an appeal? It is really deplorable at the birth place of M. Dayanad has not a strong Samaj. Please enlighten the samajic world every now and then the condition of our Samaj as the whole Samajic world, is interested in your samaj and you can get financial help for the mandir etc. from the Arya Samajists of all over the world.

Yours Sincerely

Devichand

President Dayanand Salvation Mission.

Panjab, Hoshiarpur

5th Feb. 1935

इस पत्र को पढ़कर मेरे सामने टंकारा में मन्दिर बनाने के वास्ते दो मार्ग आ गये। एक तः सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी का बतलाया हुआ मार्ग अर्थात् बम्बई आर्य समाज से मिलकर काम करना और दूसरा दयानन्द सालवेशन मिशन के प्रेसीडेन्ट श्री देवीचन्दजी द्वारा निर्दिष्ट मार्ग कि टंकारा आर्य समाज को अपने मन्दिर बनाने की प्रेरणा करके उसके ही साथ मिलकर प्रयत्न करना। बम्बई आर्य समाज को सहयोग देने में मुझे देरी दिखलाई दी; क्योंकि उसे घरेलू झंझटों से ही अवकाश नहीं था।

यद्यपि सार्वदेशिक सभा ने बम्बई आर्य समाज को ८ वर्ष पहले टंकारा में समाज मन्दिर बनाने का आदेश दे दिया था और समाज ने स्वीकार भी कर लिया था; ऐसा सार्वदेशिक सभा के प्रधानजी की विज्ञप्ति से पता चलता है। साथ ही टंकारा समाज के सम्बन्ध में एक पत्र श्री गिरधरलाल जी गोविन्दजी मेहता ने भी बम्बई आर्य समाज को लिखा था, उसके उत्तर में मन्त्री जी ने श्री गिरधरलाल जी को लिखा था "आपका २३.१०.३२ का पत्र २०.११.३२ की व्यवस्थापिका सभा में पेश हुआ, निश्चय हुआ कि सभा अभी इस पर विचार कर रही है।"

उपर्युक्त प्रमाणों से बम्बई समाज कुछ ऐसे झमेलों में पड़ा हुआ प्रतीत हुआ कि जिसके कारण वह अभी शीघ्र टंकारा में कुछ नहीं करा सकेगा, न मालूम उसे कब समय मिले। अतः दयानन्द सालवेशन मिशन के प्रधान जी की ही आगाही के अनुसार हमने कार्य करना तय किया और उसके अनुसार श्री गिरधरलाल जी गोविन्द जी मेहता के सहयोग से ३ मार्च सन् १९३५ ई० को टंकारा समाज की पुनर्रचना करके शिवरात्रि के पवित्र दिन से टंकारा समाज की तरफ से टंकारा समाज मन्दिर बनाने का दृढ़ संकल्प कर काम प्रारम्भ कर दिया और स्थाई कार्य के वास्ते १०००० रु० की अपील निकाल दी गयी। गुजराती समाचार पत्रों में भी टंकारा समाज के प्रधान तथा मन्त्री की तरफ से भी अपीलें निकालीं, जिससे लोगों का ध्यान टंकारा की तरफ आकर्षित हुआ और धन आना प्रारम्भ हो गया। सबसे प्रथम रसीद मैंने श्री गिरधरलाल गोविन्द जी मेहता की २५ रु० की काटी। उनकी शुभ शुरूआत से ही धन संग्रह का काम आगे बढ़ा। गुरुकुल सूपा के उत्सव के पश्चात मैंने गुजरात प्रान्त का भ्रमण किया और श्री गिरधरलाल जी मेहता ने काठियावाड़ का भ्रमण शुरू कर दिया। खुशी की बात है, इन भ्रमणों से हमलोगों को यह पता चल गया कि टंकारा के प्रति आर्य जनता में पर्याप्त प्रेम है। आर्य जनता धन देने को तैयार है; पर कोई काम करने वाला नहीं है। जब मैं दीव प्रान्त में गया तो वहां आर्य देवियों तथा आर्य युवकों ने, जो रोजाना आठ आना मेहनत करके कमाते हैं, उन्होंने भी अपनी २ एक रोज की मजदूरी टंकारा के वास्ते प्रदान कर दी।

कार्य में विक्षेप

यद्यपि दयानन्द सालवेशन मिशन के प्रधान जी के पत्र से उत्साहित होकर टंकारा आर्य समाज की तरफ से ही टंकारा में 'महर्षि स्मारक' स्थापित करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया था; परन्तु मैं मन में यह अनुभव करता था कि यह ठीक नहीं हो रहा है। वास्तव में टंकारा में महर्षि का जो स्मारक हो वह महर्षि की कीर्ति और आर्यों की कर्त्तव्यपरायणता के अनुरूप ही होना चाहिए। गुरुकुल सूपा के वार्षिकोत्सव के समय बम्बई आर्य समाज के एक अच्छे कार्यकर्ता श्री परधुभाई से जब मेरी इस सम्बन्ध में बातचीत हुयी तो उन्होंने भी कहा कि जल्दी करने से कार्य संकुचित हो जायेगा। बम्बई आर्य समाज तथा सार्वदेशिक सभा जिस रूप में

कार्य करना चाहती है वह बहुत ही विशाल है। स्मारक भवनादि के नक्शे बन चुके हैं, भूमि प्राप्त होते ही १ लाख रुपये की अपील के साथ भवन बनने का कार्य प्रारम्भ हो जावेगा।

श्री परधुभाई की बात का प्रभाव तो हमारे ऊपर बहुत हुआ परन्तु जो कार्य प्रारम्भ हो गया था उसे हम बन्द नहीं करना चाहते थे। इसलिये धन संग्रह करते हुये हम बढ़वान की तरफ आगे बढ़े, बढ़वान में वहां के एक सुप्रसिद्ध डाक्टर ने मुझसे कहा कि टंकारा के कार्य से हमारी पूर्ण सहानुभूति है, परन्तु आपलोग जो काम कर रहे हैं वह कर्त्तव्यकर्म समझ कर नहीं प्रत्युत यश प्राप्ति के लिये कर रहे हैं। देखो, तुम्हारी अपील के यह शब्द तुम्हारा कितना अभिमान प्रदर्शित करते हैं।

"बम्बई प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा, बम्बई आर्य समाज तथा बम्बई प्रान्त के अन्य समाज और अन्य प्रान्तों की प्रतिनिधि सभाओं और आर्य भ्राताओं ने ऐसे अत्यन्त आवश्यक और महान कार्य के लिये अब तक किसी भी प्रकार का काम हाथ में नहीं लिया है। यह बड़े दुःख की बात है। अब हमने ऐसा निश्चय किया है कि महर्षि की जन्मभूमि टंकारा में आर्य भवन खड़ा करें" इत्यादि-इत्यादि।

डाक्टर साहब ने उपरोक्त शब्दों को असत्य साबित करते हुये यह भी कहा था "टंकारा में महर्षि के स्मारक स्वरूप टंकारा शताब्दी बम्बई समाज और बम्बई प्रान्त के अन्य सभी आर्य समाजों के आर्य समाजिस्टों ने ही मनायी थी; जिसमें प्रायः अन्य प्रान्तों के भी प्रतिनिधियों ने सहयोग किया था। टंकारा में आर्य समाज मन्दिर भी बनाने का काम सार्वदेशिक सभा ने किया है जिसके फलस्वरूप उसके कोष में अब तक मन्दिर फण्ड का रुपया पड़ा है। ऐसी स्थिति में कोई कैसे कह सकता है कि किसी ने कुछ किया ही नहीं। हां, अब प्रश्न यह है, जो काम अभी तक हो चुका है उसको आगे बढ़ाने का है। अगर आप लोग सचमुच कुछ काम करना चाहते हैं तो बम्बई प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा सार्वदेशिक सभा से मिलकर ही काम कीजिये। टंकारा आर्य समाज अपना आर्य मन्दिर बना सकता है; किन्तु जिस महर्षि के स्मारक से सारे संसार के आर्य पुरुषों का सम्बन्ध हो सकता है; उस स्मारक को बनाने में तो सारे संसार के ही आर्य पुरुषों का प्रतिनिधित्व होना चाहिये। इत्यादि-इत्यादि।"

डाक्टर साहेब की युक्ति तथा प्रमाणों पर मैंने बहुत ही गम्भीरतापूर्वक विचार किया। अन्त में एक पत्र तारीख २६ अक्टुबर सन् १९३५ ई० को सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज को लिखा– "टंकारा में महर्षि स्मारक बनाने का कार्य सार्वदेशिक सभा अपने हाथों में ले ले तो अत्युत्तम हो। इसके उत्तर में पूज्य प्रधानजी ने २ नवम्बर के अपने पत्र में मुझे लिखा– 'तुम्हारा पत्र आगामी अन्तरंग सभा में पेश किया जायेगा।'

८ दिसम्बर सन् १९३५ को सभा की अन्तरंग में मेरा पत्र पेश हुआ और

निश्चय हुआ— (क) बम्बई आर्य समाज को लिखा जाये कि तीन मास के भीतर वह टंकारा में भूमि प्राप्त करके स्मारक न बनवा सका तो सभा अपने ढंग से वहां स्मारक बनायेगी। (ख) प्रस्ताव के 'क' भाग की नकल भेजकर पं० श्रीकृष्णजी को लिखा जावे कि वह चन्दा देने के लिये लोगों को उत्साहित तो करें पर अभी धन संग्रह न करें।'

सार्वदेशिक सभा का उक्त निश्चय २४ दिसम्बर सन् १९३५ को मुझे मालूम हुआ। अतः धन संग्रह का काम उसी समय से मैंने बन्द कर दिया और यह प्रतीक्षा करने लगा कि देखें बम्बई आर्य समाज तथा सार्वदेशिक सभा क्या करती है? इस प्रकार चलते हुये कार्य में एकदम विक्षेप पड़ गया।

टंकारा में आर्य समाज मन्दिर

ऊपर संकेत किया जा चुका है कि टंकारा आर्य समाज मन्दिर तथा महर्षि दयानन्द स्मारक यह दोनों भिन्न-भिन्न वस्तुएं हैं। महर्षि स्मारक का प्रश्न सार्वदेशिक है और टंकारा समाज मन्दिर का स्थानिक तथा एकदेशीय है। जब महर्षि स्मारक का कार्य सार्वदेशिक सभा अपने हाथ में ले रही है तो टंकारा आर्य समाज अपने हाथ मे लेकर उसे संकुचित बनाये यह ठीक नहीं। टंकारा में टंकारा आर्य समाज मन्दिर बनाना भी अत्यन्त आवश्यक था अतः कुछ दिन की शिथिलता के पश्चात् टंकारा आर्य समाज ने टंकारा आर्य समाज मन्दिर बनवाने में फिर से कमर कसी। यद्यपि मैं भी टंकारा समाज का मन्त्री था; किन्तु कतिपय सहयोगी कार्यकर्ताओं का जो मेरे साथ वर्ताव था उसमें मुझे प्रान्तीय भेदभाव समझ पड़ा फलस्वरूप मैं चुपचाप उनसे पृथक हो गया और श्री गिरधरलाल गोविन्द जी मेहता तथा श्रीमती चंचलबेन के अथक परिश्रम तथा अनुपम संलग्नता से टंकारा आर्य समाज का अपना निज का बहुत ही सुन्दर मन्दिर बनकर तैयार हो गया है। इसका सारा श्रेय उक्त दोनों ही महानुभावों को है।

ऋषिवर दयानन्द

जन्म स्थान तथा वंशवृक्ष का संक्षिप्त परिचय

स्वाभाविक रूप से १९वीं शती के महान् क्रान्तिकारी परम विद्वान् आदित्य ब्रह्मचारी ऋषि दयानन्द जिन्होंने सम्पूर्ण भारत के धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन में एक क्रान्तिकारी उथल-पुथल का सूत्रपात किया, उनके जीवन के संबंध में विस्तृत साहित्य की रचना हुई। भक्तों और आलोचकों, दोनों ने बहुत कुछ लिखा। पर उनके जन्म स्थान तथा वंश के सम्बन्ध में बहुत देर तक ऊहापोह चलता रहा। ऋषिवर के देहावसान के बाद ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आदर्श बलिदानी पं० लेखराम को स्वामी जी के जीवन सम्बन्धी खोज के लिये नियुक्त किया। पं० लेखराम जी का उपनाम आर्य मुसाफिर था और अपने अन्वेषण कार्य के लिए प्रख्यात थे। उन्होंने ऋषि जीवन सम्बन्धी अन्वेषण को प्रकाशित किया। इनके बाद ऋषि जीवन सम्बन्धी अनेक ग्रंथों के प्रकाशन हुए। कुछ श्रद्धापूर्वक लिखी गई जीवनियां भी तथा कुछ ऊहापोह परक।

आर्य समाज ज्ञान प्रधान समाज है, श्रद्धा प्रधान नहीं। अतः अन्वेषण ने विस्तृत रूप धारण किया। दो प्रश्न, ऋषि का जीवन स्थान कौन सा था तथा ऋषि के वंश का प्रारम्भ और विस्तार किस रूप में हुआ। यह बहुत जटिल तथा अन्वेषण साध्य विषय थे।

जिन ऋषि भक्तों ने इन दो प्रश्नों पर गहराई से विचार किया उनमें प्रमुख तो वंगभूषण श्री देवेन्द्र नाथ मुखर्जी थे, जिन्होंने ऋषि जीवन को एक पवित्र यात्रा का रूप दिया। उन्होंने ऋषि जीवन सम्बन्धी, जन्म से लेकर निर्वाण तक सभी स्थानों को अन्वेषण की ज्ञान यात्रा का रूप दिया और इसी पवित्र यात्रा को करते हुए अपने अन्तिम क्षण तक इस कार्य को चलाए रखा।

उनके अनुसंधान के आधार पर ऋषि जन्म स्थान टंकारा, का ऋषि के पिता श्री कर्षण जी तिवारी का तथा वंश सम्बन्धी रूप का निश्चय हुआ।

जन्म स्थान :- जन्म स्थान तथा ऋषि के पूज्य पिता सम्बन्धी निश्चय के लिये ऋषिवर की स्वरचित जीवनी को पुणे में व्याख्यानों के रूप में दी गई तथा थियोसोफिकल सोसायटी के पत्र में अंग्रेजी में प्रकाशित हुई, को आधार माना गया। इन सब सन्देहों का अन्तिम निवारण तो ७ फरवरी से ११ फरवरी १९२६ तक मनाई गई टंकारा शताब्दी में ही हो गया। जब ११ फरवरी को मध्याह्न बेला में टंकारा निवासी श्री पोपटलाल ने जो ऋषिवर की बहिन की तीसरी पीढ़ी की सन्तान थे, टंकारा के विषय में सब सन्देहों का निवारण करते हुए घोषणा की कि यही ग्राम ऋषि जन्म स्थान है। इसके लिये उन्होंने दो प्रमाण दिये। एक तो यह कि शिव पूजक ऋषि वंश के लोग जहां पूजा करते थे, वह कुबेरनाथ का शिव मन्दिर

अब भी उनके अधिकार में है। दूसरा ऋषि का जन्म गृह उनके ही पास है। श्री पोपट लाल जी ने इस सबंध में जो लिखित पत्र उपस्थित किया, उसको प्रमाणित करने के लिये उस पर मौरवी राज्य के पुलिस कमिश्नर ने राज्य की ओर से हस्ताक्षर किए तथा मौरवी नरेश ने उसका अनुमोदन किया। इसके बाद ही ऋषि के बाल सखा १०३ वर्ष के इब्राहीम ने भी लाठी टेकते हुए स्टेज पर आकर ऋषि के बाल्य जीवन की कुछ सूचनाएं दी तथा टंकारा को ही जन्म स्थान घोषित किया।

१९२६ की इस जन्म शताब्दी के निर्णयों की प्रमाणिकता इसलिए भी है कि इसमें आर्य समाज के सब प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा नारायण स्वामी जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी शंकरानन्द जी उपस्थित थे। इनके साथ ही महात्मा हंसराज जी, भाई परमानन्द, लाला लाजपतराय जी, पं० बालकृष्ण जी, पं० अयोध्या प्रसाद जी, पं० वंशीधर जी विद्यालंकार भी उपस्थित थे। इन सन्त महात्माओं के अतिरिक्त मौरवी राज्य के तथा अन्य स्थानों के नरेश, श्री शाहपुर नरेश, श्री गायकवाड़ नरेश, श्री कोल्हापुर नरेश, श्री मौरवी नरेश, श्री वीरपुर नरेश, श्री जामनगर नरेश, श्री पोरबन्दर नरेश, श्री राजकोट नरेश आदि महामहिम व्यक्तियों का अभूतपूर्व सम्मिलन था।

इस महाशताब्दी की सफलता के लिए जिन आर्य सज्जनों ने भागीरथ प्रयास किया, उनमें श्री विजय शंकर मूलशंकर प्रमुख थे।

इस लगभग सर्वसम्मत निर्णय के बाद भी यह विवाद समाप्त नहीं हुआ। टंकारा के पास जीवापुर ग्राम में कुटिया बनाकर बैठे श्री मेधार्थी संन्यासी ने एक आन्दोलन उठाया। उनका कहना था कि टंकारा नहीं जीवापुर ग्राम ऋषिवर का जन्म स्थान है। वे जब तक जीवित रहे, इस आन्दोलन को चलाते रहे। इस सम्बन्ध में उन्होंने एक पत्रिका जीवापुर ज्योति भी निकाली। विशेष कार्य यह करते थे कि टंकारा के उत्सव के समय अपना विरोधी प्रचार करते थे तथा यात्रियों को प्रेरणा देते थे कि जीवापुर भी अवश्य जाएं। इस प्रचार का पूर्ण विरोध श्री दयाल जी भाई आर्य प्राध्यापक जामनगर आयुर्वेद महाविद्यालय ने किया। श्री दयाल भाई टंकारा के ही आर्य परिवार के सदस्य हैं। उन्होंने इस कार्य के लिये अनेक वर्ष प्रयत्न किया और अन्ततः श्री मेधार्थी जी की समस्त स्थापनाओं को सप्रमाण निरस्त किया। "आर्य जगत्" के सितम्बर १९८५ के वर्ष में उनके अनेक लेख प्रकाशित हुए, जिनकी ऐतिहासिक महत्ता इसलिए थी कि उन्होंने कुछ नए तथ्यों को भी उजागर किया।

आगे इस विषय को विस्तार से लिया जायेगा। पर यहां संक्षेप से इस वर्णन का परिचय देने की आवश्यकता है कि एक विद्वान् आर्य संन्यासी ने यह अनर्थक प्रयत्न क्यों किया। मैं जब १९६६ में कार्य के लिये टंकारा गया तो श्री मेधार्थी जी से मेरा परिचय हुआ। वे गुरुकुल कांगड़ी में मुझसे तीन वर्ष आगे के विद्यार्थी थे। खूब परिचित। गुरुकुल में उनका नाम ईश्वरदत्त था। उनके पिता कानपुर में एक

प्रसिद्ध आर्य डाक्टर थे। कानपुर में उनके पिताजी ने कई संस्थाएं चलाई थीं। आर्य समाज का खूब काम किया था। श्री मेधार्थी जी की पत्नी भी थी—पुत्र भी। वे ४० वर्ष की आयु में संन्यासी हो गए थे। टंकारा के पास पड़धरी ग्राम के प्रसिद्ध सामवेद मर्मज्ञ विद्वान से उन्होंने सामवेद का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था।

वे टंकारा में कार्य करते थे— एक छोटी सी घटना ने उनकी जीवन दिशा बदल दी। घटना स्वयं टंकारा ट्रस्ट के प्रबन्धकर्ता ट्रस्टी श्री मेहता जी ने मुझे सुनाई। वार्षिक उत्सव में यज्ञ के लिये श्री मेधार्थी जी से प्रार्थना की गई। उन्होंने स्वीकृति दी पर शर्त यह रखी कि उनका भोजन शुद्ध घी में बनता रहेगा। श्री मेहता जी ने बात मान ली पर स्वामी जी का कहना था कि उनको लिखित स्वीकृति दी जाय। श्री मेहता जी को कुछ क्रोध आ गया। उन्होंने आदेश दिया कि श्री मेधार्थी जी यज्ञ नहीं करायेंगे और टंकारा ट्रस्ट के आश्रम में उनका स्थान नहीं रहेगा। जिन सज्जन को श्री मेहता जी ने यह आदेश दिया कि वे स्वयं उग्र स्वभाव के थे। श्री मेधार्थी जी को अपमानपूर्वक आश्रम से जाना पड़ा। उन्हीं दिनों श्री राजकुमार नामक कार्यकर्ता को भी टंकारा ट्रस्ट ने कार्यमुक्त कर दिया। श्री मेधार्थी जी ने तथा श्री राजकुमार ने टंकारा कार्य का विरोध किया। श्री राजकुमार तो शीघ्र ही चले गये पर श्री मेधार्थी जी विद्वान् थे— उन्होंने अपना जीवन इस बात को सिद्ध करने में लगा दिया कि टंकारा जन्मस्थान नहीं, जीवापुर जन्म स्थान वास्तविक है।

श्री दयाल भाई जी का महत्त्व विशेष इसलिए है कि उन्होंने श्री मेधार्थी जी के सारे ताने-बाने को विच्छिन्न कर दिया। एक बड़े भ्रम से ऋषि जीवन को मुक्त कर दिया।

विस्तार से अब आगे जन्म स्थान के निर्णय तथा ऋषि वंश विचार पर कुछ कहा जायेगा।

इस विस्तृत विचार से पहले एक छोटी सी पर महत्त्वपूर्ण बात का उल्लेख करना आवश्यक है। श्री पोपट लाल जी ने टंकारा समारोह में कहा था। उनका स्थान ऋषि का जन्म स्थान है। इस आधार पर टंकारा ट्रस्ट ने इसको खरीद लिया। पर तब स्पष्ट हुआ कि श्री कर्षन जी तिवारी का मकान बहुत बड़ा था और उसका एक बहुत बड़ा भाग श्री कान जी चक्कूभाई नामक सज्जन के पूर्वजों ने खरीद लिया था। उसका बड़ा भाग उनके अधिकार में है। आर्य भाईयों के सन्तोष के लिये उन्होंने एक छोटी सी कोठरी को "जन्म स्थान" के नाम से प्रसिद्ध किया हुआ है। श्रद्धालु भाई उस स्थान के दर्शन को जाते हैं, वहां यज्ञ भी करते हैं।

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने जब कोठरी के दर्शन किए थे तो उन्होंने पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री को स्पष्ट कहा था कि इतने बड़े महान व्यक्ति का जन्म स्थान किसी एक सज्जन की सम्पत्ति नहीं हो सकती। श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री ने जो लोकसभा के सदस्य थे, उनके निर्देश से लोकसभा के लगभग १००

सदस्यों के हस्ताक्षर से एक प्रार्थना पत्र बनाया था। सरकारी दफ्तरों में घूमते-घूमते उसकी एक छोटी-मोटी फाईल बन गई थी। जब मान्य श्री चौ० चरणसिंह जी गृहमंत्री थे—टंकारा आए थे। मैंने उन्हें वह फाईल भेंट की थी— उन्होंने कहा था कि वे इस कार्य को अवश्य कर देंगे। पर गुजरात के मंत्री श्री केशोभाई ने उनके हाथ से यह कहकर फाईल ले ली कि यह छोटा सा कार्य तो यहां ही कर देंगे। आपको कष्ट की आवश्यकता नहीं।

इसके बाद अनेक प्रयत्नों के बाद श्री कानजी चक्कू भाई का स्थान ट्रस्ट को उपलब्ध न हो सका। श्री कर्षन जी के मकान का असली नक्शा, जामनगर के वकील नाना भाई के प्रयत्न से जो ट्रस्ट के ट्रस्टी थे श्री कर्षन जी के किसी वंशज से प्राप्त हुआ था जो ट्रस्ट के कार्यालय में सुरक्षित है।

जन्म स्थान निर्णय :- जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है जन्म स्थान सम्बन्धी लगभग अन्तिम निर्णय तो टंकारा शताब्दी समारोह के अवसर पर ही श्री पोपटलाल तथा श्री इब्राहिम की साक्षी के आधार पर हो गया था। पर इस निर्णय तक पहुंचने के लिये मुख्य प्रयत्न श्री देवेन्द्र नाथ मुंखर्जी का था। इसका कुछ संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक है। ऋषिवर दयानन्द जी द्वारा दिए गए जीवन परिचय में जन्म स्थान के विषय में कुछ संकेत दिए गये थे :-

१. संवत् १८८१ के वर्ष में देश काठियावाड़ के, मौरवी राज्य के एक नगर में औदीच्य ब्राह्मण के घर में मेरा जन्म हुआ।

२. मेरे घर में भिक्षा की जीविका नहीं थी, किन्तु जमीदारी और लेन-देन से जीविका के प्रबन्ध करके सत्र कार्य चलाते थे।

३. फिर तीन कोश पर एक ग्राम में अपनी जमीन्दारी थी, वहां एक अच्छा पंडित था। माता-पिता की आज्ञा लेकर उस पंडित के पास जाकर पढ़ना आरम्भ कर दिया।

४. संवत् १९०३ के वर्ष में घर छोड़कर शाम के समय भाग उठा। चार कोश पर एक ग्राम था। वहां जाकर रात्रि को ठहरकर दूसरे दिन प्रहर रात्रि से उठके १५ कोश चला।

५. तीसरे दिन मैंने किसी राज पुरुष से सुना कि फलाने का लड़का घर छोड़कर चला गया। उसको खोजने के लिए सवार और पैदल आदमी यहां तक आए थे।

ऋषिवर की स्वलिखित जीवनी से निम्न बातें स्पष्ट हुईं।

१. ऋषिवर का जन्म मौरवी राज्य के एक नगर में हुआ।

२. ऋषिवर के वंश में भिक्षावृत्ति नहीं थी। उनका निर्वाह जमींदारी

तथा लेन-देन से होता था।

३. ऋषिवर का परिवार औदीच्य ब्राह्मणों का था।

४. टंकारा से तीन कोश पर उनकी जमीदारी थी।

५. घर से निकलकर ऋषिवर पहले चार कोश के ग्राम में एक रात रहे। दूसरे दिन १५ कोश ग्रामीण मार्गों से चलकर वे अगले ग्राम में रहे। तीसरे दिन उनको एक सरकारी कर्मचारी से पता लगा कि कुछ आदमी जिसमें घुड़सवार भी थे टंकारा से निकले हुए एक युवा बालक को ढूंढ़ रहे थे।

यहां प्रसंगवश मैं एक बात लिखना चाहता हूं। जीवापुर गांव के श्री जालिमसिंह जाडेजा जो श्री मेधार्थी जी के समर्थक और एक सम्भ्रान्त सज्जन थे— वे श्याम जी भाई की दुकान पर आए थे। मैं उनसे मिला। मैंने एक बात पूछी कि स्वामी जी की जीवनी में लिखा है कि उन्हें ढूंढ़ने के लिये घुड़सवार और सिपाही भेजे गये। उनका उत्तर कि कर्षनजी तिवारी ब्राह्मणवृत्ति से निर्वाह करने वाले ब्राह्मण थे। जिन घुड़सवारों और सिपाहियों का जिक्र आया है, वह हमारे पूर्वजों के थे।

मुझे इनकी बात से आभास हो गया कि जिन जीवापुर के कर्षन जी तिवारी का उल्लेख करते हैं वे टंकारा के कर्षन जी तिवारी से भिन्न थे। आगे चलकर यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो गई।

श्री देवेन्द्रनाथ मुखर्जी ने ऋषिवर के स्वलिखित जीवनचरित के आधार के अतिरिक्त तीन और प्रमाण टंकारा ही ऋषि जन्म स्थान है, इस विषय में दिये हैं। प्रथम प्रमाण स्वामी जी का प्रत्यक्ष दर्शन करने वालों के पत्र मौरवी नरेश श्रीमान् बाघजी का बयान जो उनके दीवान श्रीमान श्री कानजी ने श्री मुखर्जी को भेजा। उसमें लिखा है कि १८७५ सन् में उन्होंने स्वामी दयानन्द जी का एक व्याख्यान राजकोट में सुना था। व्याख्यान के बाद ऋषिवर ने महाराज जी से बातचीत में यह कहा था कि वे उनकी रियासत में ही उत्पन्न हुए थे और उनकी प्रजा हैं।

२. बड़ौदा रियासत के जिलाधिकारी श्री हरगोविन्द दास द्वारका दास कांटा वाले जिनका राजकोट में ही स्वामी दयानन्द जी के साथ परिचय था ने श्री मुखर्जी जी को बताया कि जन्म स्थान के विषय में पूछे जाने पर स्वामी जी ने कहा था कि मेरा जन्म बांकनेर संस्थान की सीमा के पास एक ग्राम में हुआ था।

३. राजकोट की आफिस के दफ्तरदार श्री विठ्ठलराय ने अपने पत्र में श्री मुखर्जी को बतलाया कि जनवरी १८७५ में बढवाण सिविल स्टेशन के लखतर के उतारे में श्री स्वामी दयानन्द जी के दर्शनों का सौभाग्य हुआ था। वार्ता प्रसंग में उन्होंने कहा था कि "मैं मोरवी रियासत की प्रजा हूं।" टंकारा का नाम लिया था

या नहीं, इसका पूरा स्मरण नहीं।

४. राजकोट निवासी राजमान्य श्री प्राणनाथ विश्वनाथ शुक्ल ने पत्र में श्री मुखर्जी को लिखा— "मैं टंकारा १९१४ में फरवरी मास में गया था वहां पता लगा कि स्वामी जी का जन्म स्थान यही टंकारा था। मैंने वह मकान भी देखा जिसमें स्वामी जी ने बचपन बिताया था। स्वामी जी के नाम मूलशंकर तथा दयाराम दो थे। स्वामी जी के पिता औदीच्य ब्राह्मण थे। उनका नाम कर्षन जी तिवारी था। अपनी सम्पत्ति वे अपनी पुत्री के नाम कर गए थे।

५. आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री जी ने श्री गणपतिराय शर्मा को टंकारा सम्बन्धी जानकारी के लिए पत्र लिखा था।

श्री गणपतिराय शर्मा ने टंकारा में श्री हरिशंकर से पूछताछ कर निम्न सूचना दी थी।

स्वामी जी टंकारा के निवासी औदीच्य ब्राह्मण थे। उनके पिता टंकारा के कामदार-बहीवटदार थे। यह ग्राम उस समय मौरोबा पंत अथवा भाऊ साहब के पास गिरवी था। टंकारा में जो कुबेरनाथ का मन्दिर है वह स्वामी जी के पिताजी ने बनवाया था। कर्षनजी तिवारी का कोई पुत्र न रहा तो अपनी सम्पत्ति उन्होंने अपनी पुत्री के नाम लिख दी। पुत्री के भी कोई वारिस न था—अतः उनकी पुत्री के पुत्र बोधा जी रावल फिर उनके पुत्र पोपटलाल उत्तराधिकारी बने।

इन प्रमाणों के अतिरिक्त श्री देवेन्द्रनाथ मुखर्जी ने कुछ नाम उन लोगों के दिये हैं, जिन्होंने उन्हें टंकारा के सम्बन्ध में सूचना दी थी।

ऊपर के प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध हुआ—

१. टंकारा स्वामी जी का जन्म स्थान था।

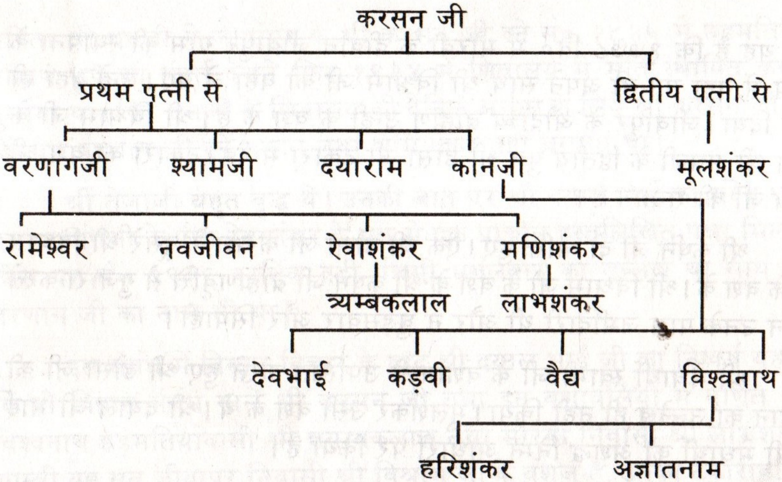
२. स्वामी जी के पिताजी का नाम श्री कर्षनजी तिवारी था।

३. वे अपने समय में जमींदारी तथा लेन-देन का कार्य करते थे।

४. टंकारा तथा कुछ और ग्राम उन दिनों श्री मोरोवापंत भाऊ नाम के समृद्ध सज्जन के पास गिरवी थे। उनकी ओर से श्री कर्षन जी तिवारी इस गांव के जमींदार थे। (मराठी) नमेदार कलक्टर का कार्य करते थे।

५. स्वामी जी के जाने के बाद पुत्र न रहने पर उनके पिताजी ने अपनी सम्पत्ति अपनी पुत्री को दे दी थी। उसी के वंश के श्री पोपट लाल थे। कुछ और सूचनाएं भी टंकारा के सम्बन्ध में श्री देवेन्द्रनाथ मुखर्जी आदि ने दी हैं। उनसे निम्न बातें स्पष्ट होती हैं।

टंकारा के ब्राह्मण उन दिनों समृद्ध ब्राह्मण थे। टंकारा नगर की आबादी



प्रो० दयाल जी भाई ने अपने अनेक वर्षों के अनुसंधान से जो परिणाम निकाले हैं, उनका संक्षेप निम्न है :-

जन्म स्थान तथा वंश संबंधी निर्णय के लिये सबसे मुख्य प्रमाण ऋषिवर का स्वलिखित जीवन परिचय है। उसके आधार पर जन्म स्थान तथा वंश सम्बन्धी निम्न निर्देश है :-

१. जन्म स्थान नगर (कस्बा) होना चाहिए।

२. नगर के बाहर कुबेरनाथ का मन्दिर था, जहां मूलशंकर शिवरात्रि की पूजा के लिये गये।

३. जन्म स्थान से ६ मील दूर एक गांव में ऋषिवर के पिताजी की जमींदारी थी।

४. ऋषिवर के पिताजी ब्राह्मण वृत्ति नहीं करते थे— लेन-देन का कारोबार करते थे।

५. उनके पिताजी जमींदार (कलक्टर) का कार्य करते थे।

६. वे दृढ़ शैव विचारों के थे।

संक्षेप में ऋषिवर के पिता १. सराफ (लेनदेन का कार्य करने वाले) २. जमीदार ३. जमीदार कलेक्टर या वहीवटदार ४. पुत्र का गृह त्याग करना ५. कट्टर शिव भक्त होना।

ये विशेषताएं टंकारा के श्री कर्षन जी में ही घटती हैं।

शेष तीन वंशवृक्षों के विषय में प्रो० दयाल भाई का कहना है कि वास्तविक

मेघजी
विश्राम जी
कर्षन जी — डोसा जी
मूलशंकर — कुंवरजी कल्याण जी — लाल जी
वेलजी — मावजी — कर्षनजी

मकनजी
विश्वनाथ
कान्तिभाई — गिरिजाशंकर — मोहन लाल — भाई शंकर

श्री विश्वनाथ के पुत्र श्री भाई शंकर से प्राप्त वंश वृक्ष

मेघजी
विश्रामजी
करसनजी — डोसा जी
दयानन्द — कुंवरजी, कल्याणजी
मकनजी — श्यामजी
विश्वनाथ — बल्लभजी
कान्तिभाई — गिरिजाशंकर — मोहनलाल — भाई शंकर

गिरिजाशंकर और भाईशंकर आज भी जीवापुर में हैं।

प्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक ने अपने टंकारा काल में मौरवी के पं० जामशंकर से प्राप्त वंश वृक्ष के अनुसार अपनी पुस्तक ऋषि दयानन्द का भ्रातृ वंश और स्वसृ वंश पुस्तक में निम्न वंशावली दी।

करसन जी

प्रथम पत्नी से　　　　　　　　　　द्विती　त्नी से

वरणांगजी　　श्यामजी　　दयाराम　　कानजी　　　　लशंकर

रामेश्वर　　नवजीवन　　रेवाशंकर　　म　　र

त्र्यम्बकलाल　　ला　　र

देवभाई　　कड़वी　　　　　श्वनाथ

हरिशंकर　　अ　　न

प्रो० दयाल जी भाई ने अपने अनेक वर्षों के　संधान　परिणाम निकाले हैं, उनका संक्षेप निम्न है :-

जन्म स्थान तथा वंश संबंधी निर्णय के लिये स　ख्य प्र　ऋषिवर का स्वलिखित जीवन परिचय है। उसके आधार पर ज　न त　श सम्बन्धी निम्न निर्देश है :-

१. जन्म स्थान नगर (कस्बा) होना चाहिए

२. नगर के बाहर कुबेरनाथ का मन्दिर थ　ां मूल　शिवरात्रि की पूजा के लिये गये।

३. जन्म स्थान से ६ मील दूर एक गांव　षिवर　पिताजी की जमींदारी थी।

४. ऋषिवर के पिताजी ब्राह्मण वृत्ति न　रते थे　लेन-देन का कारोबार करते थे।

५. उनके पिताजी जमींदार (कलक्टर) का　करते　।

६. वे दृढ़ शैव विचारों के थे।

संक्षेप में ऋषिवर के पिता १. सराफ (लेनदे　का कार्य　रने वाले) २. जमीदार ३. जमीदार कलेक्टर या वहीवटदार ४. पृ　का गृह　करना ५. कट्टर शिव भक्त होना।

ये विशेषताएं टंकारा के श्री कर्षन जी में ही　ती हैं।

शेष तीन वंशवृक्षों के विषय में प्रो० दयाल भा　कहना　कि वास्तविक

२. वे लेनदेन का काम करते थे तथा जमींदार कलेक्टर या वहीबटदार के रूप में काम करते थे। उनके पास अच्छी सम्पत्ति थी।

३. वह दृढ़ शिवभक्त थे।

४. श्री दयानन्द (मूलशंकर) के गृहत्याग तथा उनके छोटे भाई बल्लभ जी के देहावसान के बाद वृद्धावस्था में श्री कर्षन जी ने श्री बल्लभ जी की विधवा मोंगी बाई को आर्थिक कष्ट न हो इसलिये अपनी सम्पत्ति में से केशिया की जमीन का बड़ा भाग उसके नाम लिख दिया और कुंभारियां, मेघपुर, जिरागढ़ और धूमकोट ग्रामों में रहने वाले अपने यजमानों को भी उसे दे दिया। उनकी पुत्री प्रेमाबाई तथा दामाद मंगल जी रावल को भी केशिया की जमींदारी का कुछ भाग दिया, इससे उनका वंश आगे चला और श्री पोपट लाल जी जो कि वर्तमान में हैं, उनके पास श्री कर्षन जी की सम्पत्ति का भाग है।

५. उन्होंने टंकारा के राजकोट दरबाजा के बाहर डेमी के किनारे श्री कुबेरनाथ का मन्दिर बनवाया था, जो अब भी उनके वंश के अधिकार में है।

ऋषिवर दयानन्द के जीवन चरित्र का स्पष्ट प्रमाणिकता का एक बड़ा श्रेय तो स्मरणीय श्री देवेन्द्रनाथ मुखर्जी को प्राप्त होता है। ऋषिवर के देहावसान के बाद से अब तक उनके जीवन के तथ्यों को उजागर करने में इतने लेखकों ने भाग लिया कि उन सबका उल्लेख करना कठिन है। पर टंकारा वासी जामनगर आयुर्वेद कालेज के प्राध्यापक श्री दयाल भाई ने भी अनेक वर्ष कठोर परिश्रम कर ऋषि वंश सम्बन्धी अनेक तथ्यों को उजागर किया है। स्वामी जी का बोध स्थान कौन सा था। इस विषय में श्री देवेन्द्र नाथ मुखर्जी जी की धारणा को भी भ्रान्त बताया है। श्री मुखर्जी जी ने ऋषि के स्वलिखित जीवनी के वर्णन के आधार पर जड़ेश्वर का मन्दिर जो टंकारा से ६ मील पर स्थित है बोधस्थान बतलाया था। श्री दयाल भाई जी ने श्री कर्षन जी द्वारा निर्मित कुबेरनाथ के मन्दिर को ही वास्तविक बोध स्थान सिद्ध किया है। श्री दयाल भाई जी का एक बड़ा महत्त्व इस बात में है कि उन्होंने श्री मेधार्थी स्वामी द्वारा तथा पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक द्वारा वंशावली सम्बन्धी भ्रान्तियों को दूर किया। वंशावलि की भ्रान्ति भयंकर बात थी।

श्री मेधार्थी जी ने टंकारा को जन्म स्थान न मानने का हठ जीवन भर निभाया। वे मेरे गुरुकुल के सहाध्यायी थे। मैंने उन्हें कई बार इस दुराग्रह से हटाने का प्रयत्न किया। उन्होंने जीवापुर में अपनी कुटिया बनवाई थी। जामनगर के किसी सज्जन के पुत्र का देहान्त होने पर उससे धन लेकर यज्ञशाला के नाम से एक चबूतरा सा बनाया था। टंकारा के प्रत्येक उत्सव पर वे महालय के आसपास

प्रपिता श्री धनजी ने जीवापुर के श्री करसन जी को सं० १८४५ में हड़मतिया ब्राह्मण कूप का मुहूर्त देखने फिर १९१४ में शिवालय में मूर्ति स्थापित करने बुलाया था। फिर धनजी के शिवालय की दैनिक अर्चना के लिये श्री करसन जी के बड़े पुत्र वरणांग जी को मकान तथा भूमि देकर वहां बसाया था।

श्री तेजाजी बहुत वृद्ध थे। उनकी बात पर श्री दयाल भाई को संदेह था! पर वरणांगजी के पौत्र रेवाशंकर के पुत्र से एक प्राचीन हस्तलिखित पन्ना मिला। जिस पर सं० १९१६ कार्तिक वदी पंचमी मंगलवार का उल्लेख था साथ ही वरणांग जी का नाम भी था।

इस संबंध में विस्तृत विचार के बाद श्री दयाल भाई जी का निष्कर्ष यह है कि दो विवाह संबंध वाले श्री करसन जी तथा इन वंशावलियों में वर्णित श्री विश्वनाथ हड़मतियांवासी श्री त्रयम्बकलाल तथा मौरवी निवासी श्री लाभशंकर शास्त्री यह सब जीवापुर निवासी श्री विश्राम जी के वंशज हैं, उनका टंकारावासी श्री डोसा जी के परिवार से कोई सम्बन्ध नहीं।

श्री देवेन्द्र नाथ जी तथा श्री दयाल भाई जी द्वारा की गई खोज के आधार पर ऋषिवर के वंश तथा टंकारा के विषय में जो खोजपूर्ण सूचनाएं उपलब्ध हुई हैं वे संक्षेप में निम्न हैं :-

१. श्री कर्षन जी के समय टंकारा एक समृद्ध नगर (कस्बा) था। स्वामी जी के अनुसार वह बांकानेर की सीमा पर स्थित था। वह एक समृद्ध नगर था। वहां के ब्राह्मण समृद्ध थे।

२. मौरवी भी नगर था, वहां भी औदीच्य ब्राह्मण थे पर १८८१ में (स्वामी जी के जन्म के समय) वहां कोई ऐसा औदीच्य ब्राह्मण नहीं था जो शराफ हो, या जमींदार हो या कलक्टर हो। टंकारा ही ऐसा नगर था जिसमें ऋषिवर की स्वलिखित जीवन में निर्दिष्ट लक्षण मिलते हैं।

३. मौरवी राज्य की आर्थिक स्थिति उन दिनों अच्छी न थी। अतः वे समय-समय पर अपना इलाका गिरवी रखकर कर्ज लेते थे। सं० १८६८ से सं० १८९७ तक लगभग ३० वर्ष यह इलाका बड़ौदा के प्रसिद्ध सेठ मोरोबा पन्त भाऊ के पास रहा। उसकी ओर से कर्षन जी टंकारा के जमींदार थे, कलेक्टर थे, बहीबटदार थे।

ऋषिवर के पिता श्री कर्षन जी के सम्बन्ध में निम्न सूचनाएं प्राप्त होती हैं :-

१. श्री कर्षन जी श्री मेघजी के पुत्र श्री डोसा जी (टंकारा वाले) के पौत्र और श्री लाल जी के पुत्र थे।

२. ये लेनदेन का काम करते थे तथा जमींदार कलेक्टर या तहसीलदार के रूप में काम करते थे। उनके पास अच्छी सम्पत्ति थी।

३. वह दृढ़ शिवभक्त थे।

४. श्री दयानन्द (मूलशंकर) के गृहत्याग तथा उनके छोटे भाई बल्लभ जी के देहावसान के बाद वृद्धावस्था में श्री कर्षन जी ने श्री बल्लभ जी की विधवा मोंगी बाई को आर्थिक कष्ट न हो इसलिये अपनी सम्पत्ति में से केशिया की जमीन का बड़ा भाग उसके नाम लिख दिया और कुंभारियां, मेघपुर, जिरागढ़ और धूमकोट ग्रामों में रहने वाले अपने यजमानों को भी उसे दे दिया। उनकी पुत्री प्रेमाबाई तथा दामाद मंगल जी रावल को भी केशिया की जमींदारी का कुछ भाग दिया, इससे उनका वंश आगे चला और श्री पोपट लाल जी जो कि वर्तमान में हैं, उनके पास श्री कर्षन जी की सम्पत्ति का भाग है।

५. उन्होंने टंकारा के राजकोट दरबाजा के बाहर डेमी के किनारे श्री कुबेरनाथ का मन्दिर बनवाया था, जो अब भी उनके वंश के अधिकार में है।

ऋषिवर दयानन्द के जीवन चरित्र का स्पष्ट प्रमाणिकता का एक बड़ा श्रेय तो स्मरणीय श्री देवेन्द्रनाथ मुखर्जी को प्राप्त होता है। ऋषिवर के देहावसान के बाद से अब तक उनके जीवन के तथ्यों को उजागर करने में इतने लेखकों ने भाग लिया कि उन सबका उल्लेख करना कठिन है। पर टंकारा वासी जामनगर आयुर्वेद कालेज के प्राध्यापक श्री दयाल भाई ने भी अनेक वर्ष कठोर परिश्रम कर ऋषि वंश सम्बन्धी अनेक तथ्यों को उजागर किया है। स्वामी जी का बोध स्थान कौन सा था। इस विषय में श्री देवेन्द्र नाथ मुखर्जी जी की धारणा को भी भ्रान्त बताया है। श्री मुखर्जी जी ने ऋषि के स्वलिखित जीवनी के वर्णन के आधार पर जड़ेश्वर का मन्दिर जो टंकारा से ६ मील पर स्थित है बोधस्थान बतलाया था। श्री दयाल भाई जी ने श्री कर्षन जी द्वारा निर्मित कुबेरनाथ के मन्दिर को ही वास्तविक बोध स्थान सिद्ध किया है। श्री दयाल भाई जी का एक बड़ा महत्त्व इस बात में है कि उन्होंने श्री मेधार्थी स्वामी द्वारा तथा पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक द्वारा वंशावली सम्बन्धी भ्रान्तियों को दूर किया। वंशावलि की भ्रान्ति भयंकर बात थी।

श्री मेधार्थी जी ने टंकारा को जन्म स्थान न मानने का हठ जीवन भर निभाया। वे मेरे गुरुकुल के सहाध्यायी थे। मैंने उन्हें कई बार इस दुराग्रह से हटाने का प्रयत्न किया। उन्होंने जीवापुर में अपनी कुटिया बनवाई थी। जामनगर के किसी सज्जन के पुत्र का देहान्त होने पर उससे धन लेकर यज्ञशाला के नाम से एक चबूतरा सा बनाया था। टंकारा के प्रत्येक उत्सव पर वे महालय के आसपास

घूमकर यात्रियों को जीवापुर जाने की प्रेरणा करते थे।

मेरे टंकारा रहने के समय उन्हें पं० ब्रह्मदत्त जी आयुर्वेदालंकार ने जो जामनगर आयुर्वेद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक भी कुछ काल रहे सलाह दी थी कि उनका हृदय दुर्बल है अब उन्हें अपने घर कानपुर जाकर ही आराम करना चाहिए। वे कानपुर गए पर दुर्भाग्यवश एक बार फिर दक्षिण की ओर यज्ञार्थ जाने का प्रयास किया। मार्ग में ही हृदयगति रुकने से देहान्त हो गया।

वे जीवापुर के कर्षन जी को स्वामी जी का पिता सिद्ध करने के लिये वंशावलि में परिवर्तन का प्रयास करते रहे।

प्रो० दयाल जी भाई ने विशेष प्रयत्न से भ्रान्तियों को दूर कर ऋषि जन्म स्थान के महत्त्व को प्रदर्शित करने का पुण्य कार्य किया।

इस संक्षिप्त परिचय में टंकारा सम्बन्धी और ऋषि की वंशावलि सम्बन्धी सूचनाओं का संग्रह किया गया है। विस्तार से समझाने के लिये तो देवेन्द्रनाथ मुखर्जी जी की रचना के दोनों भाग श्री घासीराम जी द्वारा सम्पादित तथा पं० विजयशंकर मूलशंकर जी द्वारा सम्पादित जीवनियों का अध्ययन करना चाहिए।

प्रो० दयाल जी भाई द्वारा लिखित तथा श्री भवानी लाल जी भारतीय द्वारा सम्पादित सितम्बर १९६५ में "आर्य जगत्" द्वारा प्रकाशित लेखमाला का अध्ययन भी आवश्यक होगा।

दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के क्रिया कलाप

सामाजिक जीवन में जो भी कार्य कियें जाते हैं, उन पर आलोचना स्वाभाविक तौर पर होती ही है। आलोचना अपने आप में एक बड़ा स्वस्थ और मनोरंजक कार्य है। सामान्यतया आलोचना करने वाले दो विधायें अपनाते हैं। एक विधा तो समर्थ महानुभावों की है जो किसी कार्य के विरोध में उसके समकक्ष एक नया कार्यक्रम उपस्थित करते हैं। उदाहरण के लिए स्वामी दयानन्द जी के देहावसान के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से डी०ए०वी० आन्दोलन के रूप में एक शिक्षा कार्य चलाया गया। उद्देश्य मूलरूप से महर्षि जी के सिद्धान्तों का प्रचार ही था। कुछ दिन उस संस्था के चलने के बाद कुछ लोगों का विचार हुआ कि ऋषि दयानन्द का जो वैदिक आदर्श है, उसका पूरी तरह पालन और विकास इस संस्था में नहीं झलक रहा है, इसके लिये आर्य समाज में ऋषि दयानन्द के बहुत आस्थावान भक्त गिने जाने वाले महात्मा मुंशीराम जी ने गुरुकुल के रूप में एक नई संस्था का विकास किया। जो आगे चलकर अपने आप में एक बहुत बड़ी विकसित संस्था बनी।

परन्तु कुछ सामान्य आलोचक इस रूप में आलोचना करते हैं कि वे किसी नई संस्था का निर्माण तो नहीं कर सकते, पर अपने विरोध को यथा-तथा प्रकट करते रहते हैं। महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट भी एक विशाल संस्था है, उसके विषय में आजकल कुछ लोग विरोधी स्वर उठा रहे हैं। उस स्वर के अनेक रूप हैं एकरूप यह है कि टंकारा वास्तव में स्वामी जी का जन्मस्थान एवं बोधस्थान नहीं। यह स्वर आज से अनेक वर्ष पूर्व उठाया गया था पर धीरे-धीरे वह स्वयं ही शान्त हो गया। अब कुछ लोगों का विरोध इस प्रकार प्रकट हो रहा है कि ट्रस्ट के अन्तर्गत जो कार्य चल रहे हैं वे समीचीन नहीं। उदाहरण के लिये छोटी-सी बात उठाई गई है कि ट्रस्ट के अधीन जो विविध लक्षी हाई स्कूल चल रहा है उसमें सहशिक्षा का प्रयोग हो रहा है। एक दूसरा आक्षेप यह भी है कि टंकारा में जो संस्कृत विश्वविद्यालय और आयुर्वेद कालेज चलाये गये थे वे क्यों नहीं चल पाये। इसके साथ ही कुछ लोगों का विचार है कि कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने बहुत कार्य किया है पर उनको उचित महत्त्व नहीं दिया गया।

प्रस्तुत परिचय में इस बात का प्रयत्न किया जायेगा कि टंकारा अपने मूल उद्देश्य से विचलित हुआ या नहीं और जो आवश्यक गतिविधियां होनी चाहिएं थीं उनका विकास और विस्तार किया गया या नहीं।

१९६६ में मैं जब डी०ए०वी० कालेज जालन्धर से अवकाशग्रहण करने के बाद आर्य कन्या महाविद्यालय जालन्धर में कार्य कर रहा था तो मुझे अचानक श्रद्धायोग्य जस्टिस मेहरचन्द महाजन जी का एक आदेश मिला कि मैं दिल्ली में

उनके आवास स्थान पर उनसे मिलूँ। जस्टिस महाजन जी डी०ए०वी० कालेज संस्था के प्रधान होने के साथ-साथ टंकारा ट्रस्ट के भी प्रधान थे। मैं उनसे मिलने के लिये उनके आवास स्थान फ्रैन्डस कालोनी पहुंचा। उन्होंने कुछ आर्य समाज के विशिष्ट व्यक्तियों को बुलाया हुआ था और उनके सामने उन्होंने यह विचार रखा कि सत्यदेव विद्यालंकार को टंकारा में कार्य के लिये मैं नियुक्त करना चाहता हूँ। मैं उनकी महानता के कारण कुछ कह नहीं सका। मुझे एक संकोच था कि मुझे कन्या महाविद्यालय जालन्धर में हिन्दी के एम०ए० के विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिये नियुक्त किया गया था। इसके लिये मुझ पर कन्या महाविद्यालय की आचार्या कु० विद्यावती जी तथा अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र जी ने अपना विश्वास प्रकट किया। कुछ भी हो, बहुत कठिनता से मैंने उन सबके सामने अपनी स्थिति रखी और अन्त में मान्य महाजन जी के आदेश के अनुसार टंकारा पहुंचा गया। मान्य महाजन जी ने मुझे यह स्पष्ट किया था कि 'मैं तुम्हें टंकारा में उपदेशक विद्यालय के कार्य के लिये भेज रहा हूँ। वहाँ की परिस्थितियां कुछ विषम तो हैं, पर तुम्हें उस कार्य को दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ाना होगा। हमारा समर्थन तुम्हें मिलता रहेगा।' मैंने नम्रता से निवेदन किया कि मैं आपकी आज्ञा का यथाशक्ति अवश्य पालन करूंगा।

जब मैं टंकारा पहुंचा तो वहां की परिस्थिति कुछ भिन्न देखी वहां मेरे आने से पहले शुद्ध आयुर्वेद महाविद्यालय नामक संस्था कार्य कर रही थी। एक संस्कृत विश्वविद्यालय, जिसका ढांचा मात्र था, वह भी अपना कार्य कर रहा था। इसके साथ ही गौशाला, चित्रशाला, आदि कार्य भी चल रहे थे। मेरे सामने जो प्रश्न था कि उपदेशक विद्यालय का ढांचा किस तरह खड़ा किया जाये।

इसके लिये मैंने टंकारा ट्रस्ट के पिछले कार्य को समझने का प्रयत्न किया। मैंने देखा कि माननीय महाजन जी कई वर्ष पहले से ही उपदेशक विद्यालय का विचार संजोये हुए थे। पर परिस्थितिवश कई अन्य कार्य टंकारा में चलते रहे और कुछ देर बार बन्द होते गये।

१९५९ में टंकारा ट्रस्ट के सम्मुख परोपकारिणी सभा अजमेर का एक सुझाव आया कि परोपकारिणी सभा टंकारा ट्रस्ट के लिए ५०,०००/- रु० (पचास हजार) का दान दे रही थी जिसका सूद लगभग १७००/- रु० वार्षिक होता था। सभा का यह सुझाव था कि इस राशि से टंकारा में अनुसंधान कार्य प्रारम्भ किया जाये, जिसके लिए पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक तथा एक सहायक की नियुक्ति की गई। उनका अनुसंधान कार्य का जो परिणाम हो वह परोपकारिणी सभा को प्रकाशन के लिए दिया जाए। ट्रस्ट ने यह सुझाव माना और कुछ वर्ष यह अनुसंधान का कार्य चला। इस अनुसंधान का मुख्यतया सम्बन्ध ऋषि दयानन्द के साहित्य से सम्बद्ध वैदिक साहित्य के विषय में था। दो प्रकाशन के योग्य ग्रन्थ परोपकारिणी सभा में भेजे भी गये पर कुछ समय बाद ऐसा प्रतीत हुआ कि टंकारा का जलवायु श्री मीमांसक जी के स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं है अत: यह कार्य आगे न चल सका।

इस कार्य के अतिरिक्त ट्रस्ट की उस समय की कार्यवाहियों में विविध लक्षी हाई स्कूल, प्रचार कार्य, औषधालय, टंकारा पत्रिका, गौशाला, चित्रशाला आदि कार्य थे और सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य शिवरात्रि का महोत्सव सफलतापूर्वक मनाना था।

उन दिनों ट्रस्ट के प्रधान मान्य महाजन जी थे और इनके साथ ही प्रसिद्ध नेता महाशय कृष्णजी, लाला हंसराज जी गुप्त आदि के अतिरिक्त बड़ौदा कन्या महाविद्यालय के संचालक पं० आनन्दप्रिय जी थे। पण्डित आनन्दप्रिय जी का सम्बन्ध और मन्त्री के रूप में उनका कार्य बहुत लम्बे समय तक ट्रस्ट की सहायता के रूप में चलता रहा।

इनके अतिरिक्त श्रीमती चंचलबेन पाठक, श्री नाना लाल, श्री बालकृष्ण गुप्त, श्री चरणदास, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, डॉ० मथुरादास, श्री रामगोपाल ये इनके सहयोगी थे।

दिनांक ६-१२-१९६५ आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में प्रधान जी द्वारा एक विशेष बैठक बुलाई गई थी, उसमें उन्होंने अपने मन के भाव इस प्रकार प्रकट किये "मैं बड़ी आशा लेकर टंकारा गया था, जब पहली बार गया था तो उस समय वहां कुछ नहीं था, छोटा सा आर्य समाज कार्य चला रहा था, जब दूसरी बार गया वहां का कार्य और वातावरण देखकर दिल में उमंग और उत्साह पैदा हुआ। बहुत लोग आये थे। भारी भीड़ थी। उस समय सेठ नानजी भाई के दान से भवन खरीद लिया गया था। उस समय मुझे सेठ साहब ने तथा आनन्दप्रिय जी ने प्रधान बनने की विनती की थी उस समय मेरे पास समय न होने के कारण न कहा था। अब आग्रहवश यह बात स्वीकार करनी पड़ी और कार्य भी महर्षि का तो था ही। टंकारा से ऐसा कार्य होना जरूरी है जहां से सारे आर्य समाज को जीवन मिल सकेगा। स्वामी जी के सच्चे स्मारक के रूप में और स्वामी जी के उद्देश्यों के रूप में काम हो।

मैंने यह उद्धरण इसलिये दिया है कि टंकारा में काम करने वाले सज्जनों के हृदय में क्या भावना और लक्ष्य काम कर रहा था, यह दिखाया जा सके। इसी बैठक में उपदेशक विद्यालय के विषय में भी विचार हुआ। स्वामी समर्पणानन्द जी ने सुझाव दिया कि यह कार्य अधिक व्यापक रूप में होना चाहिए और अन्य संगठनों को भी इस संगठन में सम्मिलित करना चाहिए।

इस विवरण को आगे बढ़ाने से पहले कुछ स्पष्टीकरण आवश्यक हैं। पहला तो यह कि टंकारा ट्रस्ट के कार्य आरम्भ होने से पहले ऐसा नहीं था कि टंकारा में और कार्य न हो रहे हों। टंकारा में आर्य समाज की स्थापना बहुत पहले हुई थी। एक बहुत बड़े विद्वान श्री गिरधर मेहता तथा उनकी सहयोगिनी चंचलबेन पाठक आदि के अध्यवसाय और तपस्या से आर्य समाज का कार्य चल रहा था और उनके

साथ कई अन्य गुजराती महानुभावों का सहयोग भी था। मैंने इस विवरण में आर्य समाज के कार्य का उल्लेख इसलिये नहीं किया कि यहां मुख्य उद्देश्य टंकारा ट्रस्ट के कार्य का विवरण देना था। ऐसा न समझा जाये कि आर्य समाज के कार्य और महर्षि के विषय में या उन ऋषि भक्तों के विषयों में जिन्होंने यह कार्य किया, हमारी कोई आस्था या भक्ति नहीं। एक दूसरी बात यह भी है कि श्री सेठ नानजी भाई के सात्विक दान से महाराज मौरवी का महल खरीदा गया। उसके सम्बन्ध में बहुत सारे गुजराती भाईयों का प्रशंसनीय उद्योग भी था। वह प्रसंग केवल इस विवरण का कलेवर बढ़ने से बचाने के लिये नहीं किया गया।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि १९६५ से पहले भी टंकारा में कुछ कार्य प्रारम्भ हुए थे जो पीछे चलकर समाप्त हो गये। उनमें से एक कार्य टंकारा पत्रिका का था। क्रमशः टंकारा पत्रिका की ग्राहक संख्या कम होती गई और अन्त में यह स्थिति आ गई कि टंकारा पत्रिका जहां परोपकारी प्रैस में प्रकाशित होती थी, उसका ऋण कई हजार के रूप में हो गया। इस समस्या के समाधान के लिए टंकारा के ट्रस्टियों और परोपकारिणी के सदस्यों के बीच में लम्बी बातचीत हुई। संक्षेप से परिणाम यह निकला कि टंकारा पत्रिका को परोपकारी पत्र के अन्दर सम्मिलित कर दिया गया और परोपकारिणी सभा द्वारा जो दान का ५०,००० रु० दिया गया था उसका ब्याज १७००/- रु० परोपकारी के प्रकाशन के खर्च में सम्मिलित कर दिया गया।

एक और संस्था विविध लक्षी हाई स्कूल भी प्रारम्भ में टंकारा ट्रस्ट के अन्तर्गत ही चलता था पर बहुत पहले इसको टंकारा ट्रस्ट ने पण्डित आनन्दप्रिय जी की अध्यक्षता में बनी हुई एक संचालन समिति के सुपुर्द कर दिया था और उसके बाद ट्रस्ट का प्रबन्ध या आय-व्यय में कुछ लेना-देना न था। कुछ पत्रों में जो आक्षेप किया गया है कि वहां सहशिक्षा का रूप है उसके विषय में भी ट्रस्ट की ओर से स्कूल के अधिकारियों को सूचित कर दिया गया है कि शीघ्र ही इस रूप को बदल दें और सम्भवतया कुछ दिनों में कन्या और बालकों की अध्यापन का समय बदल दिया जायेगा।

एक बड़ा कार्य आयुर्वेद विद्यालय था और उसके साथ सम्बद्ध संस्कृत विश्वविद्यालय का निर्माण भी था। संस्कृत विश्वविद्यालय के विषय में व्यवस्था यह थी कि नाम तो उसका विश्वविद्यालय था पर कोई नियमित पढ़ाई का प्रबन्ध नहीं था। न नियमित विद्यार्थी थे। केवल कुछ परीक्षायें जिनमें पारंगत परीक्षा सबसे ऊंची गिनी जाती थी, उसको आयुर्वेद विद्यालय ने प्रवेश के लिए समकक्ष स्वीकार करा लिया था। यह कार्य कुछ देर तक चलता रहा पर आगे चलकर आयुर्वेद विश्वविद्यालय ने इस पारंगत परीक्षा को अमान्य कर दिया। उसका कारण सम्भवतया विद्यार्थियों द्वारा ऊपर पहुंचाई गयी सूचना होगा क्योंकि ट्रस्ट की ओर से तो कोई ऐसी सूचना कभी नहीं भिजवाई गई।

जहां तक आयुर्वेद विद्यालय का सम्बन्ध है। ट्रस्ट के ट्रस्टियों ने पूर्ण सहयोग के साथ और सहायता के साथ इस संस्था को कई वर्ष तक चलाने का प्रयत्न किया पर इस संस्था के न चलने के कारणों पर आगे प्रकाश डाला जायेगा। यहां इतना कहना अप्रासंगिक न होगा कि गुजरात में शुद्ध आयुर्वेद विद्यालय का एक आन्दोलन उठा था जिसके आधार श्री मोहनलाल व्यास जी थे जो पहले गुजरात राज्य के मन्त्री थे। लगभग १० ऐसे विद्यालय खोले गये थे। उसी समय टंकारा में और कोई विशेष कार्य न होने के कारण उस विद्यालय की स्थापना की गई। आयुर्वेद महाविद्यालय तथा संस्कृत विश्वविद्यालय वस्तुतः दिल्ली की शिक्षा संस्थान से आने वाले दो प्राध्यापकों की करामात थी। उनके नाम श्री देवप्रकाश पातांजल तथा श्री प्रभाकर मिश्र (यह महानुभाव वही हैं, जो अनेक जालसाजी के आरोपों से घिरे हैं।—सम्पादक) थे। ट्रस्ट के कुछ अधिकारियों को विश्वास में लेकर उन्होंने इन दो संस्थाओं का ढांचा बनाया था। श्री देवप्रकाश पातांजल संस्कृत विश्वविद्यालय के कर्ताधर्ता थे तथा श्री प्रभाकर मिश्र आयुर्वेद विद्यालय के। अपनी इसी संस्था में अवकाशकाल समाप्त होने पर दोनों सज्जन महालय का कुछ धन भी लेकर दिल्ली लौट गये। कई वर्ष के प्रयत्न के बाद भी उनसे महालय का धन प्राप्त नहीं किया जा सका।

यहां विचारणीय तो यह है कि मैडीकल कालेजों में बहुत उच्च स्तर के विद्यार्थी लिये जाते हैं क्योंकि उन कालेजों के छात्रों के हाथ में राष्ट्र का स्वास्थ्य होता है। पर एक तो शुद्ध आयुर्वेद विद्यालय में प्रविष्ठ होने वाले केवल दशम श्रेणी उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थी ही थे और जो परीक्षण टंकारा में किया गया वह इस स्तर को और भी नीचा गिराने वाला था। पांचवी छठी परीक्षाओं तक शिक्षित विद्यार्थियों को बिना किसी नियमित अध्ययन के केवल कुछ नाममात्र परीक्षा दिलाकर आयुर्वेद विद्यालय के योग्य बना देना क्या इस विद्यालय के स्तर को नीचे गिराने वाला न था। यहां एक और बात भी विचारणीय है कि आगे चलकर इस विद्यालय के विद्यार्थी ही कुछ समय तक अच्छे डाक्टरों के पास अभ्यास कर अपने को डाक्टर ही कहते थे और बेझिझक होकर इंजेक्शन भी देते थे और एन्टी-बायोटिक दवाईयां भी देते थे।

• ऐसा न समझना चाहिए कि टंकारा ट्रस्ट के लिए केवल वही कार्य थे जिनका अब तक उल्लेख हो चुका है। सबसे पहली बात तो यह थी कि ट्रस्ट का एक मौलिक ढांचा विकसित हो रहा था। जो अपने आप में एक महत्वपूर्ण बात थी। ट्रस्ट के ट्रस्टी बनने के लिये आर्य विचारों के होने के अतिरिक्त यह भी आवश्यक था कि अपवादों को छोड़कर ट्रस्टी बनने वाले सज्जन के लिए पांच हजार का दान देना आवश्यक था। इसके साथ यह बात भी थी कि ट्रस्टीगण ट्रस्ट के कार्य से आने जाने के लिये कुछ नहीं लेते थे। ट्रस्टियों में वे भी सज्जन थे जो प्रायः रेल में प्रथम श्रेणी से आते जाते थे अथवा हवाई जहाज से आते थे। उन्होंने कभी यह

व्यय ट्रस्ट पर नहीं डाला। प्रायः ट्रस्टी इस भावना से आते थे कि उत्सव के दिनों में या आगे पीछे उन पर जो ट्रस्ट का भोजनादि का खर्च होता था वह भी ट्रस्ट पर भार न हो। उसके लिये वे पुश्कल दान राशि दे जाते थे।

यह बात विचारणीय है कि ट्रस्ट में लगातार निर्माण कार्य चलता रहा। महर्षि आश्रम को अधिक से अधिक सुन्दर तथा उत्सव में आने वाले यात्रियों के लिये उपयोगी बनाने का ध्येय सदा ही अधिकारियों के सामने रहा। ट्रस्ट की पुरानी इमारत की मरम्मत नये शौचालय तथा स्नानालय बनाने तथा ट्रस्ट की भूमि को उपयोगी बनाने के लिए कमरे अथवा दुकान आदि बनाने का काम और इसके साथ ही डेमी के किनारे घाट बनाने का काम भी सदा ट्रस्टियों के ध्यान में रहा। इसलिये आज जो महर्षि आश्रम का रूप है वह १९६० अथवा १९७५ के बीच से सर्वथा भिन्न है। इस बात की कुछ चर्चा आगे चलकर होगी।

आश्रम को दर्शनीय बनाने के लिए चित्रशाला भी बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। उसका कुछ भाग बड़ौदा के श्री नानूभाई टांक द्वारा बनाया गया और बहुत सा भाग बम्बई के श्री हरिशचन्द्र द्वारा कलकत्ता के कलाकार श्री चारूचन्द्र द्वारा बनाई गई चित्रावली को लगभग तीन हजार रुपयों में खरीदकर सम्मिलित किया गया। इसके साथ ही चित्रशाला के साथ के कमरे में मुख्य ट्रस्टियों के अच्छे आकार के फोटो भी कलाकारों द्वारा बनवाकर लगाये गये। प्रायः दर्शक इस चित्रशाला के दर्शन से आनन्द लाभ करते थे।

ट्रस्टियों के सामने उपदेशकविद्यालय बनाने का जो कार्य था और जिस पर बहुत कुछ धन व्यय किया गया है वह कुछ सरल कार्य नहीं था। इसके कई कारण हैं। एक, सामान्यतया अच्छे परिवारों के बच्चों को उपदेशक कार्य में जाने की कोई रूचि न थी क्योंकि उपदेशक का कार्य कोई लाभ का तो है नहीं। यह तो केवल एक धार्मिक प्रचार का कार्य है। गुजरात व्यापार प्रधान देश है। वहां तो इस कार्य के लिए कोई विशेष रुचि न थी। जो बच्चे भी विद्यालय में प्रवेश के लिए आये, प्रायः वे सभी उत्तर प्रदेश, बिहार अथवा महाराष्ट्र के थे। और वे प्रायः उन परिवारों से थे जिन को अपने बच्चों के लिए शिक्षा का प्रबन्ध करने में कठिनाई होती है। मैं एक उदाहरण देना चाहता हूँ। मेरे पास एक आर्य सज्जन अपने बच्चे को प्रवेश के लिए लाये थे। बच्चे के पैर में चप्पल थी पर पिताजी के पैर में चप्पल न थी। वे मेरे सामने ही पुत्र को कहने लगे कि 'बेटा तुझे तो चप्पल गुरुजी दे ही देंगे। तू यह चप्पल मुझे दे दे।' अभिप्राय केवल इतना है कि प्रायः सामान्य से नीचे स्तर के परिवारों के बच्चे ही इस कार्य के लिए आते हैं। दूसरे हमारे विद्यालय के स्नातकों को इस प्रश्न का भी सामना करना पड़ा कि तुम्हारी डिग्री सरकार द्वारा स्वीकृत नहीं। मैंने भिन्न-भिन्न आर्य समाजों में जाकर इस बात को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया कि हम विद्यालय में प्राथमिकता ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को और उनके विचारों के अनुकूल साहित्य को देते हैं। यही स्वाभाविक है। पर हजारों वर्षों का

संस्कृत साहित्य तो पौराणिक विचारों से भरपूर है और संस्कृत के विद्यालयों में उसका ही महत्व है। इसलिये सरकार द्वारा ऐसी संस्था को स्वीकृत कराने में कठिनता होगी जो विशुद्ध आर्य विचारों पर आश्रित हो। मेरी बातों का प्रभाव तो थोड़ा बहुत पड़ा पर सरकारी डिग्री की मांग प्रबल होती चली गई।

एक बहुत बड़ी कठिनता प्रान्तीयता की भी थी। उपदेशक विद्यालय में अनेक गुजराती विद्यार्थी अध्ययन के लिये आये पर **"तमे गुजराती छो"**, **"हूँ गुजराती छू"**, **"पण्डित जी पंजाबी छै"**। इस सूत्रपाठ ने बहुत के मन डोला दिये। दो बच्चे हमारे पास बहुत पिछड़ी जाति के थे। उनके यहां चूहे मारकर खाये जाते थे। एक विद्यार्थी तो बहुत ही सदाचारी था। मुझे उससे बहुत आशा थी। पर प्रान्तीयता के प्रचार ने उसे भगा दिया। इसके होते हुए भी विद्यालय से कुछ योग्य विद्यार्थी कार्यक्षेत्र में आये उनमें से दो रमेश मेहता तथा प्रकाशचन्द्र आर्य आजकल अफ्रीका में प्रचार कार्य कर रहे हैं।

इस प्रान्तीयता के विचार ने आयुर्वेद विद्यालय में मानसिक भिन्नता लाने में बहुत सहायता की और विद्यालय को हानि पहुंची।

यह बात स्पष्ट है कि इस महान् कार्य के लिये धन की बहुत आवश्यकता है। मैंने, जहां तक मैं देख सका, यह अनुभव किया कि आर्य समाज में ऋषि दयानन्द के प्रति अपार श्रद्धा है और उसके लिये धन की कमी कभी नहीं हो सकती। टंकारा में ही आर्य समाज के धनी मानी लोगों ने इतना दान दिया है कि जिसकी सीमा नहीं पर कार्य बहुत बड़ा है इसलिये जितना भी धन आये, वह पर्याप्त प्रतीत नहीं होता। धन के विषय में एक दो मनोरंजक प्रसंग मैं यहां रखना चाहता हूं। पूज्य महाजन साहब का तो दिल्ली में बहुत प्रभाव था उनको जब संग्रह करना होता था तो वे बहुत बड़ी अपने प्रेमियों की बैठक बुलाते थे और उसमें अपने प्रभाव से धन संग्रह करते थे। इसका एक उदाहरण : ४ अक्टुबर १९५९ को महाजन साहब ने अपने निवास स्थान पर एक विशेष बैठक बुलाई थी जिसमें लगभग ६७ आर्य सज्जन एकत्र हुए थे और उनकी अपील पर उसमें लगभग ७१ हजार से अधिक धन के लिये स्वीकृतियां आई थीं। इसी प्रकार दिल्ली में ही एक बैठक में श्री सोमनाथ मरवाह जी ने एक मनोरंजक प्रस्ताव रखा था कि जितने उपस्थित सज्जन हैं, उनकी जेब में जितना भी धन हो वे दान करें। इससे भी पर्याप्त धन आया था। कभी-कभी उमंग आकर ला० दीवान चन्द जी यह कह दिया करते थे कि जितना भी धन उपस्थित लोग देंगे, उतना ही मेरी ओर से समझा जायेगा। अर्थात् उतना धन मैं अपनी जेब से दूंगा। यह दो चार उदाहरण केवल महर्षि के नाम और धाम के प्रति आये लोगों की कितनी श्रद्धा थी, उसको प्रगट करने के लिये दिये हैं। धन संग्रह तो लाखों की संख्या में हो भी चुका है और आगे होगा भी।

१९६५ के बाद ट्रस्ट की बैठकों में निम्न बातें आई। १. विविध लक्षी स्कूल

का ट्रस्ट के द्वारा संचालन न किया जाना और नई संचालन समिति का निर्माण २. आयुर्वेद तथा संस्कृत विश्वविद्यालय के लिये आवश्यकताओं पर विचार। ३. उपदेशक विद्यालय के संबंध में रूपरेखा बनाई जाने पर विचार। ४. टंकारा पत्रिका परोपकारी में सम्मिलित की गई। ५. दिल्ली से स्पेशल ट्रेन का प्रबन्ध। ६. दिल्ली से एक नये उत्साही श्री जुगल किशोर जी का आगमन। (इनके विषय में कुछ विचित्र बात कहने को है। श्री जुगल किशोर जी दिल्ली में आर्य समाज के उत्साही कार्यकर्ता थे। करोल बाग में उनकी ऐनक की दुकान थी। ला० दीवान चन्द जी की प्रेरणा से वे टंकारा आये। उन्होंने प्रबन्ध के कार्यों में उत्साह से भाग लिया। आयुर्वेद कालेज के स्टोर के तथा गौशाला आदि के संबंध में भी वे कार्य करते रहे। जैसा कि मैंने पहले लिखा है कि आयुर्वेद विद्यालय के विद्यार्थियों में पंजाबियों के प्रति घृणा का भाव भर दिया गया था। श्री जुगल किशोर जी भी उसी घृणा के शिकार हुए। अन्त में दुःखी होकर उनको टंकारा से जाना पड़ा। प्रान्तीय भावना ट्रस्ट के कार्य में इतनी हानि पहुंचाती थी, उसका यह एक छोटा सा उदाहरण है।) ७. सम्भवतया इसी भावना का दुष्परिणाम आयुर्वेद विद्यालय के विद्यार्थियों में हलचल हुई और श्री गंडाराम जी मेहता जो मैनेजिंग ट्रस्टी थे उनको बम्बई से आकर व्यवस्था करनी पड़ी। यह रोग पूर्णतया निवारण नहीं हुआ, उसका कुछ दुष्प्रभाव आगे भी देखने को मिला।

१९६५-७० के क्रियाकलाप

१. ट्रस्टियों में परिवर्तन :— नये ट्रस्टी ला० दीवानचन्द जी, श्री गंडाराम जी मेहता। श्री राम गोपाल जी, श्रीमती चंचलबेन पारिख के स्थान पर श्री दिवाकर खोसला जी तथा श्री ओंकार नाथ जी बनाए गए।

२. परिवर्तन :— पंडित आनन्द प्रिय जी ने त्यागपत्र दिया, श्री गंडाराम जी मेहता को नया मंत्री बनाया गया। उन्हें महालय की सब प्रवृत्तियों के संचालक रूप में स्वीकृत किया गया।

मान्य प्रधान श्री महाजन जी का स्वर्गवास होने पर श्री हंसराज जी गुप्त को नये प्रधान का स्थान मिला।

जालन्धर में कपूरथला के राजवंश के महल थे, उनके पास के मकान में ऋषिवर ने व्याख्यान दिये थे। डी० ए० वी० कालेज के प्रबन्धकों ने वह स्थान खरीद लिया था। उसे पवित्र समझकर वहां आर्य समाज का एक विशाल मन्दिर बनाने का विचार किया गया। प्रधान ला० शंकरदास जी थे और मैं मन्त्री था। प्रसिद्ध नेता ला० इन्द्रसेन जी कुछ कारणों से उसके विरोधी थे और कोई उपाय न देखकर ला० शंकरदास जी ने तत्कालीन प्रधान मान्य श्री महाजन जी को पत्र लिखा और अपनी कठिनता उनके सामने रखी। उत्तर संक्षिप्त आया (इन्द्रसेन को

कह दो कि मन्दिर वहां ही बनेगा) पत्र को देखते ही ला० इन्द्रसेन जी ने कहा कि माननीय महाजन जी से अधिक निश्चय करने का और कोई अधिकारी नहीं है।

उपदेशक विद्यालय का विकास तथा महालय की उन्नति माननीय महाजन जी का स्थायी सन्देश है।

३. विशिष्ट कार्य :— १९.६.६८ को बम्बई में हुई मीटिंग में शुद्ध आयुर्वेद कालेज को समाप्त किये जाने का प्रस्ताव पारित किया गया। पं० आनन्द प्रिय जी तथा श्री नानाभाई ने इसका विरोध किया। पर बहुमत समाप्त करने के पक्ष में था।

समाप्ति की आज्ञा के टंकारा पहुंचने पर बहुत हचलचल हुई। ऐसा स्वभाविक ही था। कुछ अध्यापक तथा विद्यार्थियों ने उस आज्ञा के विरोध में बहुत दौड़धूप की। वे मौरवी भी गये और जामनगर भी। उन्होंने कई संस्थाओं से सहायता की प्रार्थना की। कुछ दिन बहुत तनाव का वातावरण बना रहा। विद्यार्थियों ने बहुत भड़काये जाने पर भी आन्दोलन में भाग न लिया। इसका कारण यह था कि कुछ समय पहले भी विद्यार्थी ट्रस्ट के विरोध में एक उग्र आन्दोलन कर चुके थे। तोड़फोड़ भी बहुत हुई थी। पुलिस में भी रिपोर्ट की गई थी और उन्होंने कुछ दबाव भी डाला था अन्ततः अध्यापकों और कर्मचारियों ने ट्रस्ट की शर्तों के अनुसार अवकाश लेना स्वीकार कर लिया और इस प्रकार यह प्रसंग समाप्त हुआ। यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि इस शुद्ध आयुर्वेद कालेज का सामान, फर्नीचर तथा अन्य सब सामग्री अधिकांशतः पं० आनन्द प्रिय जी ने अपने बड़ौदा आयुर्वेदिक विद्यालय के लिये लेने का आग्रह किया। इस संबंध में ट्रस्ट के अधिकारियों तथा उनके मध्य मूल्य का निर्णय कर लिया गया।

४. विशिष्ट दान :— श्री सूरज प्रकाश भामरी ने रु० ११,०००/= का दान अपनी माता स्व० पूज्या अमृत देवी जी की पुण्य स्मृति में वाचनालय के भवन के निर्माण के लिये दिया। उनका विचार था कि इस पुस्तकालय तथा विद्यालय से टंकारावासियों को बहुत लाभ होगा।

इस संबंध में श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने स्पष्ट किया कि टंकारा पंचायत हमारे प्रधान द्वार के साथ ही बाहर की दीवार के साथ एक प्लेटफार्म बनाना चाहती है। महालय उस स्थान का प्रयोग दुकानों और वाचनालय के भवन के लिये करे तो ट्रस्ट के लिये बहुत लाभकारी होगा। इस निश्चय के अनुसार आगे चलकर महालय के मुख्य द्वार के साथ अनेक दुकानें और वाचनालय बना दिये गये।

श्री योगेन्द्र पाल जी नागरथ ने ५ वर्ष के लिये प्रतिवर्ष रु० १,०००/= देने की घोषणा की। इसी मीटिंग में टंकारा के विद्यार्थियों के लिये प्रतिवर्ष रु० १,०००/= देने के लिये निम्न सज्जन तैयार हुए — श्री ओंकार नाथ जी, श्री

दीवान चन्द जी, श्री गंडाराम मेहता, श्री हंसराज जी गुप्त, श्री रतन चन्द जी सूद, डॉ० मथुरा दास जी, श्री बालकृष्ण जी गुप्त, श्री रामनाथ जी ग्रोवर, श्री बद्री प्रसाद भारूका जी ने रु० ३,०००/= प्रतिवर्ष देने का निश्चय प्रकट किया।

५. **अन्य फुटकर विषय :—** प्रचारार्थ टंकारा ट्रस्ट की गतिविधियों पर एक पुस्तिका के प्रकाशन का सुझाव।

विदेशी पर्यटकों के लिये पूरी तरह सुसज्ञित दो कक्षों का प्रबन्ध तथा चित्रशाला गैलरी को और अधिक बढ़ाने तथा सुसज्ञित करने का प्रस्ताव।

नई नियुक्ति :— श्री सत्यदेव जी को सहायक अध्यापक के रूप में नियुक्त किया गया।

१९७१–८० के कार्यकलाप

१. **नये ट्रस्टी :—** श्री ओम प्रकाश जी गोयल, श्री देशराज जी बहल, श्री सत्यदेव विद्यालंकार, श्री सोमनाथ जी मरवाह, श्री रामनाथ जी ग्रोवर, श्री योगेन्द्र पाल जी नागरथ, श्री टी० आस्वानी जी।

श्री गंडाराम मेहता जी के स्वर्गवासी होने पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वीरांदेवी जी को ट्रस्टी बनाया गया तथा श्री नाना लाल जी की मृत्यु होने पर श्री देशराज जी नये ट्रस्टी बने। पं० आनन्द प्रिय जी की पुत्री कु० प्रतिभा पंडित भी नये ट्रस्टियों में थीं।

२. **परिवर्तन :—** श्री दीवान चन्द जी के बहुत रुग्ण होने के कारण श्री रतनचन्द जी सूद नये कार्यकर्ता प्रधान नियुक्त किये गये। श्री रामनाथ जी सहगल तथा श्री ओंकार नाथ जी संयुक्त मन्त्री बने।

३. **नये सुझाव :—** गुजरात के प्रसिद्ध नेता व ट्रस्टी श्री मगनभाई जोशी जी का सुझाव आया कि टंकारा सम्बन्धी मीटिंग अधिकतर टंकारा में ही होनी चाहिए। इस सम्बन्ध में प्रधान जी ने अन्य उपस्थित सज्जनों की सलाह से यह विचार दिया कि दिल्ली तथा बम्बई टंकारा के लिये अभी तक धन के स्रोत हैं। इसलिये उन स्थानों पर मीटिंग रखना टंकारा के हित में है।

पं० आनन्द प्रिय जी के आर्य समाज के जीवन का ५१ वर्ष पूरे होने पर विशेष अभिनन्दन किये जाने का निश्चय किया गया।

उपदेशक विद्यालय के सम्बन्ध में यह सुझाव रखा गया कि श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री भारतीय संस्कृत आयोग के प्रधान हैं उनको एक प्रार्थना पत्र दिया जाये जिसमें यह स्पष्ट किया जाये कि टंकारा में ११ वर्ष से अधिक समय हो गया जबकि लगातार संस्कृत अध्ययन का कार्य चल रहा है इसलिये इस संस्था को भी

सरकारी सहायता मिलनी आवश्यक है।

जन्म स्थान तथा बोध स्थान का रूप रंग बहुत सुन्दर नहीं है। यह विचार किया गया कि ट्रस्ट की ओर से इस संबंध में कुछ धन व्यय किया जाये। कुछ लोगों ने यह प्रश्न उठाया कि यह स्थान ट्रस्ट की सम्पत्ति तो नहीं, इसके लिये इस विषय में क्या हो सकता है। बात पुनः विचार के लिये छोड़ दी गई।

इनकम टैक्स एक्जम्पशन (आयकर छूट) के लिये प्रयत्न करने का सुझाव दिया गया।

उपदेशक विद्यालय तथा गौशाला के लिये सामान्यतः उन्नति और व्यय के संबंध में विचार दिये गये।

महालय में पानी की कमी एक स्थायी प्रश्न है। बरसात में डेमी नदी में पानी भर जाता है अतः कुछ सहायता हो जाती है। पर बाकी मासों में केवल पंचायत के कुएं द्वारा आने वाले पानी से जो मात्रा में बहुत अपर्याप्त होता है। बहुत कष्ट से गुजारा होता है। इस पर भी विचार हुआ और यह प्रश्न आगे भी चलेगा।

टंकारा द्वारा हस्तगत किये जा चुके बोध स्थान की मरम्मत के विषय में भी विचार हुआ। निश्चय हुआ कि इसके प्राचीन रूप को ऐसा ही रखा जा सके। इस प्रकार मरम्मत कार्य हो।

महालय में कलकत्ता से प्रसिद्ध विद्वान श्री अयोध्या प्रसाद जी के पुस्तक भंडार के सम्बन्ध में श्री भगवान देव शर्मा द्वारा प्रदत्त सूचना पर लगातार विचार चलता रहता था। पुस्तक भंडार विशाल है और उसमें बहुत सारा भाग प्रयोग के योग्य भी नहीं है। पहले भी इस भंडार की व्यवस्था के लिये और इसको ठीक ढंग से व्यवस्थित करने के लिये काफी प्रयत्न हो चुका है। इस बार भी इस पुस्तकालय के लिये पांच नई आलमारियां लेने का विचार हुआ।

पं० आनन्द प्रिय जी ने यह सुझाव दिया कि १९७५ में आर्य समाज का शताब्दी महोत्सव होगा। इस अवसर पर गुजरात प्रान्तीय सभा का यह सुझाव है कि अन्य प्रान्तों में प्रान्तीय सरकारों द्वारा रविन्द्र नाथ ठाकुर, योगी अरविन्द, स्वामी विवेकानन्द आदि के स्मारक बनाये गये हैं। इसी परम्परा में टंकारा में भी महर्षि दयानन्द स्मृति में संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय। आर्य जनता ने इस सुझाव को आगे बढ़ाने का विचार दिया।

१९८१-१९९५ के क्रियाकलाप

नये ट्रस्टी :– श्रीमती शिवराजवती जी, श्री मुलखराज जी भल्ला, श्री

महाशय धर्मपाल जी, श्री शान्ति प्रकाश जी बहल।

परिवर्तन :— श्री हरिप्रसाद जी आचार्य अवकाश पर चले गये, उनके स्थान पर श्री हरिओ३म् जी ने कार्य किया। तत्पश्चात् श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार नये आचार्य (वेतन रु० ११००/=) नियुक्त हुए। डॉ० आर० के० पुन्शी अवैतनिक व्यवस्थापक तथा श्री ध्यान पाल सिंह सहायक व्यवस्थापक नियुक्त हुए।

मान्य प्रधान श्री हंसराज गुप्त जी के स्वर्गवास पर श्री रतन चन्द जी सूद नये प्रधान बनाये गये और कार्यकारी प्रधान श्री ओ० पी० गोयल जी चुने गये। श्री ओंकार नाथ जी मैनेजिंग ट्रस्टी तथा श्री रामनाथ सहगल मंत्री चुने गये। टंकारा सहायक समिति दिल्ली के प्रधान श्री शान्ति प्रकाश बहल नियुक्त हुए।

विशेष दान :— श्री देशराज जी बहल ने अपने स्व० पिताजी की स्मृति में रु० ८,५००/= व्यय करके एक नये आयल इंजन की आवश्यकता पूर्ति की।

श्री के० एल० भाटिया जी ने भी एक और आयल इंजिन महालय के कार्य के लिये दान में दिया।

रु० ८०००/= का दान श्रीमती ज्ञानवती जी द्वारा उनके भाई श्री डी० वी० दुआ के अतिथि कक्ष के लिये, जो १० १२ के नाप का हो, दान दिया।

श्री ओम प्रकाश जी गोयल ने प्रतिमास रु० २,०००/ देने की घोषणा की। श्रीमती स्नेहलता हाण्डा ने रु० ३०,०००/ एकत्र करके दिये तथा रु० २०००/ की राशि के सुन्दर हवन कुण्ड बनवा कर दिये।

श्री रतन चन्द जी सूद जो पहले रु० ६०००/ प्रतिवर्ष देते थे उन्होंने अब रु० १५,०००/ प्रतिवर्ष देने की घोषणा की। श्री मुन्ना लाल जी ने रु० २१००/ प्रतिवर्ष देना स्वीकार किया। श्री राम लाल मलिक जी ने प्रतिवर्ष रु० १०००/ देना स्वीकार किया।

श्री रतन चन्द जी सूद ने रु० २०,०००/ शौचालय बनाने के लिये दिये। श्री कर्मचन्द महाजन ने रु० १०,०००/ तथा रु० ८,०००/ मै० बी० के० इंजीनियरिंग, लुधियाना की ओर से शौचालय हेतु प्राप्त हुआ। श्री जगदीश्वरानन्द प्रवासी (ईश्वरानन्द सरस्वती) ने रु० ५०,०००/ की राशि का एफ० डी० बनाकर टंकारा को दिया, जिसका जीवन पर्यन्त उनको ब्याज मिलता रहेगा। श्रीमती कृष्णा धर्मवीर गुलाठी ने रु० ५०००/ स्थिर निधि के लिये दिया, उसके ब्याज से विद्यार्थियों का ही पालन-पोषण हो और इसके अतिरिक्त श्री जेठाभाई कानजी डोडिया तथा श्रीमती मणिबेन जेठाभाई डोडिया ने भी रु० पांच-पांच हजार की स्थिर निधि बनवाई जिसका ब्याज बच्चों के ही पालन-पोषण पर व्यय होगा।

एक नये प्रकार के दान की घोषणा हुई। पानीपत के श्री जगन्नाथ जी २००

स्टील की थालियां शिवरात्रि उत्सव के लिये लाये थे, उनकी प्रेरणा पर लगभग ८०० थालियां भिन्न-भिन्न व्यक्तियों ने देने की घोषणा की।

नये सुझाव तथा समस्यायें :—

उपदेशक विद्यालय में अंग्रेजी की शिक्षा का प्रबन्ध किया जाय। उपदेशक विद्यालय के लिये एक शिक्षा पटल की नियुक्ति हो जिससे उसका समुचित विकास हो सके। श्री सत्यदेव विद्यालंकार जी ने इतने लम्बे समय की सेवा के उपरान्त अवकाश लेने की इच्छा प्रकट की। मन्त्री जी ने निर्देश दिया कि आवश्यकता होने पर उन्हें फिर भी टंकारा आना होगा। यह आना जाना १९८३ तक चलता रहा।

शिवरात्रि पर आगे से भोजन का प्रबन्ध ट्रस्ट के ही द्वारा होगा। ऐसा निश्चय किया गया।

आने वाली शिवरात्रि से पहले एक टंकारा स्मारिका का प्रकाशन होना चाहिए, ऐसा विचार आने पर श्री क्षितीश वेदालंकार जी को प्रार्थना की गई कि वे इसका सम्पादन करें। उन्होंने इसे स्वीकार किया। स्मारिका की आवश्यकता १९८५ में आने वाली रजत जयन्ती के लिये अनुभव की गई।

पुस्तकालय के लिये प्रतिवर्ष की तरह हर वर्ष ६ आलमारियां नई लाने का प्रस्ताव हुआ। महालय की आवश्यक मरम्मत का विचार बनाया गया। महात्मा आर्य भिक्षु जी ने सुझाव दिया कि यज्ञशाला पर मन्दिरों की तरह के गुम्बद का निर्माण किया जाये।

आर्य समाज जामनगर के श्री जयन्ती भाई तथा श्री मंगलसेन चोपड़ा जी ने पत्र द्वारा एक विचार भेजा था कि टंकारा ट्रस्ट के काम में गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा का एक महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए। यह विचार लगभग प्रारम्भ से ही आता रहा है। समय-समय पर यह सुझाव दिया जाता रहा है कि गुजरात में होने के कारण इस महत्त्वपूर्ण आर्य समाज के संस्थान में गुजरात की आर्य प्रतिनिधि सभा का महत्त्वपूर्ण स्थान होना चाहिए। श्री मन्त्री जी ने यह विचार प्रगट किया कि टंकारा ट्रस्ट एक स्वतंत्र संस्था है। उसके लिये ऐसी शर्त लगाना ठीक नहीं। टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी बनने के लिये रु० ५,०००/ की राशि दान की भी व्यवस्था रखी हुई है और अभी ट्रस्टी बनने के लिए कुछ महानुभावों की दान राशि भी आई हुई हैं श्री आनन्द प्रिय जी, जो कि गुजरात के प्रमुख कर्ताधर्ता हैं, उन्होंने कभी इस प्रकार का कोई विचार नहीं रखा। यद्यपि वे प्रारम्भ से ही टंकारा के कार्य में महत्त्वपूर्ण भाग ले रहे हैं। अतः श्री जयन्ती भाई तथा श्री मंगलसेन चोपड़ा के विचार को स्वीकार करना टंकारा ट्रस्ट के लिये कठिन होगा। विविध लक्षी हाई स्कूल के संबंध में भी परिवर्तन का विचार प्रस्तुत किया गया। पर यह निश्चय हुआ कि अनेक वर्षों तक संचालन करने के बाद यह कार्य श्री आनन्द प्रिय

जी के पास ही रहना समुचित होगा।

पानीपत के श्री जगन्नाथ जी ने महालय को विश्वदर्शनीय बनाने के लिये एक लाख के लगभग धन एकत्र किया है। पहले उनका विचार था कि यह धन जन्म स्थान के प्राप्त होने पर उसमें खर्च किया जाये। पर अभी उसकी प्राप्ति की शीघ्र कोई सम्भावना नहीं, इसलिये वे इस राशि को महालय को अत्यन्त सुन्दर बनाने के लिये व्यय करना चाहते हैं। इसके लिये उनका धन्यवाद किया गया और यह आशा प्रकट की गई कि वे यहां आकर स्वयं राशि को आने वाली शिवरात्रि तक व्यय कर सकें तो बहुत अच्छा होगा।

नई नियुक्तियां :—

श्री ध्यानपाल जी को व्यवस्थापक नियुक्त किया गया। पर वे कुछ मास के बाद त्याग पत्र देकर चले गये। डॉ० आर० के० पुन्शी यथापूर्व अवैतनिक व्यवस्थापक के रूप में दिल्ली से अपना कार्य संचालन करते रहे। प्रचार के लिये श्री ओम प्रकाश भजनोपदेशक की नियुक्ति की गई।

१९८६ से १९९० के क्रियाकलाप

नये ट्रस्टी :— श्री मुलख राज भल्ला जी के स्वर्गवास से ट्रस्टी का स्थान रिक्त हुआ, उसके लिये प्रसिद्ध उद्योगपति श्री इन्द्र नारायण जी को नया ट्रस्टी बनाया गया। श्री जयदेव आर्य सूरत वाले भी ट्रस्टी बनाये गये तथा श्री दरबारी लाल जी डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रमुख, उन्होंने भी ट्रस्टी बनना स्वीकार किया।

विशेष दान :— श्री हाकिम राय जी आगरा वाले ने एक कमरे के लिये दान देने का निश्चय किया और रु० १५,०००/ की प्रथम किश्त उन्होंने दे दी और शेष राशि वे धीरे-धीरे दे देंगे।

श्री रवीन्द्र आनन्द जी की माता जी ने रु० ४,०००/ की एफ०डी० ट्रस्ट को भेंट की, जिसका उपयोग किसी निर्धन कन्या के विवाह पर किया जायेगा।

नई नियुक्तयां तथा त्याग पत्र :— श्री रामशरण दास आहुजा जी को संयुक्त मंत्री बनाया गया।

श्री धर्मवीर विद्यालंकार जी ने अपनी अस्वस्थता के कारण त्याग पत्र दिया। श्री आद्या प्रसाद जी को (१५००) पर तथा अन्य सुविधाओं केसाथ आचार्य बनाया गया। आचार्य जी की वेतन वृद्धि १७५०/ कर दी गई। आचार्य जगत् प्रिय जी का त्याग पत्र स्वीकार किया गया और उनके स्थान पर आचार्य ओम प्रकाश जी को रु० २०००/ मासिक वेतन तथा अन्य सुविधाओं सहित आचार्य बनाया गया।

रिटायर इंजीनियर श्री सत्यदेव जी के कार्य के सम्बन्ध में प्रशंसा करते हुए श्री ओंकार नाथ जी ने स्पष्ट किया कि उनका विचार है कि बाड़ी में बोरिंग कराने से पुश्कल पानी मिल सकेगा। इसके लिये रु० २,०००/ की आवश्कता है। सुझाव को स्वीकृत किया गया।

टंकारा सहायक समिति हरियाणा के श्री देशबन्धु जी तथा श्री भगवत भिक्षु जी ने स्व० श्री जगन्नाथ जी की स्मृति में सतसंग हाल बनाने का सुझाव दिया। श्री ओंकार नाथ जी ने स्पष्ट किया कि ८० ४० के आकार के हाल में ४०-५० हजार का व्यय आयेगा। इसके लिये पहले मास्टर प्लान बनाना आवश्यक होगा। टंकारा ट्रस्ट भी इस कार्य में सहायता देगा।

जन्म स्थान के अधिग्रहण के संबंध में डॉ० आर० के० पुन्शी जी का सुझाव था कि अहमदाबाद में सरकारी पुरातत्त्व विभाग के साथ बातचीत से पता लगा है कि यदि पुरातत्त्व विभाग इसको अपने अधिकार में ले ले तो वहां ट्रस्ट द्वारा आवश्यक कार्य चलाये जा सकेंगे। इस विचार को आगे बढ़ाने के लिये सुझाव दिया गया।

यह निश्चय हुआ कि भोजनालय के फर्श के लिये मोजेक टाईल्स का प्रबन्ध श्री बाल कृष्ण जी शुक्ल ट्रस्टी द्वारा किया जाये तथा छत के सम्बन्ध में कच्छभुज के श्री कल्याण जी भाई से सम्पर्क किया जाये।

उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थियों के लिये दैनिक पत्रों में विज्ञापन दिये जायें, ऐसा निश्चय हुआ। डॉ० आर० के० पुन्शी जी ने बतलाया कि जो कुआं पहले खुदवाया गया था, उसका पानी पीने के योग्य नहीं है, ऐसा विशेषज्ञों ने बतलाया है। पर उस पानी में सुधार किया जा सकता है। मन्त्री जी का विचार था कि एक और कुआं खुदवाया जाये।

गौशाला के घाटे के संबंध में प्रसिद्ध गौशाला का कार्य करने वाले श्री रामचन्द्र जी आर्य से सहयोग की प्रार्थना का विचार किया गया।

नई यज्ञशाला के निर्माण का विचार भी प्रस्तुत हुआ। श्री शान्ति प्रकाश बहल जी को इस कार्य का भार सौंपा गया। उन्होंने स्पष्ट किया कि जो नया डिजाईन हम चाहते हैं, उस पर लगभग पांच लाख रुपया व्यय आयेगा।

आने वाली शिवरात्रि के सम्बन्ध में स्थानीय लोगों से सम्पर्क बढ़ाने तथा अतिथियों के सत्कार के लिये कुछ विशिष्ट नियुक्तियां करें और शौचालयों के लिये तीन सैनटैक्स के टैंक आदि तैयार कराने पर विचार किया गया।

श्री ब्रह्मानन्द आजाद से एक पत्र प्राप्त हुआ था कि टंकारा के स्नातक तथा विश्वविद्यालयों के स्नातकों में क्या अन्तर है। मंत्री जी ने स्पष्ट किया कि वे इस

रेलवे के किराये में कमी की जाती है, वैसे ही टंकारा के लिये कमी कराने का प्रयत्न किया जाये।

रिटायर इंजीनियर श्री सत्यदेव जी ने टंकारा में ही अपना निवास स्थान बनाया है, वे महालय के कार्यों में बहुत सहयोग करते हैं। उनके इस कार्य की प्रशंसा की गई।

उत्सव के अवसर पर टंकारा के लिये बस लाने के सम्बन्ध में श्री राम लाल मलिक जी ने कार्य की प्रगति का परिचय दिया। गौशाला के विषय में घाटे के कारण उसे बन्द करने का विचार उपस्थित किया गया। श्री मन्त्री जी ने निवेदन किया कि यह एक गहरी आस्था का प्रश्न है, इसके संबंध में ऐसा निश्चय करना ठीक नहीं है। घाटे को घटाने का प्रयत्न करना चाहिए।

सूरत के श्री जयदेव आर्य जी ने पिछली शिवरात्रि के ऋषि लंगर का सारा व्यय दिया था, उनकी प्रशंसा की गई और आभार प्रकट किया गया। इसके साथ ही बम्बई घाटकोपर आर्य समाज के वीरों एवं वीरांगनाओं ने लंगर की जो सुव्यवस्था की, उसके लिये उनका आभार प्रकट किया गया।

विशेष उपलब्धि

१९८५-८६ के आय-व्यय का परिचय देते हुए महामंत्री जी ने कहा कि उन्होंने तथा श्री ओंकारनाथ जी ने जब कार्यभार संभाला था तब स्थिर निधि लगभग एक लाख थी अब लगभग सात लाख की स्थिर निधि है। श्री ओंकार नाथ जी ने निवेदन किया कि उस समय ट्रस्ट का वार्षिक खर्च रु० ८०,०००/ के लगभग होता था और अब वह खर्च लगभग तीन लाख से अधिक चल रहा है। इस उन्नति के लिये ट्रस्टियों ने दोनों का आभार प्रकट किया।

पानी के कार्य के संबंध में टंकारा सहायक समिति हरियाणा के श्री भगवत भिक्षु जी अपने साथियों के साथ टंकारा पधारे। उन्होंने नदी के निकट बाड़ी के स्थान में एक कुआं खुदवाया उससे मीठा पानी निकला है, ऐसा प्रतीत हुआ। मशीन के लगाने वे वह पानी ७-८ घंटे तक चलकर समाप्त हो जाता था। मशीन कुछ समय के लिए बन्द कर दी जाती थी, फिर पानी भर जाता था। पाईप लगाकर पानी महालय में ले जाया जाने लगा और वहां एकत्र किया जाने लगा। इससे पानी की कुछ सुविधा हो गई। बाड़ी से भी अन्न आदि की उपज की जा सकेगी, ऐसा प्रतीत हुआ।

स्त्री आर्य समाज मोरीगेट दिल्ली की देवियों ने रु० १०,०००/ की राशि एकत्र की और उसे एफ० डी० के रूप में ट्रस्ट को भेंट किया गया, इसके संबंध में टंकारा में एक छोटा सा शिलालेख लगवाया गया है।

रिटायर इंजीनियर श्री सत्यदेव जी के कार्य के सम्बन्ध में प्रशंसा करते हुए ओंकार नाथ जी ने स्पष्ट किया कि उनका विचार है कि बाड़ी में बोरिंग कराने पुश्कल पानी मिल सकेगा। इसके लिये रु० २, ०००/ की आवश्कता है। सुझाव स्वीकृत किया गया।

टंकारा सहायक समिति हरियाणा के श्री देशबन्धु जी तथा श्री भगवत क्षु जी ने स्व० श्री जगन्नाथ जी की स्मृति में सतसंग हाल बनाने का सुझाव या। श्री ओंकार नाथ जी ने स्पष्ट किया कि ८० ४० के आकार के हाल में -५० हजार का व्यय आयेगा। इसके लिये पहले मास्टर प्लान बनाना आवश्यक ा। टंकारा ट्रस्ट भी इस कार्य में सहायता देगा।

जन्म स्थान के अधिग्रहण के संबंध में डॉ० आर० के० पुन्शी जी का सुझाव कि अहमदाबाद में सरकारी पुरातत्त्व विभाग के साथ बातचीत से पता लगा है यदि पुरातत्त्व विभाग इसको अपने अधिकार में ले ले तो वहां ट्रस्ट द्वारा वश्यक कार्य चलाये जा सकेंगे। इस विचार को आगे बढ़ाने के लिये सुझाव दिया ा।

यह निश्चय हुआ कि भोजनालय के फर्श के लिये मोजेक टाईल्स का प्रबन्ध बाल कृष्ण जी शुक्ल ट्रस्टी द्वारा किया जाये तथा छत के सम्बन्ध में कच्छभुज श्री कल्याण जी भाई से सम्पर्क किया जाये।

उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थियों के लिये दैनिक पत्रों में विज्ञापन दिये यें, ऐसा निश्चय हुआ। डॉ० आर० के० पुन्शी जी ने बतलाया कि जो कुआं ले खुदवाया गया था, उसका पानी पीने के योग्य नहीं है, ऐसा विशेषज्ञों ने लाया है। पर उस पानी में सुधार किया जा सकता है। मन्त्री जी का विचार था एक और कुआं खुदवाया जाये।

गौशाला के घाटे के संबंध में प्रसिद्ध गौशाला का कार्य करने वाले श्री मचन्द्र जी आर्य से सहयोग की प्रार्थना का विचार किया गया।

नई यज्ञशाला के निर्माण का विचार भी प्रस्तुत हुआ। श्री शान्ति प्रकाश ल जी को इस कार्य का भार सौंपा गया। उन्होंने स्पष्ट किया कि जो नया जाईन हम चाहते हैं, उस पर लगभग पांच लाख रुपया व्यय आयेगा।

आने वाली शिवरात्रि के सम्बन्ध में स्थानीय लोगों से सम्पर्क बढ़ाने तथा तिथियों के सत्कार के लिये कुछ विशिष्ट नियुक्तियां करें और शौचालयों के लिये न सैनटैक्स के टैंक आदि तैयार कराने पर विचार किया गया।

श्री ब्रह्मानन्द आजाद से एक पत्र प्राप्त हुआ था कि टंकारा के स्नातक तथा श्वविद्यालयों के स्नातकों में क्या अन्तर है। मंत्री जी ने स्पष्ट किया कि वे इस

सम्बन्ध में विश्वविद्यालयों से पत्र व्यवहार करेंगे कि टंकारा उपदेशक विद्यालय का किसी विश्वविद्यालय से सम्बन्ध हो जाये। उन्होंने यह भी बताया कि टंकारा के स्नातकों को डी० ए० वी० विद्यालयों में स्थान दिया जाता है।

श्री अजय सहगल जी ने स्पष्ट किया कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में ८० प्रतिशत से अधिक स्थान टंकारा के स्नातकों का है। और इसी अनुपात से आर्य समाज सान्ताक्रूज में स्थान है।

गौशाला के घाटे को पूरा करने के लिये डॉ० आर० के० पुन्शी जी का सुझाव था कि बाड़ी की जमीन को प्रतिवर्ष ११ मासके लिये पट्टे पर कृषि हेतु दे दिया जाये। तब इस आय से यह घाटा बहुत कम हो जायेगा।

निर्माण कार्य के सम्बन्ध में निम्न विचार दिये गये जिनका प्रायः प्रारम्भ हो गया। भोजनशाला का फर्श कोटा पत्थर का बनाया जाये। अतिथिशाला के पास शौचालय बनाये जायें। उत्सव के मंच के पीछे जो शौचालय है, उनकी मरम्मत कराई जाये। श्रीमती स्नेहलता हाण्डा जी का सुझाव था कि तालाब के पास १० १२ के चार कमरे बनाये जायें और यज्ञशाला निर्माण का कार्य चल ही रहा है।

शिवमन्दिर के संस्कार की बात कुछ आगे बढ़ी है। वहां के अधिकारियों के साथ ट्रस्टियों का विचार विनिमय चल रहा है।

एक महत्त्वपूर्ण निश्चय हुआ कि कलकत्ता के आर्य विद्वान श्री अयोध्या प्रसाद जी से पुस्तकालय की जो सामग्री श्री भगवान देव शर्मा द्वारा टंकारा लाई गई थी, अभी तक उसका उचित प्रयोग नहीं हो सका और टंकारा में उसके उपयोग का वातावरण भी नहीं है। इसलिये यह निश्चय हुआ कि श्री आर्यवीर भल्ला, प्रिंसिपल, डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, सेक्टर-१४ फरीदाबाद, हरियाणा से निवेदन किया जाये कि वे इन पुस्तकों को अपने यहां अपने व्यय से मंगवा लेवें और उनके उपयोग का उचित प्रबन्ध करें।

हर्ष का विषय है कि श्री आर्य वीर भल्ला जी ने इस बहुत कठिन कार्य को सन्तोषजनक रूप से कर दिया है। जिल्दें आदि बनवाकर उन पुस्तकों को उपयोग के योग्य बना दिया है।

१९९० के बाद

दिनांक १४.२.१९९१ को मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ओंकार नाथ जी की अध्यक्षता में महर्षि दयानन्द आश्रम टंकारा में एक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें निम्न प्रस्ताव पारित किया गया।

टंकारा जो दिल्ली में श्री आर० के० पुन्शी, श्री रामशरण दास आहूजा एवं

श्री शान्ति प्रकाश बहल जी के सहयोग से होता है, उसकी सराहना की गई। मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ओंकार नाथ जी ने कहा कि अब हमें युवकों को आगे लाना चाहिए तभी उन्हें अनुभव होगा कि कार्य को आगे कैसे बढ़ाया जा सकता है। हमारे पास ट्रस्टियों का एक स्थान रिक्त है, उस पर श्री अजय सहगल जो कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभाके सहमन्त्री हैं, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के मन्त्री, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली के कार्यकर्ता प्रधान तथा दिल्ली के अन्य आर्य क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं, को टंकारा ट्रस्ट का ट्रस्टी बनाया जाये। इस प्रस्ताव की सर्वसम्मति से सम्पुष्टि की गई और उन्हें नया ट्रस्टी बनाया गया।

नये ट्रस्टी विशेष :— प्रारम्भ से लगातार टंकारा ट्रस्ट के कार्यों के संचालक तथा गुजरात में आर्य समाज के कार्य के प्राण पं० आनन्द प्रिय जी का स्वर्गवास हो गया। १२-१३ फरवरी १९९४ के ऋषि बोधोत्सव के प्रारम्भ में श्रद्धांजलि सभा द्वारा शोक प्रकट किया गया।

स्व० श्री रामशरण दास जी आहुजा के स्थान पर श्री ज्ञान प्रकाश जी चोपड़ा, प्रधान डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति ट्रस्टी बने।

श्री रतन चन्द जी सूद के बहुत अस्वस्थ होने पर वे पांच वर्ष से ट्रस्ट की किसी भी बैठक में नहीं आ सके। उनके स्थान पर श्री लधाभाई पटेल, घाटकोपर बम्बई को नया ट्रस्टी बनाया गया।

श्री देशराज जी बहल के बहुत अस्वस्थ होने पर उनके स्थान पर श्री सत्यानन्द जी मुंजाल, माडल टाउन, लुधियाना को ट्रस्टी बनाया गया।

श्री रतन चन्द जी सूद के स्वर्गवास होने पर उनके सुपुत्र (जो अपने पिताजी की तरह ही दान देने में उदार हैं) श्री जे० आर० सूद को नया ट्रस्टी बनाया गया।

श्री रतन चन्द्र जी सूद के स्थान पर श्री दरबारी लाल जी को ट्रस्टी बनाया गया।

श्री मेल्हूराम कटारिया के स्वर्गवास होने पर श्री हंसमुख परमार नये ट्रस्टी बने। श्री इन्द्र नारायण जी का स्वर्गवास होने पर श्री प्रेम कृष्ण जी बहल नये ट्रस्टी नियुक्त हुए। श्री अरुण अब्रोल जी को उनके दान तथा सेवा के उपलक्ष्य में ट्रस्टी बनाया गया।

विशेष दान

श्री गिरधारी लाल आर्य कैथल वालों ने इक्यावन हजार रुपया दान दिया, उसकी एफ० डी० बनवाकर स्थायी निधि में डाल दिया गया है। श्री हरिश्चन्द्र जी ओझा ने रु० २५,०००/ की राशि कमरे के लिये दान दी।

अति विशिष्ट दान

लन्दन के श्री जी० चन्द्रा ने अपने पूज्य पिता पं० भागचन्द आर्य एवं माता श्रीमती धनदेवी आर्या की स्मृति में एक लाख रु० की राशि दान में दी। इस धनराशि की एफ० डी० बना दी गई है। दानी महोदय की इच्छा है कि इसके ब्याज की आय उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी तथा गौशाला की गायों के लिये ही व्यय किया जाये। श्री सहगल जी ने स्पट किया कि जब वे कनाडा और अमरीका गये वहां से उन्होंने एक लाख रु० की राशि एकत्र की, उसकी भी एफ० डी० बनवा दी गई है। शिवरात्रि के अवसर पर आये श्री अरुण अब्रोल जी ने एक कमरे के निर्माण हेतु एक लाख रु० की राशि दी जिससे वहां पर एक वी० आई० पी० कमरे के निर्माण किया जा रहा है।

परिवर्तन

आचार्य विजय पाल शास्त्री जी की नियुक्ति हुई रु० २०००/ मासिक तथा अन्य सुविधाओं के साथ १९९३ में। श्री विद्यादेव जी शास्त्री आचार्य तथा उनके साथ श्री रामदेव शास्त्री, श्रीकान्त शास्त्री तथा श्री अशोक कुमार शास्त्री की नियुक्ति की गई और इन सभी को सरकारी ग्रेड दिये गये।

लेखा अधिकारी श्री बुद्धदेव भाई के स्थान पर उनके सुपुत्र श्री हर्षद राय भाई को लेखा अधिकारी नियुक्त किया गया।

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा को प्राप्त करने के लिये पिछले कई वर्षों से हम प्रयत्न कर रहे हैं कि वह स्थान हमें मिल जाये। लेकिन श्री चक्कू भाई बड़े जिद्दी हैं, वे कहते हैं कि जब से उन्होंने वह मकान लिया है, वे करोड़पति बन गये हैं, उस मकान को वे अपने लिये बड़ा ही सौभाग्यशाली मानते हैं।

१९७५ में टंकारा में सूखा (अकाल) पड़ा था तो वहां पं० प्रकाशवीर शास्त्री के साथ तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और तत्कालीन मन्त्री श्री विद्याचरण शुक्ल टंकारा गये थे। तब वहां श्रीमती इन्दिरा गांधी जी यज्ञ पर बैठी थीं और वहां उनका अभिनन्दन भी किया गया था। उसके बाद वे महर्षि दयानन्द जन्म स्थान पर गईं ओर उन्होंने श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी, जिनके साथ श्री रामनाथ सहगल, मन्त्री टंकारा ट्रस्ट थे, को कहा कि शास्त्री जी अभी तक यह स्थान क्यों नहीं मिला है तो उन्हें उत्तर दिया कि हमारे प्रयत्नों के बावजूद भी हमें यह स्थान नहीं मिला है। इस पर श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने कहा कि आप दिल्ली में मेरे से वार्तालाप करें।

श्री ओम प्रकाश, सांसद जो कि आर्य समाज के मन्त्री थे ने आर्य समाज के

लगभग १०० सभासदों की एक बैठक बुलाई और श्रीमती इन्दिरा गांधी से भेंट करके उन्हें मेमोरेण्डम दिया। उन्होंने उसे गुजरात सरकार को भेजा और गुजरात सरकार ने उस स्थान को एक्वायर करने की योजना बनाई और कहा गया कि वह स्थान मिल जाये तो आप यहां क्या-क्या कार्यक्रम करने की योजना है। हमने योजना बनाकर उन्हें दी जिसमें लिखा कि वहां हम मिनी होस्पीटल, कम्यूनिटी हॉल, महर्षि दयानन्द स्मारक, रिसर्च सेन्टर आदि-आदि समाज सेवा के कार्य आरम्भ करेंगे।

दिल्ली में टंकारा ट्रस्ट की बैठक बुलाई गई और सुप्रीम कोर्ट के प्रसिद्ध एडवोकेट स्व० श्री नवनीत लाल एडवोकेट जो कि टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी थे ने प्रस्ताव बनाकर गुजरात सरकार को भिजवाये गये। वे श्री ओंकार नाथ जी मैनेजिंग ट्रस्टी के साथ गुजरात भी गये, लेकिन हमें सफलता नहीं मिली।

आज से लगभग ५ वर्ष पूर्व शिवरात्रि के मेले पर लोगों में काफी रोष था कि हमें जन्म स्थान क्यों नहीं मिला। सभी लोग श्री चक्कू भाई के निवास स्थान पर गये। वहां श्री चक्कू भाई का परिवार उपस्थित था, वहां काफी शोर शराबा हुआ। लेकिन मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने अपने प्रयत्न से उत्तेजित लोगों को शान्त किया। तब श्री चक्कू भाई के चाचाजी का एक मकान जो कि महर्षि दयानन्द जन्म स्थान के साथ ही है। वह मकान हमने लगभग २५,०००/ रु० का खरीद लिया, जिस पर हमने लगभग २५-३० हजार रुपया और व्यय करके यज्ञशाला, ध्वजस्तम्भ आदि का निर्माण किया। उसके बाद लगभग दो लाख रुपये के तीन मकान जन्म स्थान के पास ही खरीद लिये। अब उस गली में हमारे पास चार मकान हैं। लेकिन वह स्थान जहां स्वामी दयानन्द जी का जन्म हुआ था, उसे हम अभी तक प्राप्त नहीं कर सकें हैं। हमारा प्रयास जारी है।

सन् १९९५ में श्री स्वरूप सिंह जी, चौ० बंसीलाल जी के साथ ऋषि बोधोत्सव पर पधारे तब भी हमने उन्हें स्मरण कराया और उन्होंने पुनः स्थान को प्राप्त कराने में सहयोग देने हेतु आश्वासन दिया।

दो वर्ष पूर्व जब गुजरात में भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई और मुख्यमन्त्री श्री केशुभाई पटेल बने जो कि सौराष्ट्र के थे, को स्थान प्राप्त करने के लये हमने पत्र व्यवहार किया साथ ही भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ अधिकारियों जैसे श्री केदार नाथ साहनी, श्री अटलविहारी बाजपेय, श्री विजय कुमार मल्होत्रा, श्री लाल कृष्ण आडवाणी, श्री प्रो० रासा सिंह, श्री मदन लाल खुराना आदि से पत्र व्यवहार करके श्री केशुभाई पटेल को सम्पर्क किया। सभी से श्री केशुभाई को वह स्थान प्राप्त कराने में सहयोग देने के लिये प्रार्थना की, परन्तु कुछ समय बाद उनकी सरकार हट गई, उसके बाद श्री सुरेश भाई महता की सरकार बनी, उनसे भी हम इस उपलक्ष्य में सम्पर्क बनाये हुए हैं।

आचार्य विद्यादेव जी जो कि इस समय उपदेशक विद्यालय के आचार्य हैं, स्थानीय विद्यायकों से सम्पर्क बनाये हुए हैं और उनके साथ वे वर्तमान मुख्यमंत्री श्री सुरेशभाई मेहता को मिलने का प्रयत्न कर रहे हैं। परन्तु श्री चक्कू भाई गुजरात के बड़े उद्योगपति हैं इस कारण वह स्थान प्राप्त करने में कठिनाई हो रही है।

इस वर्ष १९९६ में जो ऋषि बोधोत्सव १६, १७, १८ फरवरी को आयोजित किया जा रहा है, में श्री चक्कू भाई को आमंत्रित किया है, उन्हें यज्ञ का यमजान बनायें और उनका स्वागत तथा सम्मान करेंगे और सारी जनता के सामने उनसे प्रार्थना करेंगे कि उस स्थान को वे हमें दे देवें। सम्भवतया वे मान जायें। भारत सरकार एवं गुजरात सरकार के हस्तक्षेप से भी वह स्थान हमें प्राप्त नहीं हुआ है क्योंकि वे बड़े उद्योगपति हैं और कोई न कोई उड़चन डाल ही देते हैं।

उपलब्धियां और सुझाव

गौशाला के घाटे का स्थायी प्रश्न प्रस्तुत किया गया। श्री जयदेव भाई आर्य ट्रस्टी ने एक महत्वपूर्ण निश्चय लिया। उनके साथ पांच सदस्यों की एकसमिति इस कार्य के लिये स्वीकार की गई। ये पांचों सदस्य श्री जयदेव भाई आर्य ही चुनेंगे।

निर्माण कार्य पर इस वर्ष (१९९१) एक लाख रुपया व्यय किया गया। उसमें नदी के किनारे के महल के भाग की मरम्मत, गौशाला की दीवार का पुनर्निर्माण, पुराने शौचालय एवं स्नानागारों की मरम्म्त का कार्य सम्मिलित है।

टंकारा सहायक समिति हरियाणा की शेष राशि की स्थिर निधि बनवा ली गई है। महालय के बड़े-बड़े दो गोदाम जो किराये पर दिये हुए थे, उन्हें महर्षि दयाननद विविध लक्षी विद्यालय को देने का विषय प्रस्तुत हुआ। यह विद्यालय अभी तक पंचायत के भवनों में था। यह निश्चय हुआ कि विद्यालय का संचालक समिति वाले धन एकत्र करेंगे, उसका अलग हिसाब बैंक में रखा जायेगा। संचालक समिति के दो सदस्य उस हिसाब को संचालित करेंगे।

बैंक ऑफ सौराष्ट्र ने महालय के प्रांगण में बैंक के लिये स्थान की मांग की है। श्री ओंकार नाथ जी तथा श्री सहगल जी ने इस विषय में बातचीत प्रारमी की है।

टंकारा विद्यालय के कार्यों का निरीक्षण करने के लिये श्री तीर्थराज शास्त्री जी को भेजने का निश्चय हुआ तथा टंकारा में आचार्य जी से प्रार्थना की गई वे प्रति मास अपने कार्य की रिपोर्ट दिल्ली कार्यालय तथा बम्बई कार्यालय में भिजवाया करें।

दयानन्द जन्म स्थान लेने के सम्बन्ध में कार्य के लिये श्री भगवान देव आर्य, श्री लधाभाई पटेल एवं श्री बुद्धदेव भाई एक समिति बनाई गई। जो कानकजीं चक्कुभाई से इस सम्बन्ध में वार्तालाप करेगी।

गौशाला के घाटे पर विचार

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में एक गौशाला चल रही है, जिस पर लगातार घाटा ही रहा है। परन्तु अब श्री आचार्य विद्यादेव जी के सहयोग से उस घाटे को दिन प्रतिदिन कम किया जा रहा है। एक आचार्य एवं ३ अध्यापक इस कार्य में पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। इस समय स्थिति यह है कि बाड़ी में इतना चारा हो जाता है कि बाहर से लेने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। चारा अगले वर्ष के लिये सुरक्षित रख लिया जाता है। जनता भी हमें इसके लिये पूर्ण सहयोग दे रही है। इस समय गौशाला में लगभग ३५ गायें हैं जो कि लगभग सभी दूध दे रही है। सभी ब्रह्मचारियों को गाय का दूध दिया जा रहा हैं जनता भी हमें गाय आदि गौशाला के लिये खरीद कर देती है।

श्री जयदेव भाई आर्य अस्वस्थता के कारण अपने निर्णय के अनुसार कार्य न कर सके। अब वे पुनः प्रयास आरम्भ करेंगे।

ला० दीवान चन्द्र ट्रस्ट वालों ने एक सभागार बनाने का प्रस्ताव किया है, इस पर लगभग पांच लाख रुपया व्यय होगा। इसका नाम श्री हंसराज गुप्त हाल होगा। मन्त्री जी को कहा गया कि इस विषय में आगे बात चलायें।

गोदामों में विविध लक्षी विद्यालय का जो निर्माण कार्य हो रहा है, उसके विषय में निश्चय हुआ कि वह सीधे टंकारा ट्रस्ट के अधिकार में रहे। उसकी संचालन समिति द्वारा विद्यालय में फुटवाल, बॉलीबॉल तथा बास्केट बॉल आदि खेलों के खेलने का प्रबन्ध किया जायेगा तथा इसके लिये किसी अंशकालिक कार्यकर्ता को री रखा जायेगा।

विद्यालय के कमरों के आगे सुन्दर घास के उद्यान बनाने का भी विचार दिया गया।

कई वर्ष से विविध लक्ष्मी विद्यालय की प्रबन्ध समिति हमसे प्रार्थना कर रही थी कि उन्हें विद्यालय चलाने के लिये स्थान बनाकर दे दिया जाये। यह विद्यालय टंकारा ट्रस्ट के अन्तर्गत नहीं है, अपितु टंकारा गांव की स्थानीय कमेटी के अन्तर्गत है और सरकारीसहायता प्राप्त विद्यालय है, उन्हें १० कमरे तथा एक हॉल बना कर दिया है और उनकी काफी आर्थिक सहायता की है। श्री ओंकार नाथ जी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शिवराजवती जी ने लगभग एक लाख रुपये की राशि का हॉल बनवाकर उन्हें अपनी ओर से दिया है, जिसका निर्माण कार्य चल रहा है और १९९६ के ऋषि बोध उत्सव तक समाप्त हो जायेगा। यह विद्यालय निरन्तर चल रहा है और शिवरात्रि के दिनों में एक सप्ताह की विद्यालय की छुट्टी रहती है, विद्यालय में भारत भर से आने वाले ऋषि भक्तों के आवास आदि का प्रबन्ध किया जाता है, विद्यालय के छात्र तथा अध्यापक उत्सव में काफी सहयोग देते हैं। इस निर्माण कार्य पर लगभग ८-१० लाख रुपया व्यय हो गया है।

जन्म स्थान के साथ गली में एक कमरा एक लाख सत्रह हजार की राशि में खरीदा गया है। उसे गिराकर उसके स्थान पर एक दर्शनीय स्थान बनाने का निश्चय हुआ।

ध्वजारोहण के स्थान को प्लेटफार्म का रूप दिया गया। डॉ० बेलाणी जी के सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हुआ। यह प्लेटफार्म संगमरमर के पत्थर से बनाया गया है।

टंकारा के विद्यालय का संबंध आचार्य विजयपाल शास्त्री जी के प्रयत्न से गुरुकुल ज्वालापुर से किया गया। अब आगे से उसके लिये विद्याभास्कर की उपाधि के योग्य पढ़ाई होगी। यह उपाधि बी. ए. के समकक्ष मानी गई है। अब विद्यालय में दो पाठ्यक्रम चल रहे हैं। एक पुराना और दूसरा विद्याभास्कर संबंधी।

मंत्री जी ने सूचना दी कि जन्म स्थान की गली में दो मकान और खरीद लिये गये हैं। गली के निकास पर गेट बनाकर जन्म स्थान का बोर्ड लगाया जायेगा। ये दोनों मकान एक लाख पच्चीस हजार के खरीदे गये हैं। पहले खरीदे गये मकान में यज्ञशाला, दो कमरे तथा यज्ञध्वज का निर्माण किया गया है। इसके साथ ही श्री कानजी चक्कू भाई का मकान लेने की बातचीत भी आगे चलाने का निश्चय हुआ है। पानी की समस्या के संबंध में श्री प्राणनाथ सहगल तथा श्री लधाभाई जी के प्रयत्नों से महालय से एक कि०मी० की दूरी पर मीठे पानी का प्रबन्ध हो गय हैं वहां से पाईपों द्वारा पानी लाया जायेगा। उस पर तीन चार लाख रुपया व्यय होगा। निश्चय हुआ कि यह योजना अगली बैठक में प्रस्तुत की जाये।

टंकारा महालय में अब टंकारा कारपोरेशन का पानी आना आरम्भ हो गया है। अब वहां पर पानी की कोई कमी नहीं है। बाड़ी तथा गौशाला एवं अन्य कार्यों के लिये उचित पानी की व्यवस्था हो गई है। अब टंकारा गांव के स्थानीय लोग भी हमें हर कार्य में पूर्ण सहयोग देते हैं। पहले ऋषि बोधोत्सवों पर टैंकरों द्वारा बाहर से पानी मंगवाया जाता था परन्तु अब पानी की पूर्ण व्यवस्था हो गई।

महालय के अन्तर्गत स्कूल का जो भवन बन रहा है, उसके निर्माण की राशि का पांच प्रतिशत किराया के रूप में ट्रस्ट को देना होगा तथा शिवरात्रि पर छात्र और अध्यापक कार्य में सहायता करें और स्कूल के भवन को शिवरात्रि के दिनों में ऋषि भक्तों के आवास के लिये प्रयोग किया जायेगा। ट्रस्ट की दुकानों का किराया रेन्ट कन्ट्रोल एक्ट के अनुसार लिया जायेगा। गौशाला के बड़े कमरे को विभाजित कर दुकान के रूप में किराये पर दिया जाये।

राजौरी गार्डन की श्रीमती राम चमेली जी का निवेदन था कि राजौरी गार्डन से शिवरात्रि के अवसर पर टंकारा जाने वाली बहनों के लिये एक कमरा सुरक्षित रखा जायेगा। इस कमरे को बनाने पर जो खर्च ६० या ७० हजार

आयेगा उसे वे बहनें स्वयं एकत्र करके टंकारा ट्रस्ट को दे सकती हैं। मकान पर राजौरी गार्डन की पत्थर भी लगाया जाये।

विविध लक्षी विद्यालय में जो सहशिक्षा का कार्यक्रम चल रहा है, उसके लिये प्रस्ताव पारित कर गुजरात सरकार से पत्र व्यवहार किया जाये कि सहशिक्षा समाप्त करके छात्र-छात्राओं के लिये पृथक्-पृथक् विभागों में अध्ययन करने की व्यवस्था की जाये। इस उपलक्ष्य में हमारा गुजरात सरकार से पत्र व्यवहार चल रहा है।

गौशाला के विषय में आचार्य विद्यादेव जी ने बताया कि इस समय गौशाला में ३० गाय हैं, बाड़ी में पर्याप्त चारा प्राप्त हुआ है। उसमें से कुछ भाग अगले वर्ष के लिये भी सुरक्षित रखा गया हैं इस प्रकार अब आगे गौशाला का घाटा बहुत कम होगा।

पिछले ३० वर्ष पूर्व महालय में केवल ३-४ बाथरूम थे और वहां पर अस्थाई शौचालय ऋषि बोधोत्सव के समय तीन दिन के लिये बनाये जाते थे। लेकिन अब वहां पर लगभग ३० शौचालय एवं ३० स्नानागार बना दिये गये हैं। सभी कमरों में अचैट शौचालय एवं स्नानागार हैं तथा वाशबेसिन है। अब वहां पर शौचालय एवं स्नानागार की कोई कमी नहीं है।

भोजनालय के नीचे कच्ची मिट्टी थी, लेकिन अब वहां पर पक्का फर्श (कोटा पत्थर) की टाइलें लगवा दी गई हैं। वहां पर ऋषि लंगर के लिये थाली, गिलास, चम्मचें आदि परोसने के लिये बाल्टियां आदि सामान दिल्ली से खरीद कर वहां भेजा गया है। रसोड़े के लिये हमें २० गैस के कनैक्शन मिल गये हैं, जिससे भोजन आदि बनाने में बड़ी सुविधा हो रही है।

मन्त्री जी ने स्पष्ट किया कि उत्सव के शामियाने का खर्च बचाने के लिये भोजनालय पर सीमेन्ट की चादरें डालकर ढक दिया जाये। यज्ञशाला का स्थान इस समय अपर्याप्त है, उसे बड़ा बनाया जाना आवश्यक है। आचार्य जी ने उपदेशक विद्यालय के कार्य के विषय में बताया कि अध्यापकों का हमें पूरा सहयोग है। प्रातः काल से सायं ४ बजे तक अध्यापकों की उपस्थिति होती है, अंग्रेजी अध्यापन का कार्य अधिक शिक्षित छात्र स्वयं कर रहे हैं।

आज, १९९६ में, लगभग ६० वर्ष के लगातार ट्रस्टियों के परिवर्तन करने पर शानदार उपलब्धि का यह प्रमाण है। अवशिष्ट समस्याओं का रूप निम्न है :—

भवनों के संस्कार

मरम्मत तथा नवनिर्माण पर लाखों रुपया खर्च करके जो नया रूप प्रगट हो रहा है जन्म स्थान से सम्बन्धित तीन चार मकान खरीदकर उनका पुनर्निर्माण

किया गया। उनमें यथोचित ध्वजस्तम्भ आदि का निर्माण किया गया। इस पर कई लाख रुपया खर्च आया है। भोजनशाला का रूप बदल दिया गया है। उत्सव पर आगन्तुकों की सुविधा के लिये नये फर्श आदि का निर्माण किया गया। महालय के लगभग सब कक्षों के साथ स्नानालय तथा शौचालय आदि की सुविधा का प्रबन्ध किया गया है। पुरुषों और देवियों के लिये अलग-अलग स्नानालय एवं शौचालयों का निर्माण किया गया है। यह निर्माण कार्य उस कार्य के अतिरिक्त है जो कि विभिन्न दानियों द्वारा अपने लिये शिवरात्रि के अवसर पर निवास के लिये बनाये गये हैं।

इस समय अवस्था यह है कि इन सुविधाओं के पीछे ट्रस्ट का कार्य पूर्ण हो गया है। इस प्रसंग में दो और प्रयत्न किये गये। उनका भी उल्लेख आवश्यक है। पानीपत के श्री जगन्नाथ जी का विचार था कि महर्षि के जन्म स्थान को विश्वदर्शनीय स्थल बनाया जाये। जो कि समस्त आर्यों की भावना का प्रतीक है। अभी तक क्योंकि वह स्थान उपलब्ध नहीं हुआ। इसलिये उन्हें एक लाख से अधिक धन एकत्र कर वर्तमान धाम को ही सजाने का प्रयत्न किया। उनके साथी उनके स्वर्गवास के बाद उस कार्य को और भी आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं।

गौशाला

प्रायः सब हिन्दू संस्थाओं में गौशाला को दान एकत्र करने का साधन बनाया जा रहा है। पर ऋषिवर दयानन्द का दृष्टिकोण था कि गौशाला आय का स्रोत होना चाहिए। अपनी गौकरुणानिधि नामक अमूल्य रचना में उन्होंने इस दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है। और भी विचित्र बात यह है कि गौशाल के साथ ७-८ बीघा जमीन भी हो, और फिर भी गौशाला घाटे में रहे। एक समय तत्कालीन प्रधान श्री हंसराज जी गुप्त ने दुःखी होकर गौशाला को बन्द करने का आदेश भी दिया था। पर भावना का केन्द्र होने के कारण ऐसा नहीं किया गया। जो लोग दो चार भैंस या ५-६ गौ रख कर छोटी-मोटी गौशाला चलाते हैं, वे भी इस कार्य के द्वारा अपना और अपने परिवार का पेट पालते हैं और बड़ी गौशालाओं के स्वामी तो इस व्यवसाय द्वारा लाखों की आय करते हैं। अतः ऐसा समझना चाहिए कि प्रायः घाटे का कारण प्रबन्ध की कमी या आय व्यय का नियमित ब्यौरा न रखना होता है। महालय में क्रमशः प्रयत्न करने पर अब यह अवस्था है कि गौशाला में ३० गाय ह और ट्रस्ट की जमीन का चारा इतना हो जाता है कि वह अगले वर्ष भी काम आ सके। टंकारा में एक बार हॉलैंड से एक गौशाला विशेषज्ञ पधारे थे। उन्होंने तो यह कहा था कि उनके देशों में सूखे पशु रखने का रिवाज ही नहीं है। वहां सूखे पशुओं के मांस का उपयोग किया जाता है और इसको भी आय में सम्मिलित किया जाता है। पर भारत में तो यह सम्भव नहीं है।

एक समय आनन्द (अमूल) से भी एक विशेषज्ञ पधारे थे, उनका कहना था

कि पशु की प्रत्येक वस्तु को अर्थात् दूध, गोबर, मूत्र आरि को तथा उसके मरने पर उसकी चर्म और हड्डियों को भी यदि उपयोग में लाया जाये और आय का साधन बनाया जाये तो घाटे का प्रश्न ही नहीं उठता। पर महालय के लिये इतना बड़ा प्रबन्ध करना सम्भव नहीं।

आरम्भ से ही टंकारा ट्रस्ट के आधीन विविध लक्षी हाई स्कूल की स्थापना हो गई थी जो अब तक सफलता से चल रहा है प्रारम्भ में अनुभव हो रहा था कि सरकार सहायता प्राप्त संस्था का चलाना टंकारा का ध्येय नहीं है। पर विद्यार्थियों की लाभ की दृष्टिसे उसे बन्द नहीं किया जा सका। टंकारा ट्रस्ट के मंत्री पं० आनन्द प्रिय जी इसके संचालन में विशेष योगदान देते थे। अतः १९६५ में यह निर्णय किया गया था कि इस विद्यालय के संचालन के लिये एक अलग समिति जिसके अध्यक्ष पं० आनन्द प्रिय जी को और जो उन्हीं के द्वारा निर्वाचित की जाये स्कूल का संचालन हो। वह समिति ही अब तक कार्य कर रही थी। अब पंडित जी के स्थान पर उनकी सुपुत्री पं० प्रतिभा पंडित जी ने वह कार्य संभाला हुआ है।

इस विविध लक्षी विद्यालय का अपना कोई भवन न था। वह पंचायत के भवनों में किराये पर चल रही थीं बहुत आवश्यक होने पर विद्यालय के संचालकों ने ट्रस्ट के अधिकारियों के समक्ष ट्रस्ट के गोदामों में संस्था के लिये भवन निर्माण की मांग की। स्थान मिलने पर उन्होंने स्कूल के योग्य भवनों का निर्माण लगभग कर लिया है एक अड़चन यह आई कि सरकारी नीति के अनुसार विद्यालय में सहशिक्षा का प्रचलन हैं। ट्रस्ट के आर्य होने के नाते यह निर्देश दिया गया है कि बालक और बालिकाओं के लिये अलग-अलग कक्षाओं का प्रबन्ध कर दें। इसके लिये वे सरकार से पत्र व्यवहार करें। आशा है यह कार्य शीघ्र हो जायेगा। नये भवनों की किराया आदि शर्तें भी निश्चत हो गई हैं।

उपदेशक विद्यालय

विद्यालय की उन्नति की समस्या विचित्र बात यह है कि महर्षि दयानन्द जी ने सब प्रचलित धार्मिक विचारधाराओं का प्रखर तर्क की दृष्टि से विवेचन किया है। वे आस्तिक, नास्तिक, भारतीय, अभारतीय सब धार्मिक धाराओं का विवेचन करते थे। जैसा आदि शंकराचार्य के विद्वान् शिष्यों ने अपने गुरु द्वारा मान्य वृहज्ञीव उपनिषद, उत्तरमीमांसा (वेदान्त दर्शन) तथा गीता। इनको, प्रामाणिक ग्रंथ माना और उन पर भाष्य किये। ये भाष्य आज तक लगभग प्रामाणिक माने जाते हैं। युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने तो चार संहितायें इनको स्वतः प्रमाण माना और आरण्यक, ब्राह्मण ग्रंथ तथा उपनिषद तथा मनुस्मृति नामक ग्रंथ आदि को परतः प्रमाण माना। इन सब पर प्राचीन काल से ही भाष्य चले आ रहे थे। उनको ऋषि पूर्णतया मान्य नहीं मानते थे। अतः ऋषिवर तथा उनके शिष्यों के लिये आवश्यक था कि वे इन सब ग्रंथों के प्रामाणिक भाष्य प्रस्तुत करें। इसके साथ ही प्रचारार्थ उपदेशक मंडल का होना भी आवश्यक था। कार्य तो चला पर

अपर्याप्त था। एक छोटे से उदाहरण के स्पष्ट करूंगा। कई वर्ष हुए मैंने अपने सहारनपुर के विद्यार्थी से मुसलमानों के उपदेशक विद्यालय दारूल-उल-अलूम के विषय में जानना चाहा। उसने लिखा कि इन दिनों वहां एक सहस्त्र विद्यार्थी इस्लाम के उपदेशक बनने की तैयारी कर रहे हैं और उन पर तीन लाख के लगभग वार्षिक व्यय हो रहा है। यह सब व्यय मुस्लिम समाज के चन्दे से होता है, सरकारी ग्रान्ट से नहीं। सम्भवतया सारे भारत के सब उपदेशक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संख्या भी एक सहस्त्र न होगी। इस्लाम के अन्य देशों में भी प्रसिद्ध उपदेशक विद्यालय हैं, जिनमें मिश्र देश में एक बहुत बड़ा विश्वविद्यालय है इस सारी बात का कारण मैं तो श्रद्धा का अभाव समझता हूं।

एक आर्थिक कारण भी है। सम्पन्न परिवारों का कोई बालक उपदेशक नहीं बनना चाहता। बहुत गरीब परिवारों के बच्चे ही इस दिशा में आते हैं क्योंकि यह कार्य उनकी दृष्टि से आर्थिक महत्त्व का बहुत नहीं होता।

मैं १९२६ में गुरुकुल से स्नातक होने के बाद ग्रामर स्कूल क्वेटा में सीनियर कैम्ब्रिज की परीक्षा देने के लिये प्रविष्ट हुआ। स्कूल में एक आश्चर्यजनक प्रथा थी। अध्यापक के आने पर बच्चे उठकर तब दरवाजा खोलते थे यदि उस अध्यापक का बहुत सम्मान हो। विद्यार्थी केवल तीन ही अध्यापकों के लिये उठकर दरबाजा खोलते थे। एक प्रिंसिपल फोर्ड, दूसरा देवी मिस काजनू, तीसरा बाईबल का अध्यापक पादरी। आर्य समाज की किसी भी संस्था में क्या कभी किसी धार्मिक शिक्षक को यह स्थान मिला है? आर्य समाज में उपदेशकों का मान नहीं है। ईसाई पादरी अपने केन्द्र में बसने वालों के सुख-दुःख का साक्षी होता है। उसका घर ईसा का घर होता है और वह सबके लिये दिन रात खुला रहता है। हमारे पुरोहित और उपदेशकों को अभी तक यह सुःखद अवस्था प्राप्त नहीं हुई। इन सब कठिनाईयों को अच्छी तरह जानते हुए भी मान्य मेहरचन्द महाजन जी का यह दृढ़ विश्वास था कि उपदेश्क विद्यालय आर्य समाज के लिये अत्यन्त आवश्यक है। इस मूल कारण के लिये ही वे टंकारा ट्रस्ट में इस विद्यालय के महत्त्व को कभी आंखों से ओझल नहीं होने देते थे। लाखों रुपये इसके लिये खर्च किये गये। तथा आचार्य जी और चार अध्यापक सरकारी मान्य वेतन पर वहां काम कर रहे हैं।

प्रारम्भ में यह विचार था कि यदि इस विद्यालय की उपाधियां सरकार द्वारा मान्य होंगी तो हमारे स्नातक उपदेशक बनने की अपेक्षा अन्य संस्थाओं में संस्कृत हिन्दी आदि के अध्यापक बनना अधिक पसन्द करेंगे। विद्यार्थियों तथा आर्य समाजों के दबाव के कारण अब दो प्रकार की पाठ्य प्रणाली आरम्भ की गई है। एक विद्यालय की अपने पुराने पाठ्यक्रम की परिपाटी और दूसरी सरकार मान्य उपाधि से सम्बद्ध परिपाटी।

ट्रस्टी महोदयों ने अब इस विद्यालय में फुटबाल, बॉलीबॉल, बास्केट बॉल आदि खेलों की व्यवस्था भी की है। पर यदि इसके साथ आसन आदि यौगिक अंगों

के प्रशिक्षण का तथा अपनी संस्था के लिये कुछ शारीरिक श्रम का भी विधान किया जा सके तो अधिक उत्तम रहेगा।

टंकारा पत्रिका, शुद्ध आयुर्वेद विद्यालय तथा संस्कृत विश्वविद्यालय आदि आदि प्रवृत्तियों क्यों न चल सकीं यह उल्लेख भी आवश्यक है।

टंकारा पत्रिका

प्रत्येक संस्था की अपनी पत्रिका होती ही है, संस्था के समाचार, आलोचनाओं का प्रतिकार, संस्था के कार्यकर्ताओं आदि के लेख इन सबका प्रकाशन बहुत महत्त्व की बात है। इसीलिए शायद ही कोई छोटी बड़ी संस्था होगी, जिसकी अपनी कोई पत्रिका न हो। पर टंकारा पत्रिका का प्रारम्भ विचित्र परिस्थितियों में हुआ था। परोपकारिणी सभा अजमेर ने ट्रस्ट कार्यों के लिये पचास हजार रुपये देना स्वीकृत किया था। उनका सुझाव था की इस रुपये के ब्याज से जो लगभग रुपये १७००/ वार्षिक था, टंकारा पत्रिका चलायी जाये। इस पत्रिका का प्रकाशन परोपकारी प्रैस द्वारा होना था।

पत्रिका की ग्राहक संख्या प्रारम्भ में अच्छी थी, पर क्रमशः घटती गई ट्रस्ट के ऊपर कई हजार रुपया जिसका उल्लेख ब्यौरे में है, परोपकारी प्रैस का प्रकाशन का ऋण हो गया। अन्त में परोपकारी पत्रिका में उसे सम्मिलित कर दिया गया। यह तय किया गया कि परोपकारी पत्रिका का एक निश्चित भाग टंकारा संबंधी लेखों और समाचारों के लिये सुरक्षित रखेगी तथा परोपकारी की कुछ प्रतियां टंकारा तथा दिल्ली के ट्रस्ट के कार्यालय में अपेक्षाकृत कम मूल्य पर भेजी जायेंगी। किन्तु यह परम्परा अधिक दिन तक नहीं चल पाई।

संस्कृत विश्वविद्यालय

इसका पहले भी उल्लेख हो चुका है। प्रारम्भ से ही वह एक दुर्बल संस्था थी। अध्ययन, अध्यापन को कोई निश्चित स्थान एवं प्रबन्ध न था। केवल कुछ परीक्षायें दी जाती थीं, जिनका मूल उद्देश्य मैट्रिक न कर सकने वाले विद्यार्थियों को आयुर्वेद विद्यालय में प्रवेश के लिए प्रमाण पत्र देना था। इस अन्तरिक परीक्षा का नाम पारंगत परीक्षा था। कुछ समय बाद इस परीक्षा के संबंध में जो सूचना विद्यार्थियों द्वारा जामनगर संस्थान में पहुंची, उसके आधार पर इस परीक्षा की स्वीकृति वापस ले ली गई। इस स्वीकृति के अभाव में संस्कृत विद्यालय का कोई महत्त्व न रहा।

शुद्ध आयुर्वेद विद्यालय

इसका प्रारम्भ १९६५ में हुआ था और २९.१.१९६८ को इसके बन्द किये जाने का प्रस्ताव बम्बई में होने वाली टंकारा ट्रस्ट की बैठक में स्वीकृत किया गया। इसमें कोई संदेह नहीं कि शुद्ध आयुर्वेद विद्यालय ठीक चल रहा था। अध्यापक

योग्य थे, पहले आचार्य श्री चन्द्रदेव झा आयुर्वेद एवं संस्कृत के विद्वान थे। उनके बाद श्री जे० एन० शर्मा आचाय्र बने, वे भी योग्य थे और मिलनसार स्वभाव के थे। फार्मेसी विभाग भी चल रहा था। रोगियों की देखभाल की व्यवस्था गोदामों में की गई थी। अप्रैल १९६८ में निम्न कार्यकर्ता थे :

श्री जे० एन० शर्मा, आचार्य, श्री ए० एस० शर्मा, श्री एच० सी० भट्ट, श्री मित्रानन्द, श्री प्रेमशंकर तथा श्री के० वी० गुप्ता अध्यापक, अन्य कर्मचारी श्री रघुनाथ भाई, श्री मोहन भाई, श्री बच्चू बाले, श्री देवधरे, भाई अमृत जैन, श्रीमती रतना तथा श्री सोहन लाल थे। सब कार्य ठीक से चल रहा था। पर विद्यार्थियों में ट्रस्टियों के प्रति कभी सूक्ष्म और कभी उग्र विरोध का भाव भी चल रहा था। इस विरोध को उकसाने वाले कौन थे इसकी चर्चा यहां अनावश्यक है। ट्रस्टीगण पूर्ण प्रयत्न कर रहे थे कि कार्य में कोई रुकावट न आये। सरकारी ग्रान्ट के लिये भी प्रबन्ध हो रहा था।

सम्भवतया विद्यालय के लिये बहुत धन की आवश्यकता थी। १९६८ में यह अंदाजा लगाया गया कि कम से कम ४० हजार रुपया तात्कालिक रूप से आवश्यक है। उसके लिये प्रयत्न भी चल रहा था। इन्हीं दिनों विद्यार्थियों के प्रतिनिधियों से ट्रस्टीगण मिले। विद्यार्थियों की मांगें बहुत सी थीं। पं० आनन्द प्रिय जी ने उन्हें पूरा करने का वचन भी दिया था। बम्बई की बैठक में इन सब बातों पर विचार हुआ। यह समझा गया कि इन सब मांगों को पूरा करने सम्भव नहीं है और मांगे पूर्ण न करने की अवस्था में उग्र आन्दोलन की सम्भावना थी। एक बार आगे भी उग्र आन्दोलन और तोड़ फोड़ का सामना किया जा चुका था। अतः बाधित होकर इस संस्था को समाप्त करना पड़ा।

शिवरात्रि का उत्सव :

टंकारा का ऋषि का जन्म स्थान तथा बोध स्थान है। उसके विकास के लिए जिस कार्यक्रम का सबसे अधिक महत्त्व है, वह शिवरात्रि (बोधरात्रि उत्सव) है। १९२६ में बम्बई समाज के श्री विजय शंकर आदि ऋषि भक्तों के परिश्रम से आर्य समाज का प्रथम महोत्सव मनाया गया। जिसमें आर्य समाज के प्रायः सभी प्रमुख संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा नारायण स्वामी जी तथा स्वामी स्वतन्त्रानन्द आदि पधारे। मौरवी नरेश महाराणा श्री लखवीर सिंह जी, उत्सव के अध्यक्ष थे तथा श्री मनुभाई स्वागताध्यक्ष थे। उसके बाद से आर्य समाज की प्रगतियों का प्रारम्भ हुआ। माननीय श्री गिरधर लाल जी मेहता तथा उनके सहयोगियों ने मुख्य रूप से इस कार्य को आगे बढ़ाया। टंकारा स्मारक ट्रस्ट की वार्षिक रिपोर्ट में इन सबकी संक्षिप्त रूप से चर्चा होती रही है।

ट्रस्ट की दृष्टि से आर्य श्रेष्ठी नानजी भाई कालीदास के औदार्य से तथा

आर्य जनों के प्रयत्नों से अधिग्रहीत मौरवी नरेश के महल में जो अब महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के नाम से जाना जाता है, प्रथम शिवरात्रि उत्सव मनाया गया। यज्ञ का ब्रह्मा पद परम विद्वान पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी ने स्वीकार किया। ध्वजारोहण ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री मेहरचन्द महाजन जी ने क्यिा तथा उद्घाटन लोकसभा के अध्यक्ष श्री अनन्त शैयनम् आयंगार के कर कमलों से हुआ। ट्रस्ट के मंत्री पं० आनन्द प्रिय जी द्वारा लिखित वार्षिक विवरण का ब्यौरा ट्रस्ट के कार्यालय में सुरक्षित है।

यह अखण्ड परम्परा अब भी चल रही है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के पावन पर्व पर ऋषि बोधोत्सव का आयोजन किया जाता है, विशेष यज्ञ होता है, सम्पूर्ण भारत से श्रद्धालु लोग एकत्र होते हैं और उस आदित्य ब्रह्मचारी युग दृष्टा दयानन्द के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इस अखंड परम्परा का निर्वाह ट्रस्ट का मुख्य कार्य है, इस मुख्य कार्य के लिए ट्रस्ट के ट्रस्टियों को इतना पुरुषार्थ करना पड़ता है उसका कुछ अनुमान इस बात से हो जाता है कि १९९३ में हुई शिवरात्रि पर २, ३३, ३७५ रुपये ५७ पैसे व्यय आया था। इस वर्ष १९९६ की शिवरात्रि पर व्यय इससे भी अधिक होगा, इसमें कोई शंका नहीं। तीन दिन तक शिवरात्रि का महोत्सव एक विलक्षण अनुभव होता है। प्रातः काल से प्रारम्भ रात्रि तक प्रभात फेरी, यज्ञ सम्मेलन, आयी हुई संस्थाओं के कार्यक्रम सायंकालीन यज्ञ तथा काफी रात तक चलने वाला उच्च कोटि के प्रवचनों का सिलसिला।

जिस महापुरुष ने कुम्भ के अवसर पर अज्ञान के भयंकर रूप को देखकर सर्वस्व त्याग द्वारा तथा प्रचण्ड तपस्या द्वारा उस अज्ञान के नाश का प्रण किया था। उसके प्रति आर्य जन अखण्ड श्रद्धा का प्रदर्शन करते हैं। दान का, सेवा का, श्रद्धांजलि का कोई अन्त ही नहीं रहता। सम्पूर्ण भारत ही नहीं अपितु दूसरे देशों के भावनाशील सज्जन भी ऋषि के आकर्षण से खिंचे आते हैं। ट्रस्टी और ट्रस्ट के सम्पूर्ण कर्मचारी वर्ग के लिये यह एक कठिन कार्य होता है, इसमें भिन्न-भिन्न समाजों एवं संस्थाओं की ओर से भरपूर सहयोग दिया जाता है। पारायण यज्ञ के लिये यज्ञकार्य के विशेष विद्वानों को बुलवाया जाता है। कई वर्ष श्री आनन्द भिक्षु जी यह कार्य करते रहे। उनकी वाणी मधुर थी, यज्ञ में उनकी अपार श्रद्धा थी। प्रसिद्ध याज्ञिक श्री वीर सेन जी वेदश्रमी भी इस कार्य के लिये आये थे। गुरुकुल काँगड़ा के वेदवेत्ता विद्वान भी इस कार्य के लिये आते रहे हैं।

जामनगर तथा बड़ौदा के कन्या महाविद्यालयों का सहयोग उत्सव की शोभा है। गुजरात के आर्य जनों ने सदा अपने दान तथा उपस्थिति से इस पुण्य कार्य को सफल बनया। बम्बई तथा दिल्ली के ट्रस्ट कार्यालयों द्वारा कभी भी धन की कमी का अनुभव नहीं होने दिया। कुछ व्यक्तियों के इस अवसर पर लगभग सदा ही दर्शन होते हैं। वानप्रस्थी महात्मा आर्य भिक्षु जी उनमें से एक हैं। स्व० श्री गंडाराम जी मेहता ने बहुत वर्ष हुए उन्हें उत्सव पर आने का निमन्त्रण दिया था

तो उनका उत्तर था कि मैं जीवन पर्यन्त इस उत्सव पर ऋषि के प्रति श्रद्धांजलि भेंट करने आया करूंगा। अब तक वे अपने इस प्रण का पालन करते आ रहे हैं। अपनी विशिष्ट शैली में वे श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिसमें गहरा धार्मिक पुट होता है।

शिवरात्रि ऋषि बोधोत्सव पर आज से लगभग ३० वर्ष पूर्व मात्र २००-२५० व्यक्ति ही टंकारा उत्सव में आते थे। स्व० राम लाल मलिक जी अपने प्रयत्नों से वहां दो बार स्पेशल ट्रेन लेकर गये। काफी प्रयत्न किया कि वहां एक अच्छी ऋषि भक्तों की भीड़ एकत्र हो। पहली बार वहां पर उत्सव मनाये जाने के सम्बन्ध में ५००० निमन्त्रण पत्र भिजवाये, उसके बाद १०,००० फिर १५,००० फिर २०,००० और इस वर्ष १९९६ लगभग २५,००० भिजवाये निमन्त्रण पत्र ऋषि भक्तों को भिजवाये गये हैं। ये निमन्त्रण पत्र भारत भर की आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों, डी० ए० वी० संस्थाओं, आर्य शिक्षण संस्थाओं आदि को भिजवाये जाते हैं। अब वहां पर हजारों की संख्या में ऋषि भक्त एकत्र होते हैं। सभी ऋषि भक्तों के आवास भोजन आदि की सुव्यवस्था की जाती हैं वर्ष १९९६ में मनाये जाने वाले ऋषि बोधोत्सव पर इस बार सारे महालय एवं प्रभात फेरी तथा शोभायात्रा के रास्तों को ओ३म् ध्वज एवं ओ३म् झण्डियों से सजाया गया है। वहां पर लगभग ५०,०००/ रुपये का गुजराती, मराठी एवं हिन्दी साहित्य की पुस्तकें भिजवाई गई हैं, जिन्हें वहां पधारने वाले ऋषि भक्त प्रसाद के रूप में लेकर आते हैं। जिनमें विशेषकर आर्य समाज, आर्य समाज क्या है, आर्य समाज के नियम आदि विशेष हैं, जिनका वितरण टंकारा में ही नहीं अपितु पूरे गुजरात में किया जायेगा।

पं० आनन्द प्रिय जी जब तक जीवित रहे टंकारा के इतिहास और कार्य का अपने प्रारम्भिक भाषण में विवरण देते थे। मैंने अपने ट्रस्ट के प्रधान महोदयों, मन्त्री महोदयों तथा अन्य कार्यकारी कर्ता वर्ग का उल्लेख इसलिये नहीं किया क्योंकि पिछले ब्यौरे में यथास्थान सभी का उल्लेख है और मैं अपनी तुच्छ बुद्धि से यह सब विशिष्ट ऋषि भक्तों की भावना और सेवा को आंक समने में असमर्थ हूं। एक बात जो इस उत्सव को देखते ही स्पष्ट हो जाती है। श्री रामनाथ सहगल, मंत्री टंकारा ट्रस्ट का व्यक्तित्व कार्यशैली तथा व्यवहार। शिवरात्रि उत्सव आते ही अपनी छाप डाल देता है। ट्रस्ट के सम्पूर्ण कार्यों के पीछे वे एक प्रेरणा पुंज हैं। ड्राईविंग फोर्स हैं ऐसा नहीं कि वे अकेले, एक व्यक्ति हैं, उनके साथ डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकत्री समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा अन्य कई छोटी बड़ी संस्थाओं की शक्ति है। वे इन सब संस्थाओं के कार्य केन्द्र हैं।

श्री रामनाथ सहगल जी १९७४ में ट्रस्ट के ट्रस्टी बने थे। अपनी कार्य कुशलता से पहले संयुक्त मंत्री और उसके बाद मंत्री बनाये गये। आज तक वे इस कठिन कार्य को सफलता से चला रहे हैं। उनकी तुलना गुजरात के प्रसिद्ध आर्य

नेता पं० आनन्द प्रिय जी से की जा सकती है। पं० आनन्द प्रिय जी भी गुजरात में आर्य समाज के सर्व प्रमुख नेता थे। कई संस्थाओं के संचालक तथा सहयोगी रहे। टंकारा ट्रस्ट का यह सौभाग्य है कि दोनों ही महानुभावों ने मन्त्री रूप से एक लम्बे समय तक ट्रस्ट के कार्य को सफलता से चलाया। मैंने केवल दो महानुभावों का नाम केवल उल्लेख के लिये शिवरात्रि तथा ट्रस्ट के कार्य के सम्बन्ध में दिया है। ट्रस्ट कार्य इतना व्यापक और आकर्षित है कि इसमें प्रत्येक प्रान्त से ऋषि के भक्तों ने सहयोग दिया है जिनमें नामों की सूची का कोई ओर छोर नहीं। पंजाब के बड़े-बड़े शहरों, दिल्ली तथा बम्बई से लेकर गुजरात के सौराष्ट्र और कच्छ के प्रदेश से टंकारा आकर ऋषि भक्त ट्रस्ट के कार्यों में सहयोग देते हैं। उनकी श्रद्धा को देखकर ऋषि की महत्ता का सहज अनुभव होता है।

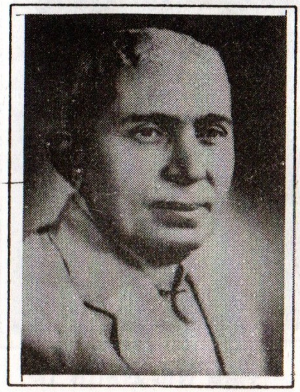
ट्रस्ट की भावी कार्य दिशायें, समस्यायें तथा लक्ष्य पिछले ३०-३५ वर्षों से ट्रस्ट के कार्य से कुछ बातें स्पष्ट हो गई हैं।

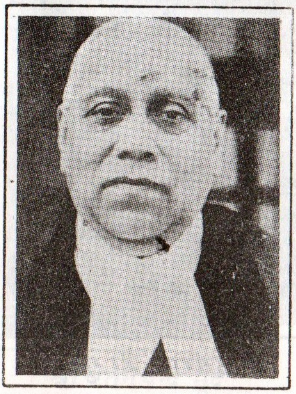
महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट का मुख्य कार्य आर्य लेखक प्रचारक तथा अनुसंधान विद्वान उत्पन्न करना है। यह कार्य बहुत कठिन है। इस दिशा में कार्य करने वाले विद्वानों के जीवन में आर्थिक लाभ की आशा कम होती है। त्याग और तपस्या का घटक अधिक।

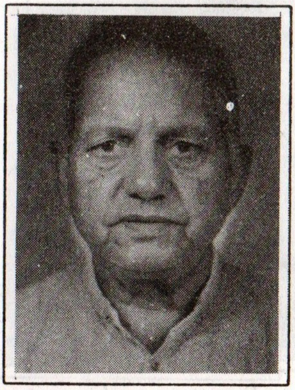
ऋषि दयानन्द की वैदिक मान्यताओं का आविष्कार व्यक्तिगत, राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक जीवन इन सबको समेटे हुए हैं। इन मान्यताओं के विरोध का कोई अन्त नहीं। एक बहुत छोटा और सूक्ष्मविरोध का रूप स्पष्ट करता हूं। ऋषि दयानन्द भाषा को दैवीय— ईश्वर से उत्पत्ति होने के सिद्धांत को मानते थे जबकि सारा तुलनात्मक भाषा विज्ञान भाषा को विकासात्मक मानुषी उत्पत्ति मानता है। वेद कहता है **दयास्याम् उत्तरानाधेहि पतिमेकादशम् कृधि** और हमारी सरकार उन सबको राष्ट्र का शत्रु समझती है जिनकी दो से अधिक संतान हों ऋषि दयानन्द के विचारकों का विधिज्ञान सम्पन्न होना बहुत आवश्यक है। संस्कृत और शास्त्रों का वेत्ता तो होना ही चाहिए साथ ही ऋषि के ग्रंथों का मार्मिक विद्वान भी होना आवश्यक है। जो विद्वान् ऋषि की वृहत्त्रयी, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा संस्कार विधि का अध्ययन करते हैं, उन्हें पता लगता है कि ऋषिवर का ज्ञान कितना गहरा और विस्तृत है। संक्षेप में यह एक नितान्त आवश्यक और महत्त्व का कार्य है।

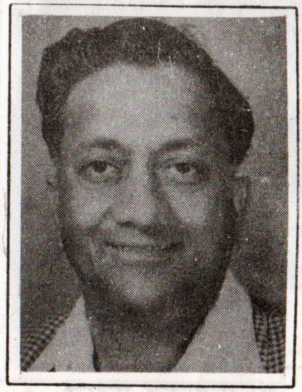
ऋषि बोध स्थान के सम्बन्ध में शिवरात्रि का उत्सव लगातार धूमधाम से चलता रहे यह बड़ी आवश्यकता है जो कि अनिवार्य है यह एक साधारण कार्य नहीं। विश्वभर के ऋषि भक्तों का ऋषि का जन्म स्थान तथा बोध स्थान आकर्षण का केन्द्र है। शिवरात्रि का उत्सव उसकी क्रियाशीलता का प्रयत्न है। शिवरात्रि उत्सव के बिना इस ऋषि स्थान का महत्त्व ही नष्ट हो जायेगा। इस वार्षिक उत्सव

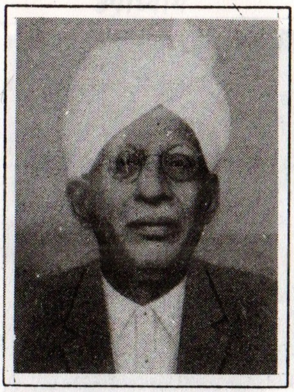
टंकारा ट्रस्ट के संस्थापक, पदाधिकारी एवं सहयोगी

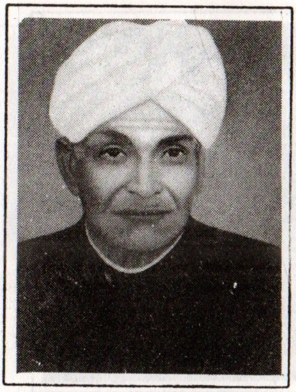

नाना जी भाई कालीदास मेहता

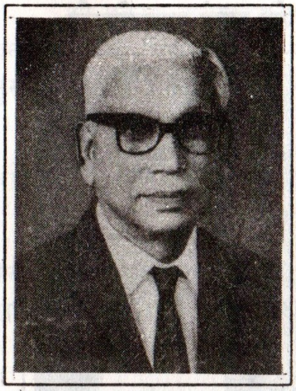

श्री मेहरचन्द महाजन


पं सत्यदेव जी विद्यालंकार

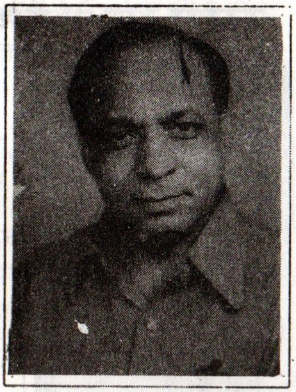

श्री आनन्दप्रिया जी


श्री गेंडा राम जी मेहता

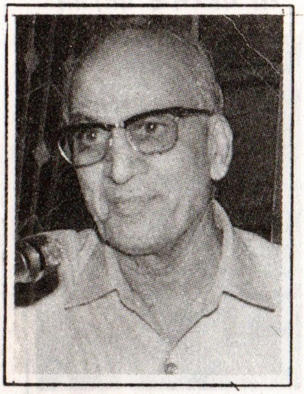

लाला दीवानचन्द जी



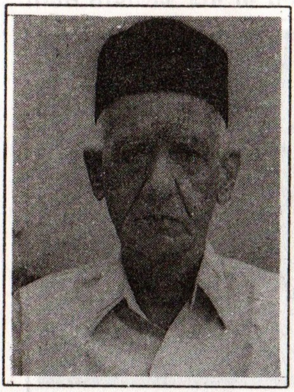
श्री हंसराज जी गुप्त



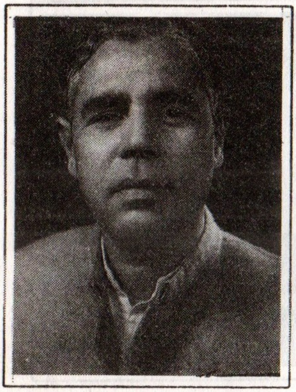
श्री ओंकार नाथ जी



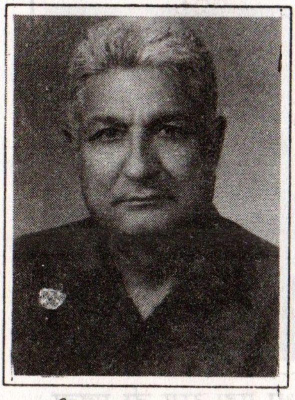
श्री सत्यानन्द मुंजाल



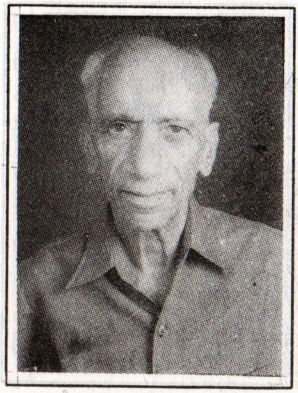
श्री रामलाल मलिक



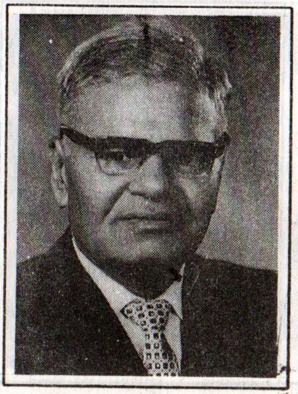
श्री प्रकाशवीर शास्त्री



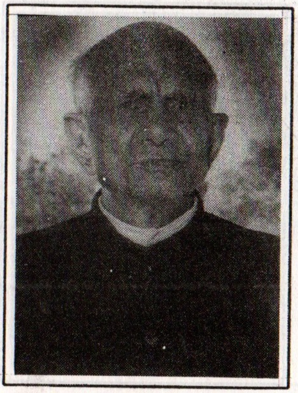
श्री रामनाथ सहगल



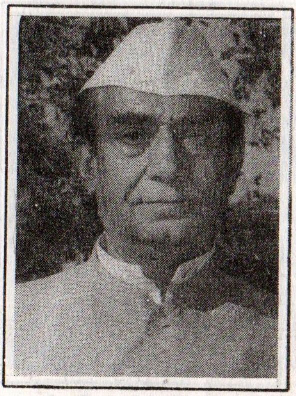
श्री शान्तिप्रकाश बहल



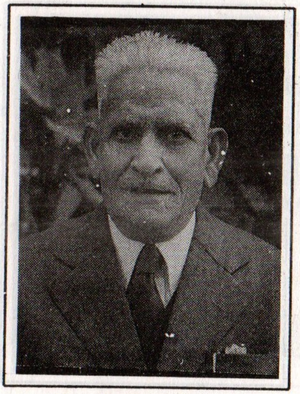
श्री रतनचन्द सूद



श्री नाना लाल हरिशंकर उपाध्याय



श्री बालकृष्ण डी शुक्ल



श्री सोमनाथ मरवाह



श्री लद्दा भाई पटेल



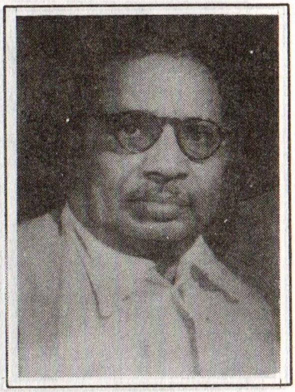
श्रीमती स्वराजवती



श्रीमती स्नेहलता हांडा



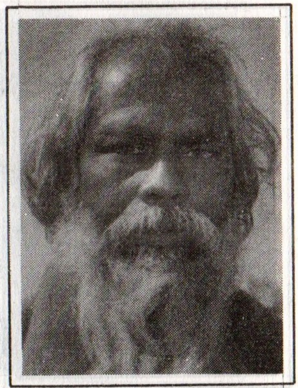
श्रीमती वीरोदेवीजी मेहता



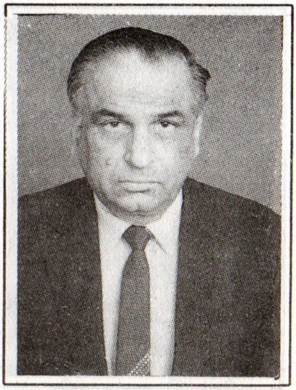
पण्डित अयोध्याप्रसाद जी



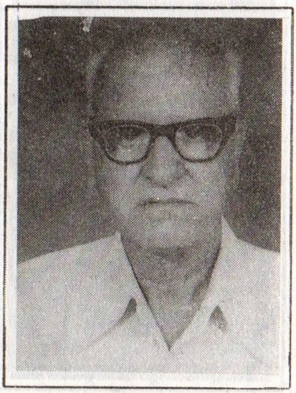
श्रीमती प्रभावती आर्या

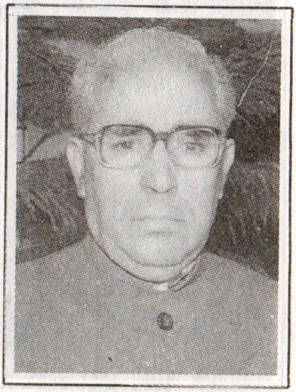


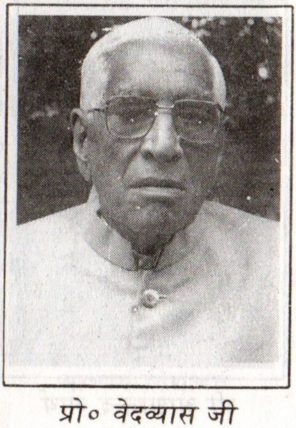
महात्मा आर्याभिक्षुः

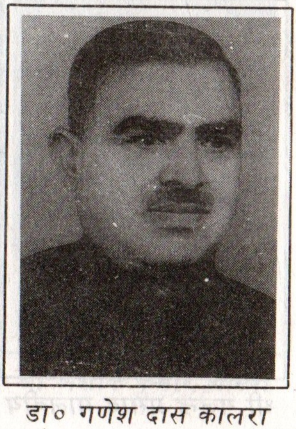

श्री जे० आर० सूद

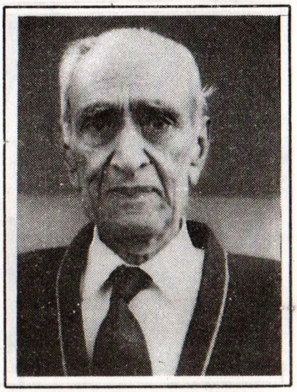

श्री रामशरण दास आहूजा


लाला जगन्नाथ रंगवाले

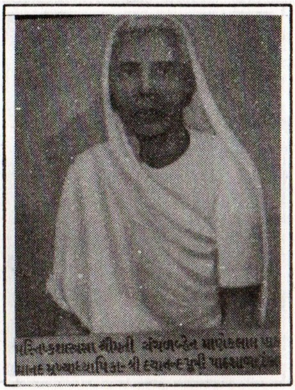

श्री दरबारी लाल जी


प्रो० वेदव्यास जी

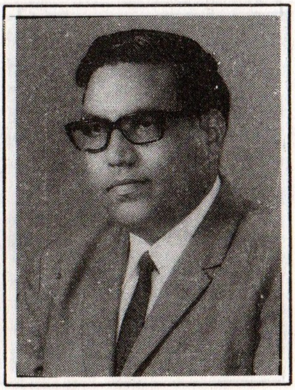

डा० गणेश दास कालरा



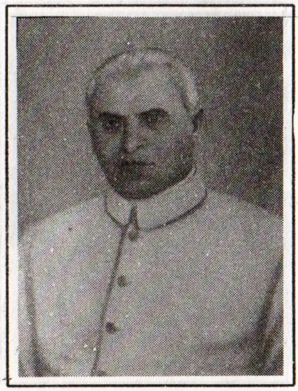
डा० आर० के० पूंशी



चंचल बहन मानिक लाल पाठक



श्री ओ०पी० गोयल



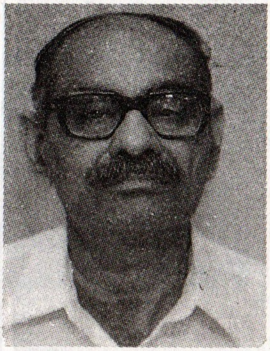
श्री गिरधर लाल मेहता



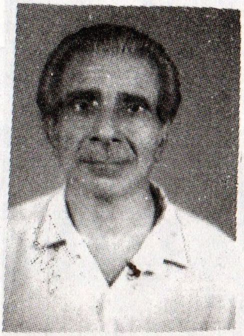
श्री गजेन्द्र प्रसाद मालवीय



श्री आशानन्द आर्य



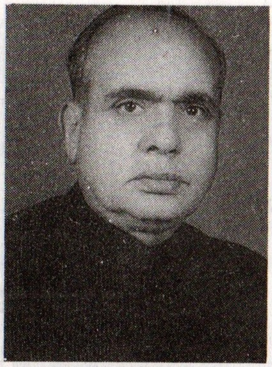
श्री गुरुदत्त तिवारी



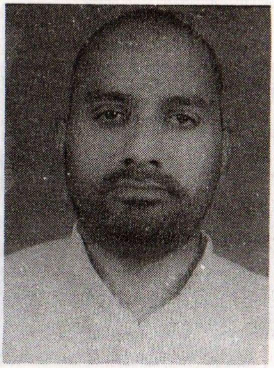
श्री जयदेव आर्य



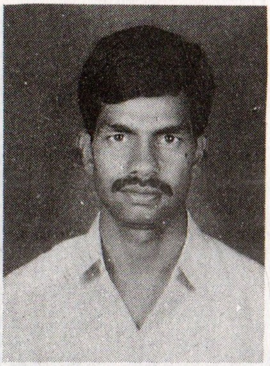
श्री भोगी भाई



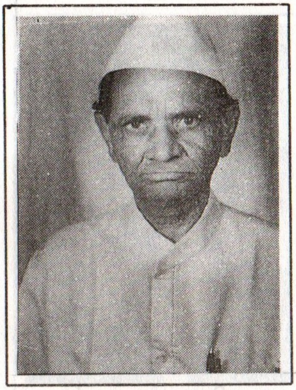
श्री एस०आर० दुआ



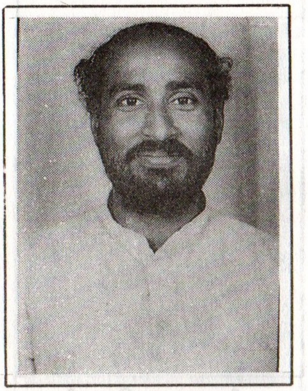
आचार्य विद्यादेव



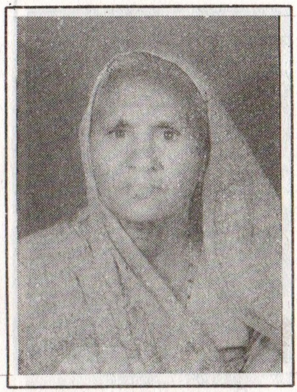
श्री अशोक कुमार शास्त्री



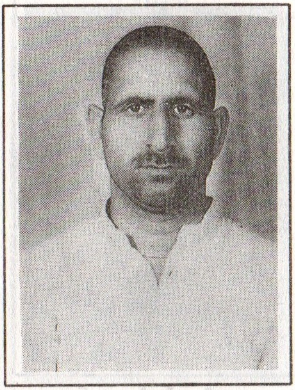
श्री बुद्धदेव भाई



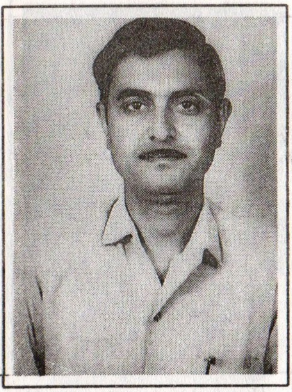
श्री अजय कुमार



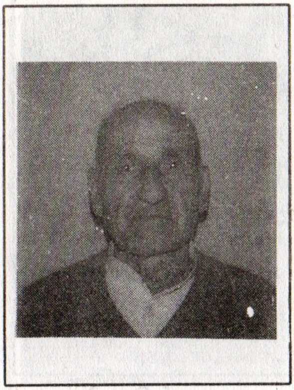
श्रीमती हीराबेन पाचिका



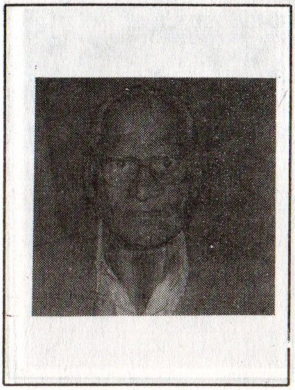
श्री रामदेव जी शास्त्री



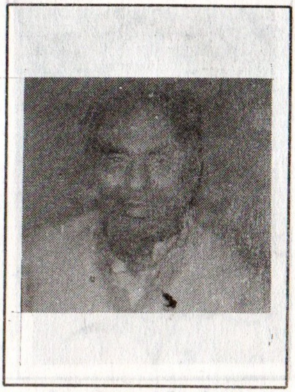
श्री रसमुख परमार



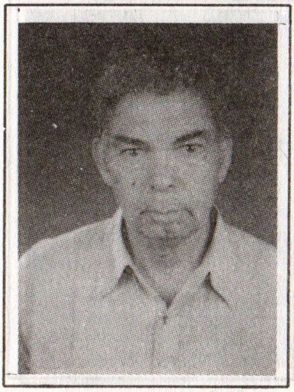
श्री यज्ञदत्त आर्य



श्री मनोहर लाल दीवान



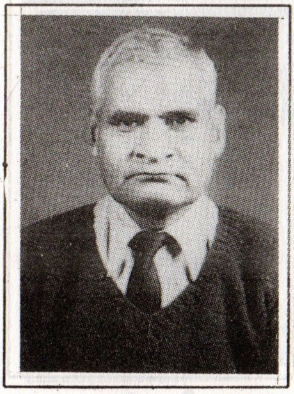
श्री गिजुभाई पी० प्यास



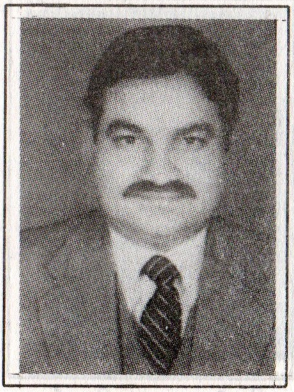
श्री सोमदत्त महाजन



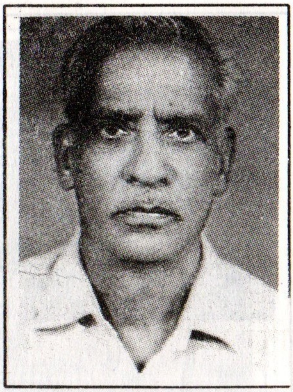
श्री अरुण कुमार अबरोल



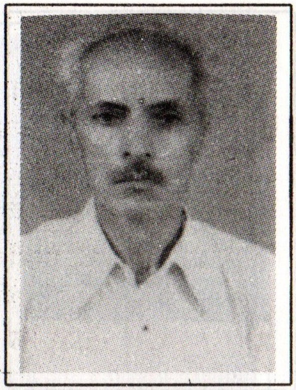
श्री नन्द किशोर भाटिया



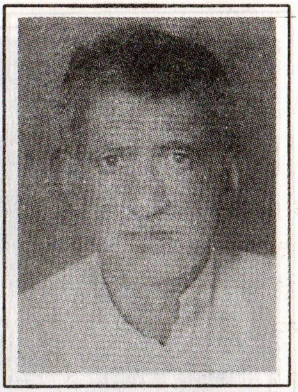
प्रि० आर्यवीर भल्ला



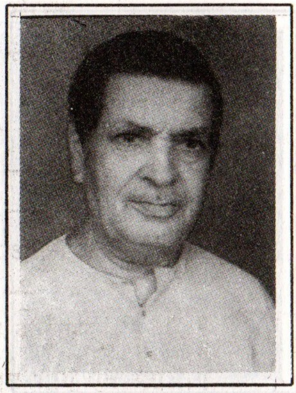
श्री रोशन लाल



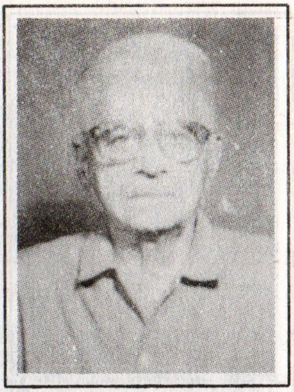
श्री दयानन्द लीखा



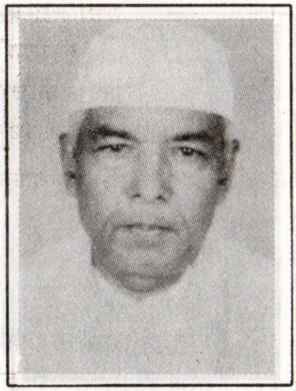
श्री रामचन्द्र



श्री वेदप्रकाश चावला



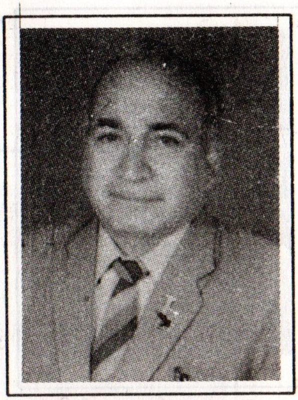
श्री चन्द्रभान आर्य



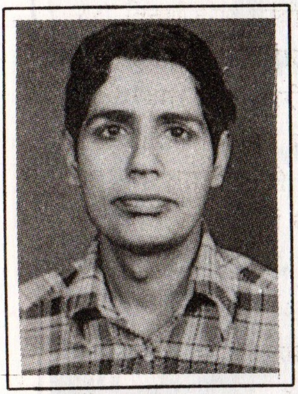
श्री रामरूप



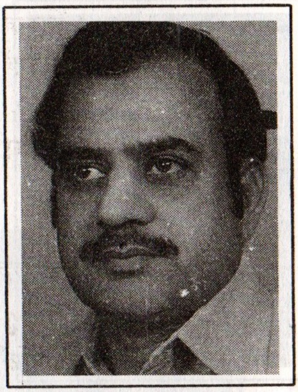
श्री गिरधारी लाल



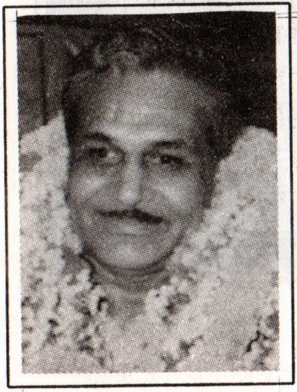
श्री महेश्वर दयाल लूथरा



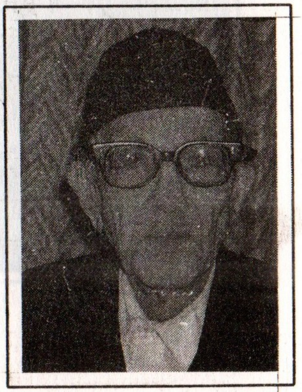
श्री गिरिश खोसला



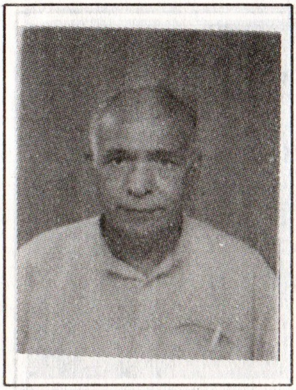
कैप्टन देवरतन



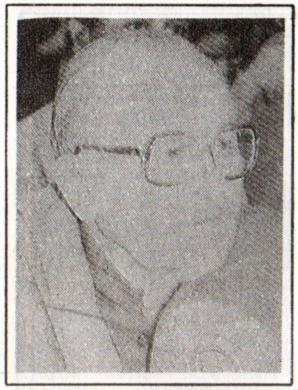
श्री धर्मपाल



श्री लभ्भू राम जी



श्री शामदास सचदेवा



श्री विरेन्द्र जी



श्रीमती रामचमेली देवी

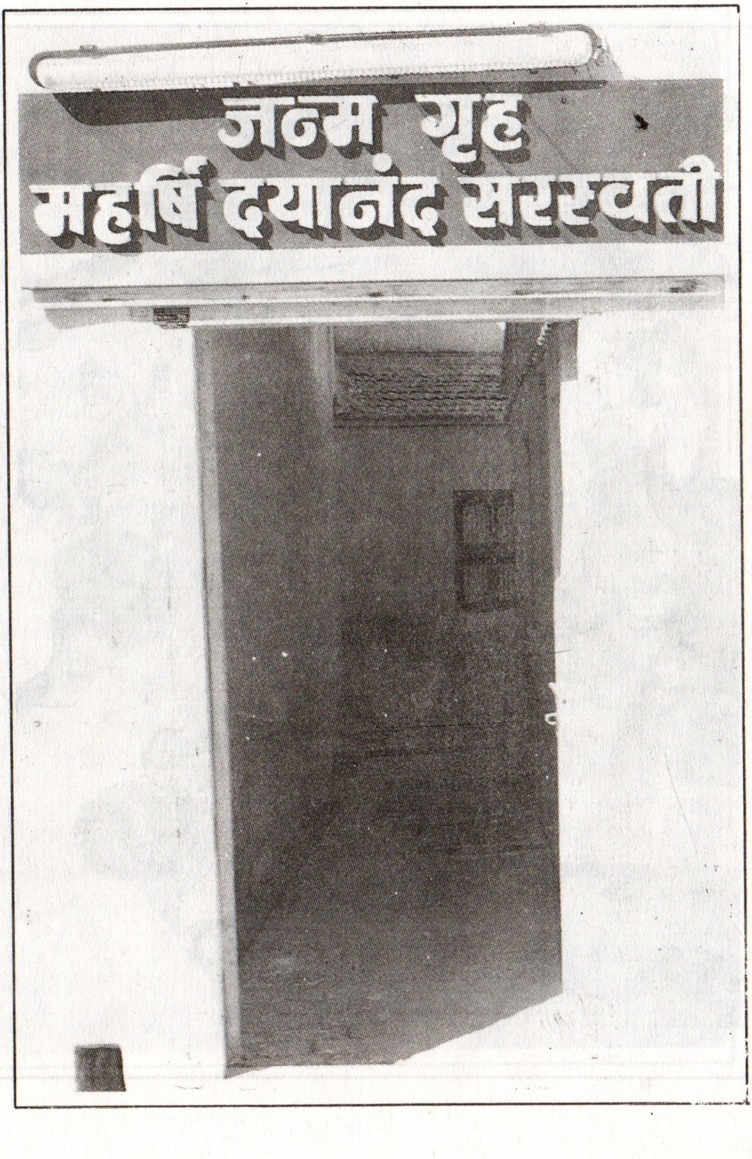
टंकारा ट्रस्ट परिसर



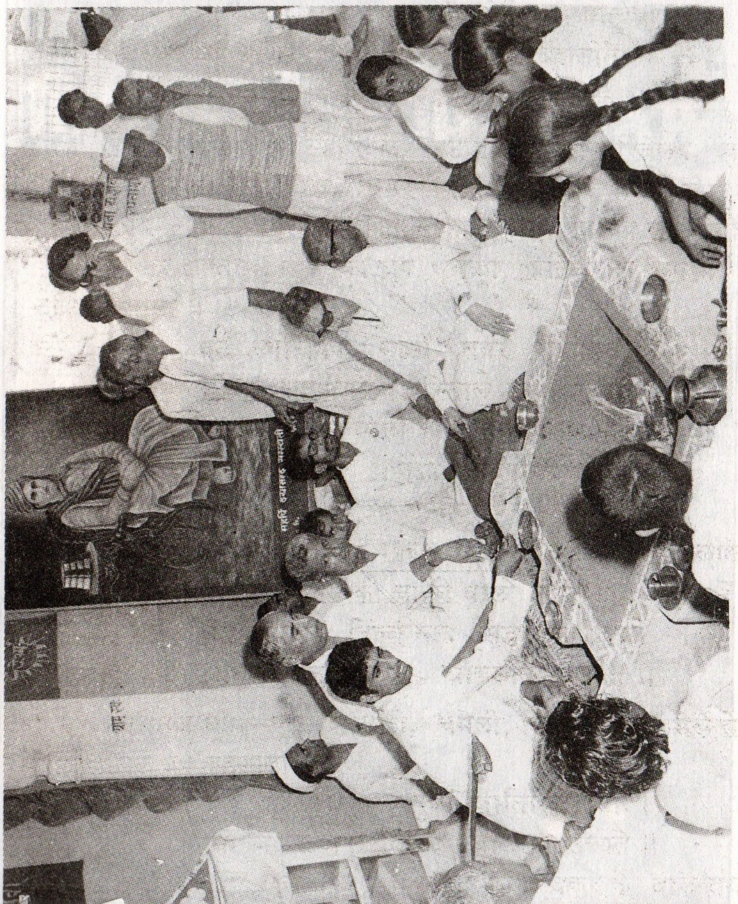

महर्षिदयानन्द ट्रस्ट

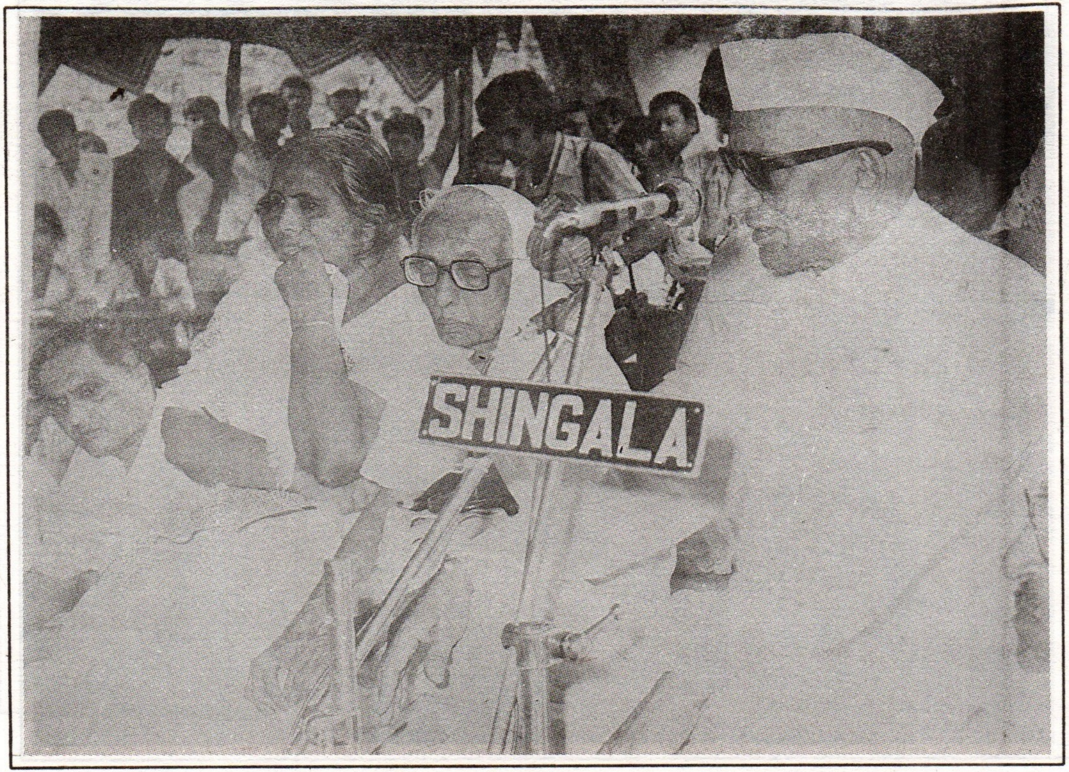



महर्षिदयानन्द


जन्म गृह
महर्षि दयानंद सरस्वती

समय-समय पर श्रद्धासुमन अर्पित करने वाले महानुभाव

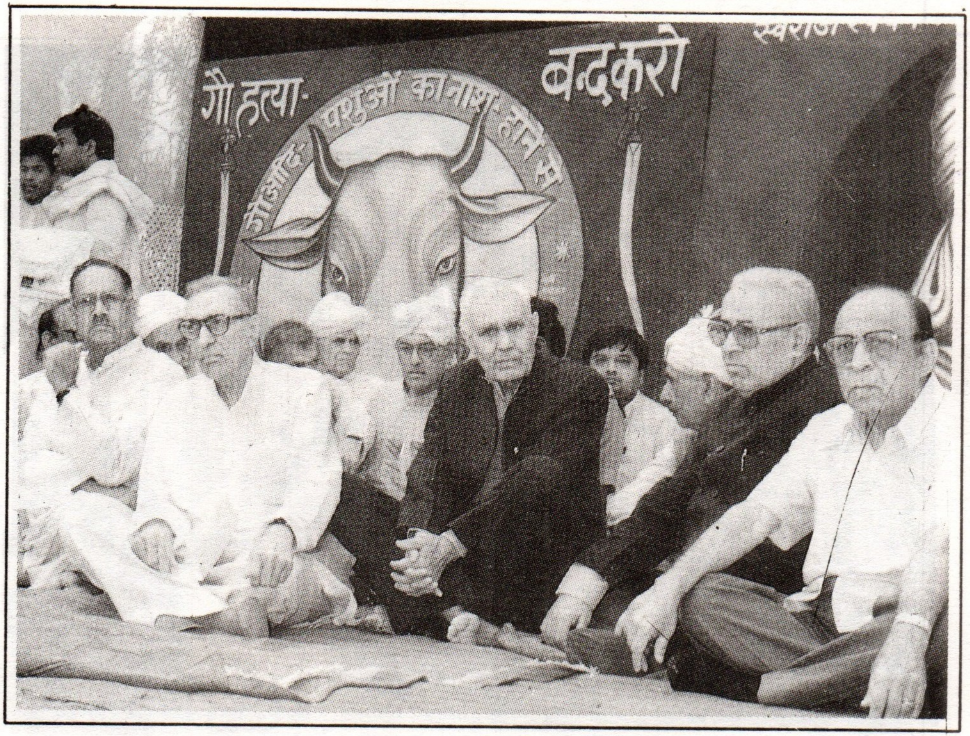



SHINGALA






मूल वेदहै ॥
रितानि परा सुव


गौ हत्या-
बन्दकरो

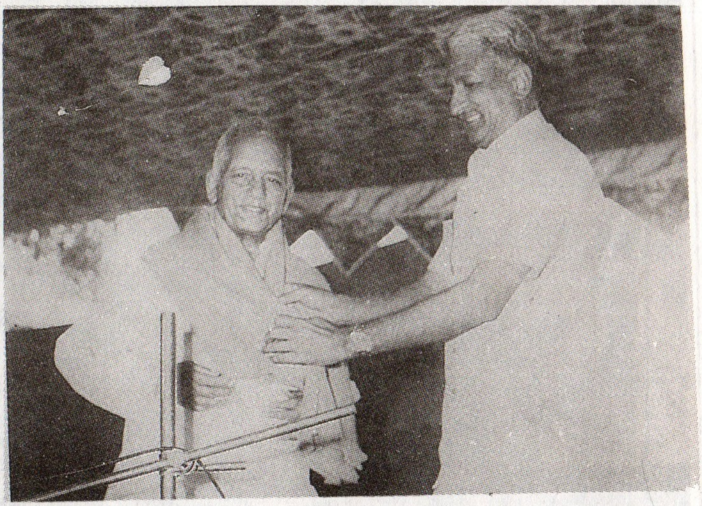




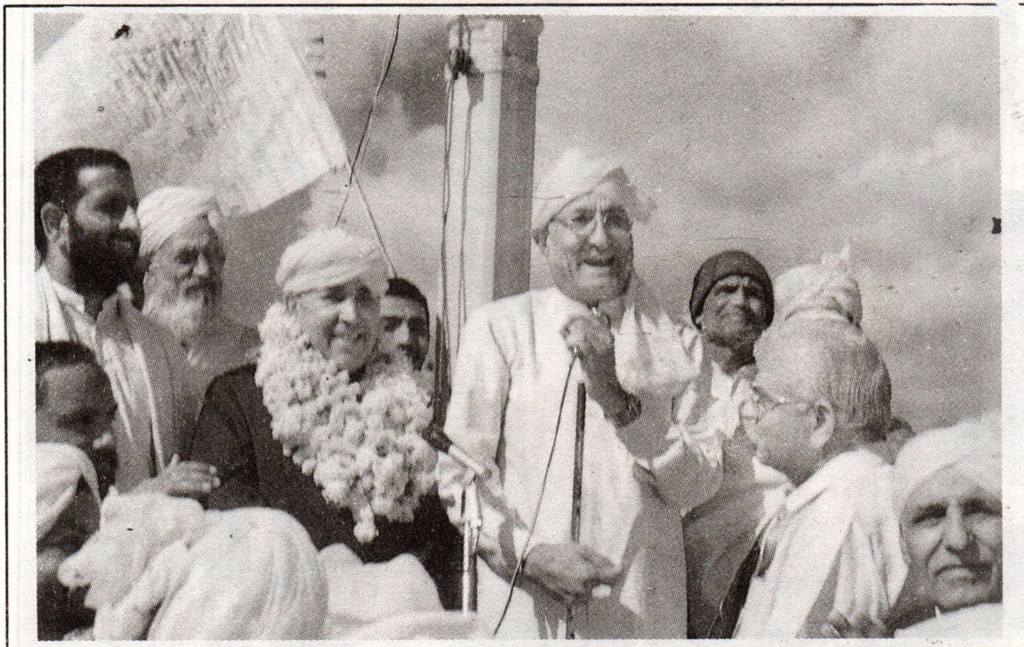



स्मारक ट्रस्ट

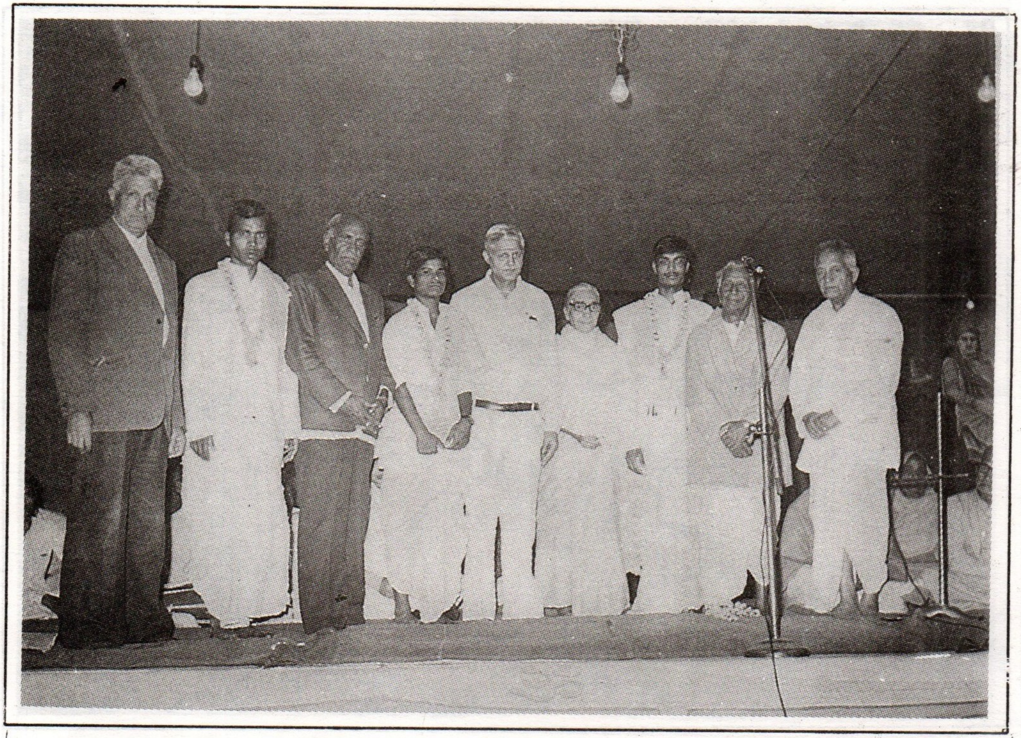


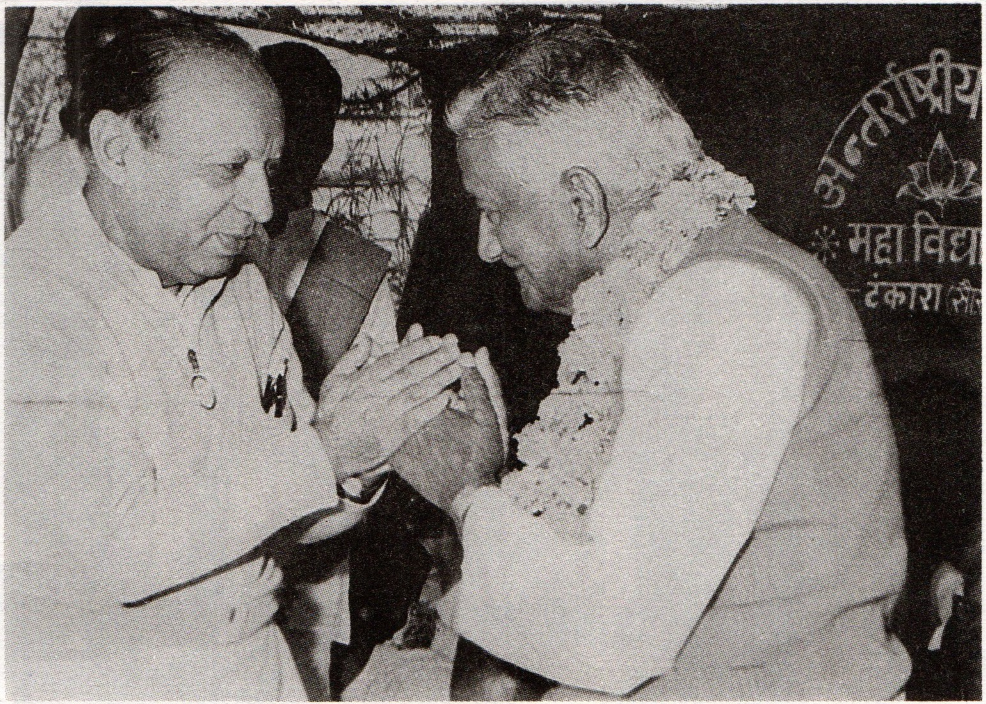




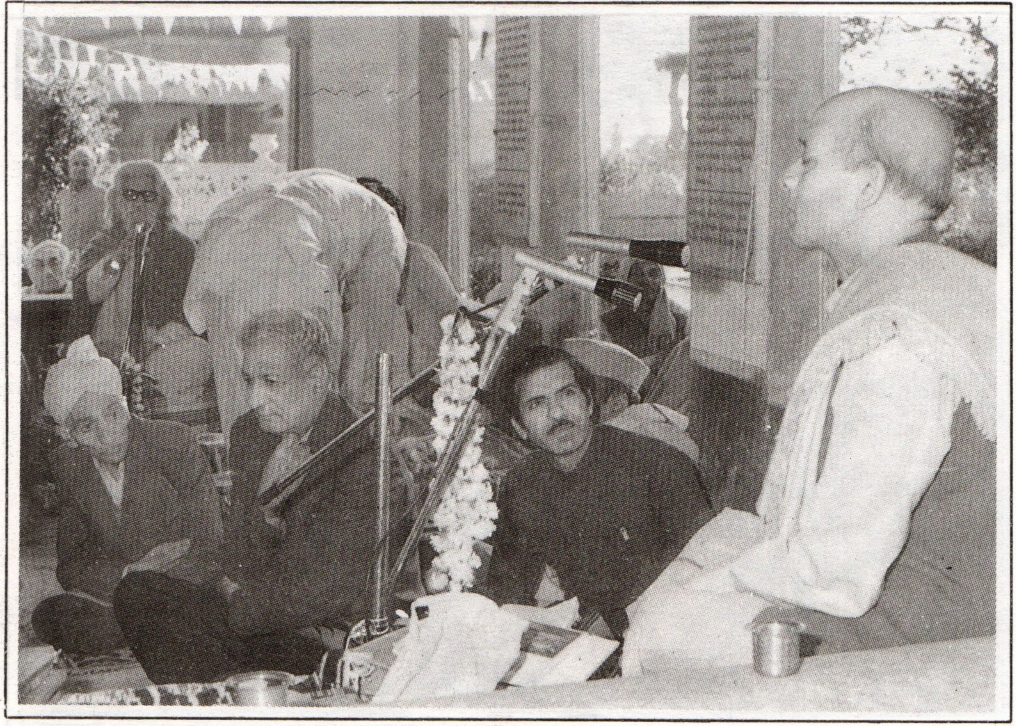


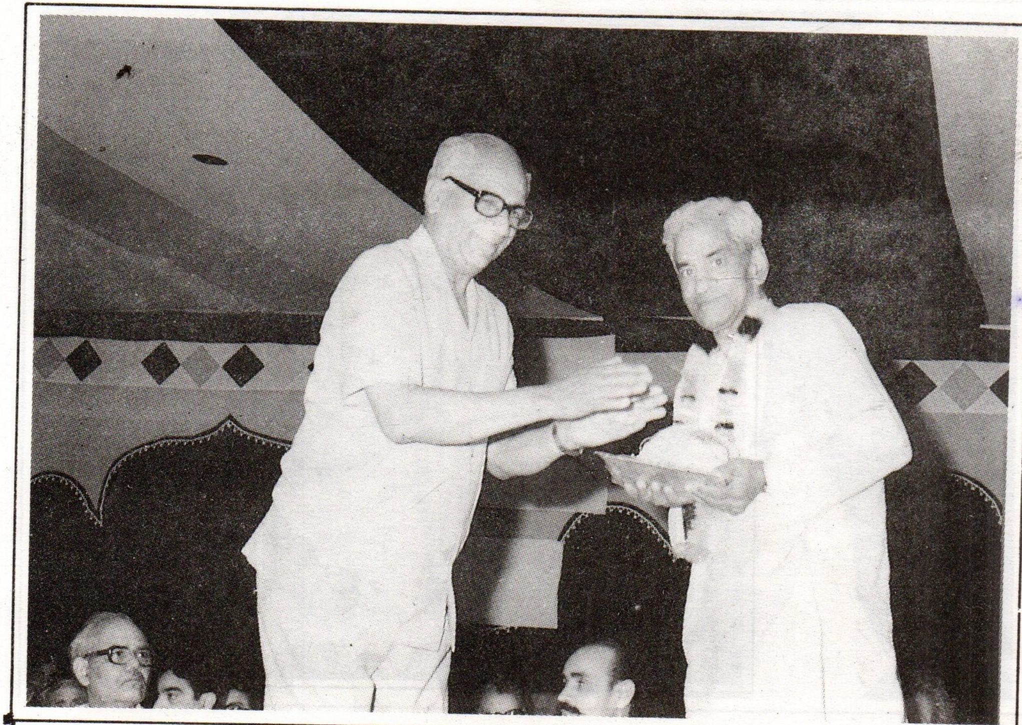


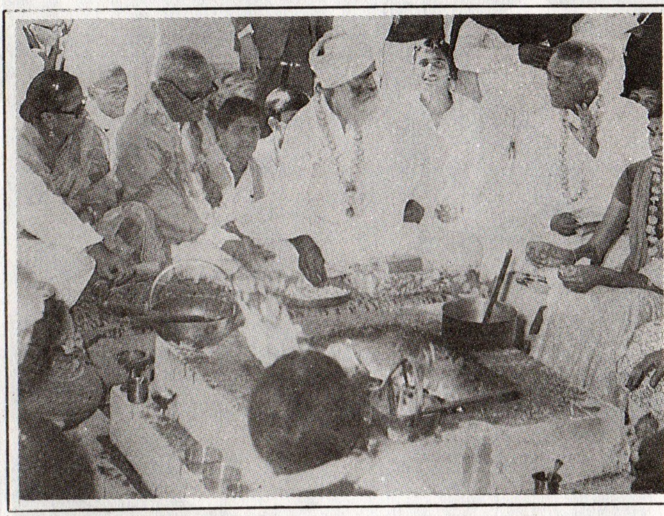



अन्तर्राष्ट्रीय
टंकारा









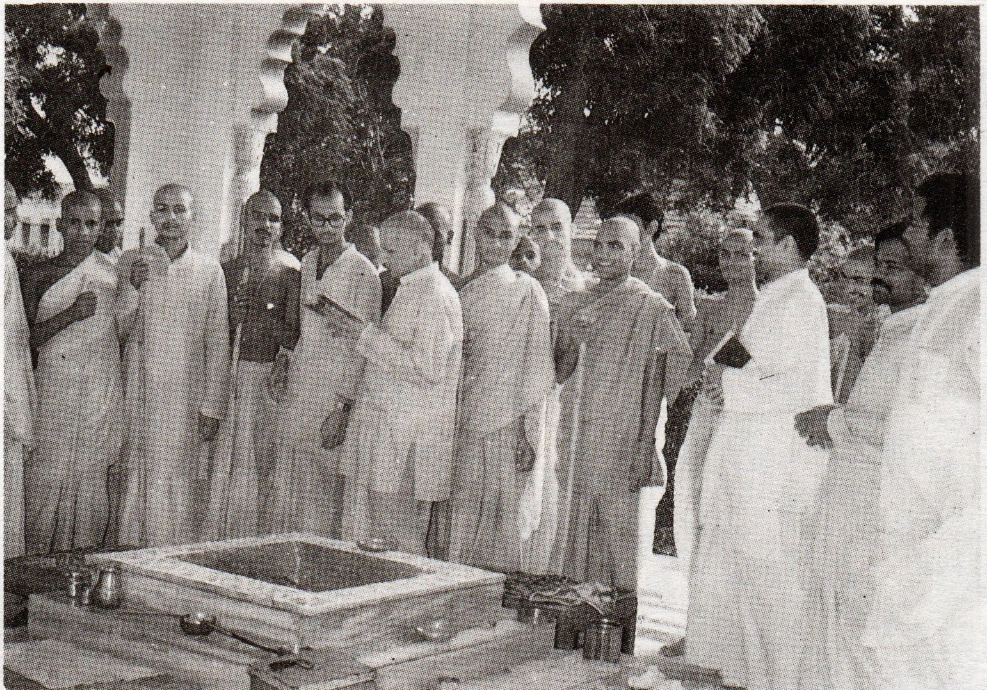


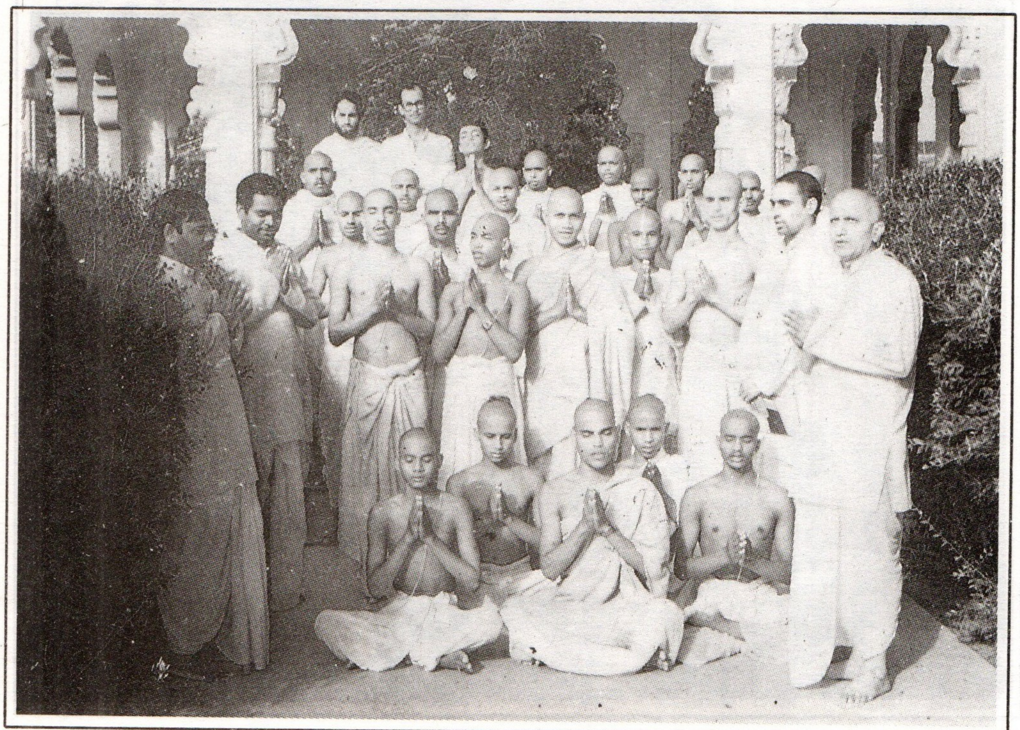


कुछ नये पुराने छात्र







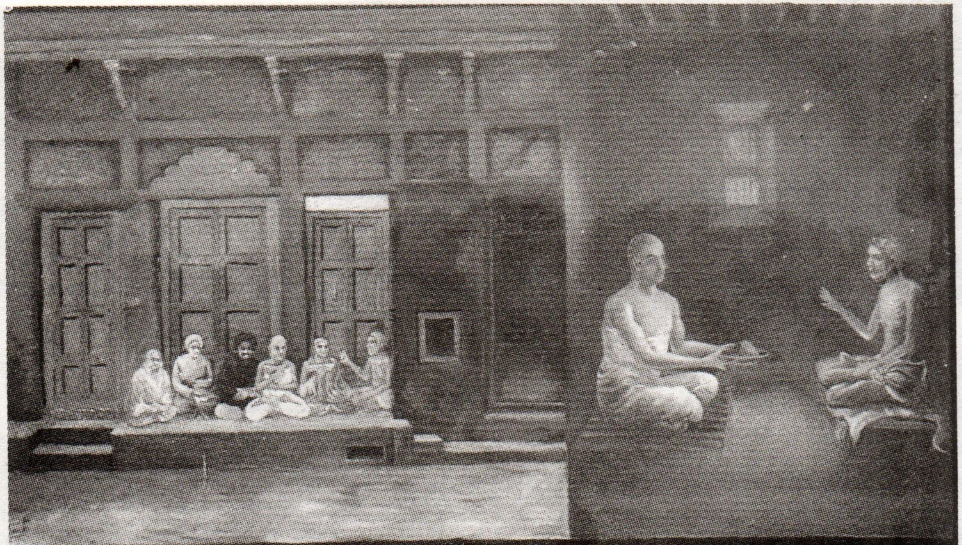






शिवरात्रि में मूर्तिपर चूहे को चढ़ा देख कर, "यह सच्चा शिव नहीं है"-ऐसा बोध होना।

पिता को जगा कर शंकासमाधान करना



स्वामी विरजानंदजी की वेद-पाठशाला। २. स्वामी विरजानंदजीको गुरुदक्षिणा में
लोंग देते हुए स्वामी दयानंदजी।

